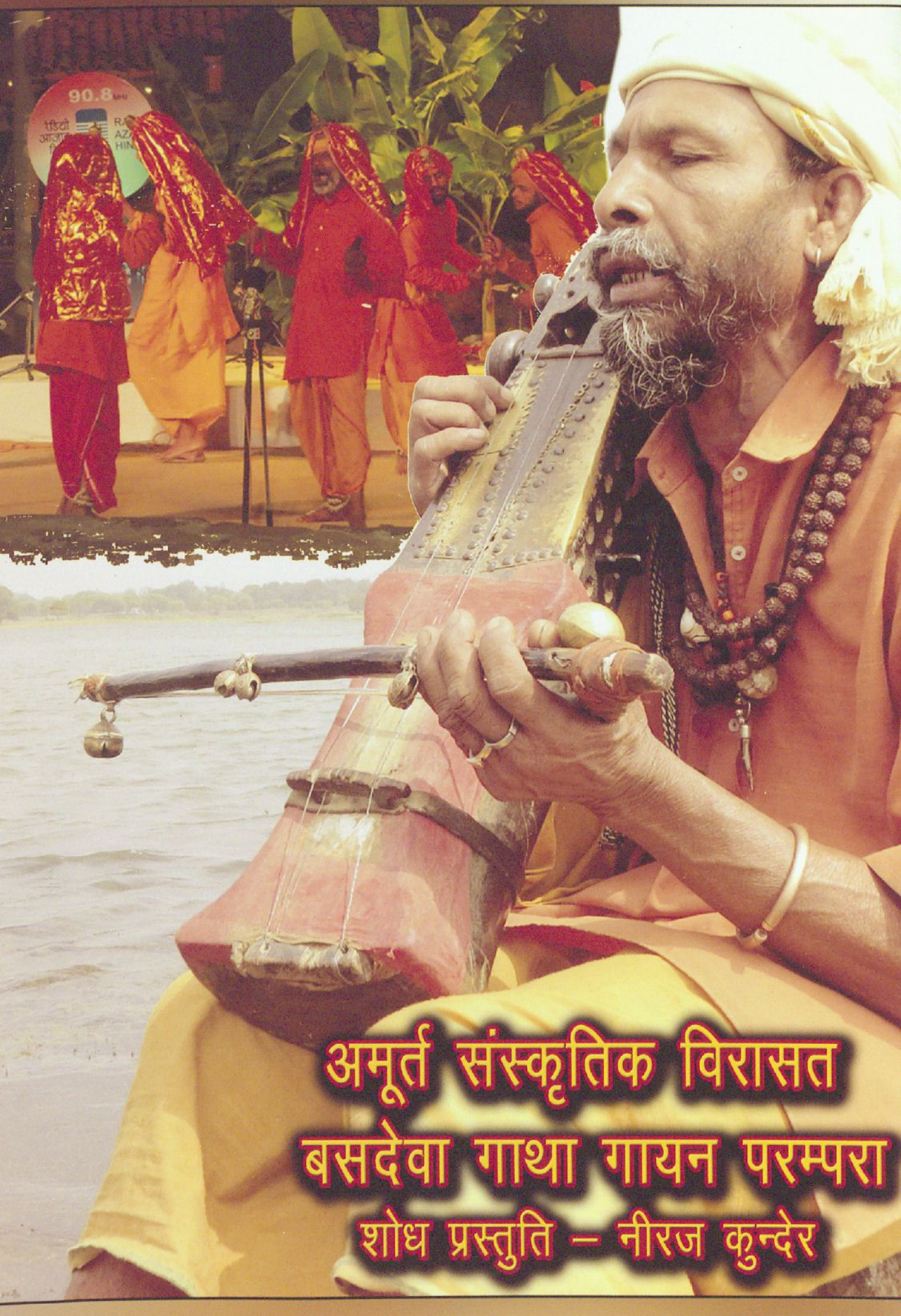

अमूर्त संस्कृतिक विरासत
बसदेवा गाथा गायन परम्परा

शोध प्रस्तुति – नीरज कुन्देर

D.S (Drama)

9/7/15

प्रति,

सह सचिव
आई.सी.एच.
संगीत नाटक अकादमी नई दिल्ली

विषय- अमूर्त सांस्कृतिक विरासत/ परंपरा के अंतर्गत चयनित बसदेवा गाथा गायन का शोध कार्य जमा करने के सम्बन्ध में |

महोदय,

प्रस्तावित अमूर्त सांस्कृतिक विरासत /परम्परा के अंतर्गत बसदेवा गाथा गायन को पिछले वर्ष शोध कार्य के लिए चुना गया था | मेरे द्वारा इस कलारूप के कलाकारो के निवास ग्रामों में जाकर इस कलारूप के सम्बन्ध में ऐतिहासिक,सामाजिक और सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य में जानकारी एकत्रित की गयी | साथ ही ग्राम के प्रतिनिधि कलाकारों का मेरे द्वारा साक्षात्कार किया गया और संगीत नाटक अकादमी के निर्देशानुसार बिन्दुओं पर जानकारी प्रेषित की जा रही है |

अतः आप से निवेदन है की मेरे द्वारा प्रेषित की जा रही जानकारी को प्राप्त करे और उचित मार्गदर्शन दे ताकि आगे की शोध प्रक्रिया मैं पूरी कर सकूं |

विनीत
नीरज कुंदेर

चेक लिस्ट

क्र.	संलग्न किये जा रहे दस्तावेज	हाँ /नहीं
1	आवेदन पत्र	हाँ
2	चयनित कला रूप शोध कार्य में सहभागी सदस्यो की सूची	हाँ
3	चयनित कला रूप के सम्बन्ध में संगीत नाटक अकादमी द्वारा मांगे गए सवालों के जवाब	हाँ
4	चयनित कला रूप का लिखित साक्षात्कार	हाँ
5	चयनित कला रूप के प्रतिनिधि कलाकारों की सूची	हाँ
6	चयनित कला रूप के ग्रामो में निवासरत कलाकारों की सूची	हाँ
7	चयनित कला रूप के सहभागी संस्थाओ के नाम व पते	हाँ
8	चयनित कला रूप के सहभागी सदस्यों के नाम	हाँ
9	चयनित कला रूप के साक्षात्कार के फोटोग्राफस	हाँ
10	चयनित कलारूप के मंचीय प्रस्तुति के फोटोग्राफस	हाँ
11	चयनित कलारूप के साक्षात्कार वीडियो	हाँ
12	चयनित कलारूप के मंचीय प्रस्तुति वीडियो	हाँ
13	चयनित कलारूप के शोध कार्य की आगामी बिंदु सूची	हाँ

बसदेवा गाथा गायन परम्परा के शोध कार्य में सहभागिता

डाटा संग्रह, साक्षात्कार एवं प्रलेखन	-	नीरज कुंदेर
वीडियो एवं फोटोग्राफस	-	पुष्पेन्द्र कुमार वर्मा
सूची निर्माण	-	रोशनी प्रसाद मिश्र
अन्य सहयोगी सदस्य	-	प्रजीत कुमार साकेत ,रजनीश जायसवाल आरती यादव,उपेन्द्र सिंह कुशराम,प्रवीण कुमार पाण्डेय, सुन्दर लाल सिंह ,संदीप सिंह परिहार , पवन सिंह चौहान ,नेहा सिंह कुंदेर ,बाबू लाल कुंदेर

"बसदेवा गाथा गायन परम्परा"

1.प्रस्तावित योजना का कार्यक्षेत्र राज्य –

:- मध्य प्रदेश

2. योजना के प्रस्तावित सांस्कृतिक विरासत/ परंपरा का नाम (क्षेत्रीय, स्थानीय, हिंदी, एवं अंग्रेजी)

:- भारत की अमूर्त सांस्कृतिक विरासत में इस योजना के अंतर्गत बसदेवा गाथा गायन कलारूप को चिन्हित किया है उसका नाम इस प्रकार है -

क्षेत्रीय नाम	हिंदी नाम	अंग्रेज़ी नाम
बसदेवा	बसदेवा	basdevaa

3. योजना के प्रस्तावित सांस्कृतिक विरासत / परम्परा से संबंधित समुदाय का भाषिक क्षेत्र और भाषा ,उपभाषा एवं बोली का विवरण |

:- चिन्हित कला रूप बसदेवा अमूर्त सांस्कृतिक विरासत से सम्बंधित क्षेत्र की उपभाषा / भाषा एवं बोली का विवरण निम्न प्रकार है :-

बघेलखंड एक परिचय: बघेलखंड स्थानवाची शब्द है | बघेलो का निरंतर साम्राज्य बने रहने के कारण इस खंड का नाम बघेलखंड हो गया | बघेलखंड के नामकरण के कारण ही इस खंड की बोली बघेली कहलाई | पुराण युग में इस खंड के दो भाग थे एक मेकल प्रदेश तो दूसरा विराट प्रदेश मेकल का वर्णन श्रीमद भागवत गीता में भी है | इस प्रकार पुराण युग के उत्तर और दक्षिण दो भाग उल्लेखित हैं | बागुड़ा के इतिहास में भी इसका उल्लेख मिलता है | जिसमे बैरगा राजा का अनेक गीतों में उल्लेख है |क्रमशः अनेक राजाओं के उत्थान –पतन के बाद १२33 में यंहा बघेलवंश की सत्ता कायम हुई |इस तरह रामायण ,पुराण और इतिहास की लम्बी अवधि को पार करती हुई इन समस्त घटनाओं और विचारधाराओं यंहा के साहित्य व संस्कृति से लेकर बघेल राजाओं के जीवन का प्रभाव भी कई रूपों में पडा | बघेल वंशीय राजाओं का धर्म शैव था इनके तमाम राजकीय मंदिरों व सामान्य जनमानस के लिए इनके द्वारा बनवाये गए मंदिरों में शिव की स्थापना ही दिखती है | लेकिन यंहा की आदिवासी

संस्कृति व धार्मिक अनुष्ठानिक भिन्नता पूर्व से ही रही है और आज भी विद्यमान है | बघेलखंड की माटी में लगभग २००००० की संख्या में जैन भी हैं जो आये तो बुन्देलखण्ड से हैं लेकिन वर्तमान में इन पर बघेली संस्कृति का ज़्यादा प्रभाव परिलक्षित होता है | मध्यप्रदेश को सामाजिक-सांस्कृतिक दृष्टिकोण से चार प्रमुख क्षेत्रों में बांटा गया है – बुंदेलखंड, मालवा, निमाड़ और बघेलखंड। मध्यप्रदेश के उत्तरपूर्वी भाग में बघेलखंड अंचल स्थिति है, इसके अंतर्गत सीधी, रीवा, अनूपपुर, सिंगरौली, शहडोल, सतना, उमरिया, उत्तरप्रदेश का सोनभद्र जिला व साथ ही पूर्वी इलाहबाद का क्षेत्र शामिल है | यंहा जगह–जगह पर धरातल से सहसा उठी हुई विंध्य पर्वतमालाओं का उदर विदीर्ण करतीं नदियां बहती हैं | उत्तर मे तमस और बीहर नदियों के मंथर प्रवाह है तो दक्षिण मे नर्मदा और सोनभद्र का उद्गम स्थल | पूर्व भाग पर्वतमालाओं का देश है जंहा घने जंगलों और चट्टानो के बीच "माड़ा" जैसी गुफाएँ हैं | पश्चिम मे सोहागी ,छुहिया ,हरदी ,तथा बहरापानी घाटियों का मनोहर दृश्य है | यंहा कैमोर और मेकल दो पर्वत हैं, कैमोर विंध्याचल पर्वत की एक भुजा है जो बघेलखण्ड को 109 मील से भी ज़्यादा घेरे है | गोविंदगढ़ से आगे यह दो शाखाओं मे विभक्त हो जाता है | कैमोर से अनेक नदियां बहकर गंगा –यमुना की ओर निकलती हैं| मेकल पहाड़ मे प्रसिद्ध अमरकंटक है जिसे कालीदास ने मेघदूत मे "आम्रकूट" कहा है | नर्मदा को रेवा और सोन को पुराणों मे "हिरण्यवाह" कहा गया है | बघेलखण्ड भूभाग 14794 वर्गमील तक फैला है| इसमे 6 जिले एवं 9603 गाँव हैं | मध्यप्रदेश के बघेलखण्ड मे सीधी जिला अपना ऐतिहासिक स्थान रखता है, यह राज्य के उत्तर–पूर्व छोर पर स्थित है | सीधी जिले का प्राकृतिक, सांस्कृतिक, और ऐतिहासिक महत्व है | सोन यहाँ की महत्वपूर्ण नदी है | यह नदी प्राकृतिक संपदा से भरपूर है | सिंगरौली बहुत बड़ा कोल उत्पादक क्षेत्र है | इससे देश के कई बड़े उद्योग क्षेत्रों मे कोयले की आपूर्ति पूरी की जाती है तो दूसरी ओर यहाँ समाज के विशिष्ट संस्कृति से जुड़ा हुआ अनुसूचित जन जातियो का विशाल इतिहास है | जिले में कैमूर, केहेजुआ और रानिमुन्ड घाटी में विशाल दृश्य की ज्वाला और फूलो का खूबसूरत नजारा है |

भौगोलिक स्थिति: बघेलखंड मध्यप्रदेश के उत्तरपूर्वी क्षेत्र में स्थिति है | बघेलखन्ड क्षेत्र के अंतर्गत सीधी, रीवा, अनूपपुर, सिंगरौली,शहडोल, सतना, उमरिया, उत्तरप्रदेश का सोनभद्र जिला व साथ ही पूर्वी इलाहबाद का क्षेत्र शामिल है | बघेलखण्ड प्रकृति के आपूर्व सौदर्यों का देश है | यंहा जगह –जगह पर धरातल से सहसा उठी हुई विंध्य पर्वतमालाओं का उदर विदीर्ण करतीं नदियां बहती हैं | भौगोलिक दृष्टी से देखने पर सम्पूर्ण बघेलखंड अनेक पर्वत मालाओं ,छोटी-बडी नदियों,ऊंचे,-नीचे भूखंडो तथा सघन वनों का क्षेत्र है |सीधी जिले में माड़ा के पास अनेक गुफाएं हैं जो आज भी दर्शनीय हैं | वहीं पश्चमी खंड में अनेक घाटी- छुहिया घाटी,कैमोर और मेकल पर्वत मालाएं हैं |कैमोर इस खंड का सबसे बड़ा पहाड़ है |इस पर्वत से कई नदिया

प्रवाहमान होती हैं |बांणभट्ट की साधना स्थली भवरसेन जंहा सोन ,बनास और महान नदियों का संगम है यंहा ये तीनो नदिया एक साथ पहाड़ तोड़कर निकलती हैं यंही बाणभट्ट ने अपनी कुटी बनाकर विश्व के प्रथम उपान्यास **"कादम्बरी** "की रचना की |बगदरा के सघन वनों में यंहा किसी भी कोने खड़े होकर काले हिरन , बाघ ,शेर और नीलगायो का अवलोकन किया जा सकता है |बगदरा के अलावा बांधवगढ़ के जंगलो में भी मनोरम दृश्य एवं जंगली जानवरों का अवलोकन किया जा सकता है |यंहा पर्यटकों के लिए कई ऐसी अद्भुत जगहे हैं और साथ ही राजवंशीय ज़माने के रेस्टहाउस हैं जंहा ठहरा जा सकता है |

ऐतिहासिक परिचय : एतिहासिक तथ्यों के आधार पर बघेलखंड मात्र ४०० वर्षो का साम्राज्य है |तेरहवी शाताव्दी में व्याघ्रदेव ने अपनी राजधानी बांधवगढ़ बनाकर एक वृहद् भूखंड को प्रभुता प्रदान की | क्रमशः राज्य वृद्धि होती गयी और व्याघ्रदेव के पुत्र कर्णदेव ने इस प्रभुता का विस्तार किया और क्रमशः इस वंश के २२वे महाराज विक्रमादित्य ने १७९७ में अपनी राजधानी बांधवगढ़ से बदलकर रीमा या रीवा बनाया यह नाम रेवा यानी नर्मदा से प्रभावित था|बघेलखंड का यह स्वरूप १८६२ इसवी में निश्चित हुआ जिसमे
बरौंधा,मैहर,कोठी,सोहावल,नागौद और जसो रियासतों को शामिल किया गया |और पोलोटिकल एजेंट कर्नल एडबर्ड काल्बोर्न ब्रईकोर्ट ने अपने आदेश सन १९७२ में पहली बार बघेलखंड का प्रयोग किया था |१२२० विक्रम में अन्हल्वारा पाटन के सोलंकी आरन्योरान्य के व्याघ्र पल्ली या या बाघेला ग्राम की जागीर मिली तभी से इस ग्राम के सोलंकी बघेल कहलाने लगे |उन्ही के वंशज व्याघ्रदेव बघेल संवत १२३३-३४ इस भूखंड में आये और सबसे पहले मार्फा किला को जीतकर बस्ती बसाई ,जिसे बघेल बाडी कहा गया |अपने कथा सरितसार के अंत में रूपमणि शर्मा ने ने भी कुछ बघेल वंश का वर्णन किया है –

"प्रचंडारि व्युहाटवि मथन भूमि ध्वज समो ,
बघेलाना वंशो जयति विदितो भूमि वलये \"

अकबर नामा में भी यंहा के राजाओं को बाघों का ज़मीदार लिखा गया है |अकबर ने १५६३ में कसौटा के राजा मेदनी सिंह को अलग से सनद दे दी और बघेलखंड की सीमा को कम कर दिया |
सन १६५३ में महाराज विक्रमादित्य ने बाघों अर्थात "बांधवगढ़ "से राजधानी "रीवा"लाकर कर दिया तब से औरंगजेबनामा तथा अन्य मुस्लिम इतिहासों में रीवा के शासको को रीवा का ज़मीदार कहा गया | एकोमा बांधवगढ़ में भी विक्रमादित्य को जागीरदार कहा गया है |इस प्रकार १८५३ इसवी से यंहा की समस्त परम्पराएं पत्तो तथा संधि पत्र आदि में बघेलखंड शब्द का ही प्रयोग होने लगा |अन्य कई देशी रियासते शामिल हो गयी और इसकी सुनिश्चित सीमा भी निर्धारित हो गयी |डॉ.जार्ज ग्रियर्सन ने बघेली बोलने वालो की संख्या रीवा कोठी और

सिहावल बतायी इसे बोलने वालो की संख्या २७०८९२६ लिखी | बघेली बोली का दूसरा नाम रिमाई भी है क्यों की यंहा रीवा रियासत रही है | अवधी के दक्षिण में बघेली का क्षेत्र है जिसका केंद्र रीवा राज्य है किन्तु यह दमोह ,जबलपुर,मंडला,तथा बालाघाट के जिलो तक फ़ैली है और इसे बोलने वालो की लगभग संख्या ९० लाख हो जाती है | इस प्रकार इस बोली का क्षेत्र उत्तर में यमुना नदी के दक्षिण बांदा ,फतेहपुर ,हमीरपुर के परगने से लेकर कसौटाऔर शंकरगढ़ तक,पश्चिम में कोठी और सोहावल से मैहर के आस-पास तक ,दक्षिण पक्षिम में कटनी,जबलपुर,दमोह और बालाघाट के कुछ गाँव तक ,दक्षिण में अमरकंटक और मंडला तथा दक्षिण पूर्व में चांगभखार के गाँव कोटाडोल ,करेंजिया और भगवानपुर तक ,पूर्व में सिंगरौली तथा देवसर तक |

बघेलखंड सृष्टी के विकसित काल से अनुपम, अरन्यभा, लालित्य दृश्य वाणी – मन हृदय वपुष संस्कार समर्थ जल के परिपूर्ण रहने के कारण प्रकाशित आत्माओ के अल्प परमोज्जवल प्रकाश को अपने उर में संजोए हुए है| ऋषि मुनि, संत सिद्ध योगियो ने इसे सिद्ध पीठ बना दिया| अलौकिक पथिको के ग्रादिस्त्पनी पल्लवों से यह भूमि चिंताकर्षित आखेट को रंजित कराती हुई समय- सौन्दर्य सुसमताम राजकुलो को अपनी ओर आकर्षित कराती रही है | सुविकसित रुचियों–वस्तियो के विस्तार का इग्गन करती हुई यह भूमि मनीष– मुनि, सिद्ध भक्त, कलाकार, नायिक साहित्य मूर्तियों व सर्वक्षेत्रिक जनों को जन्म दे यह भुमि धन्य हो गयी |इस उर्वर भूमि कृष्ण मृग से लेकर सफ़ेद शेर तक पाए जाते रहे हैं |

पुराणों में यह कारूष जनपद के नाम से जाना जाता रहा है | जो अन्य जनपदों की अपेक्षा संस्कृति समृद्ध रहा है | आधुनिकता से अछूता आदिवासी प्रधान क्षेत्र केहजुआ, कैमोर के अंतराल मे सोनभद्र के स्नेहिल आंचल में किलकित भूमि अपने अप्रतिम के लिए आज भी उल्लेखनीय है |

यह सिद्ध मुनिओ की तपस्थली व कर्मस्थली के साथ – साथ सफेद शेर की अनुकूलित भूमि भी है | यहाँ के अनगढ़ पत्थरो ने चिंतन के लिए साहित्यकारों को उत्प्रेरित किया और ऊबड – खाबड़ ,पथरीली भूमि ने विषय सामग्री प्रदान की | एतिहासिक दृष्टि से बघेलखण्ड का संबंध भारत के अत्यंत प्राचीन और गौरवशाली युग से रहा है |रामायण युग मे यह भूभाग कौशल प्रांत के नाम से प्रसिद्ध था | पुराण युग मे इसके दो भाग थे एक मेकल प्रदेश तो दूसरा विराट प्रदेश | मेकल प्रदेश का वर्णन श्रीमदभागवत गीता मे भी आया है | विराट प्रदेश का संघ राज्य सोन के किनारे था जिसकी राजधानी विराट नगरी थी जिसे आजकल सोहागपुर कहते हैं | यंही पर बरपागंगा है जिसका उल्लेख भृगु संहिता मे मिलता है |शहडोल जिले के पाली गाँव मे आज भी महाभारत कालीन खण्डहर के अवशेष प्राप्त हैं |

सामाजिक परिचय-मनुष्यों का एक समूह जो अपनी इच्छाओं ,क्रियाकलापों व जीवन के सफल संचालन हेतु संगठित होकर तथा आपसी सहमती से बनाए हुए नियमो में आबद्ध

होकर अनुशासित होकर रहने लगता है उसे समाज कहते है |वैसे भी समाजशास्त्रीय परिभाषा के अनुसार "सामाजिक संबंधो के जाल को समाज कहते हैं |"यह जाल बघेलखंड की भूमि पर ही अत्यधिक रूप में फैला हुआ है |जंहा अमीरी-गरीबी लोक परम्पराएं,अंधविश्वास ,टोना टोटके,जातिगत मान्यताये ,बड़े छोटे परिवार,कुल ,जन्म,विवाह,आदि सोलह संस्कारों से भरा पडा है फिर अलग अलग जातियों की भिन्न-भिन्न जातिगत परम्पराओं के साथ जीवन यापन कर रहा है | बघेलखंड में निम्न लिखित जातियां निवास करती हैं –

१.बघेल-ये चालुक्य वंश के क्षत्रिय हैं जो समूचे बघेलखंड पर अपना एक क्षत्र राज्य स्थापित रखे थे|

२.कर्चुली-कर्चुली मूल रूप से तो इस खंड के राजा तो नहीं हैं किन्तु ये वीर क्षत्रिय के रूप में बघेलखंड में जाने जाते हैं |ये रीवा जिले के रायपुर खंड में निवास करते हैं |

३.परिहार-परिहार भी श्रेष्ठ लेकिन सरल एवं बौद्धिक क्षत्रियो में गिने जाते हैं |ये भी बघेलखंड में प्रायः हर जगह निवास करते हैं |

४.चौहान-क्षत्रियो की एक उपजाति तथा पौरुषवान ,जुझारू एवं लड़ाकू जाति के रूप में मानी जाने वाली यह बघेलखंड की प्रमुख जाति है |

५.ब्राम्हण-बघेलखंड में 79 प्रकार के ब्राम्हण पाये जाते हैं इनका भी अपना-अपना क्षेत्र एवं गाँव हैं |

६.बनिया-यह व्यापार करने वाली बघेलखंड की प्रमुख जाति है |

७.तेली-तिल से तेल निकालने वाली यह एक प्रकार की शूद्र जाति है ये भी समूचे बघेलखंड में पायी जाती है |

८.कोरी-बघेलखंड के दक्षिण भाग में अधिकाधिक संख्या में निवास करने वाली यह जाति कपड़ा बुनकरों में आती है |

९.अहीर-वर्ण व्यवस्था के आधार पर अहीर जाति को सम्पूर्ण भारत वर्ष में कृष्ण वंशीय माना जाता है |बघेलखंड में यह जाति गाय चाराने उन्हें पालने एवं दुग्ध उपार्जन का ही कार्य करती है |

१०.गड़रिया-एक पिछड़ी जनजाति जो दक्षिण पूर्व भाग में रहती है |छुटपुट रूप से यह समूचे बघेलखंड में पायी जाती है |

११.कुम्हार-यह जाति भी बघेलखंड की पिछड़ी जाति है |इस जाति का काम मिट्टी के बर्तन बनाना है |

१२.डोम(मेहतर)-यह बघेलखंड के सभी नग्र एवं बड़ी बस्ती में पायी जाती है | इनका मूल कार्य मैला उठाना है |

१३.बसुहार-बांस के बर्तन बनाने के कारण इस जाति का नाम बसुहार पडा यह सूद्र वर्ग की जाति है बघेलखंड के मध्य उत्तर में ज़्यादा संख्या में निवास करती है |

१४.चमार-यह चमड़े के जूते चप्पल बनाने वाली एक शूद्र जाति है बघेलखंड में मरे हुए पशुओ को हटाना व उसके चमड़े निकालकर चमड़े का धंधा करना इसका प्रमुख कार्य है |

१५.गोंड-.यह वनांचल की जाति है जो दक्षिण और पूर्व के जंगलो में ज्यादा बसती है |इन्हें आदिवासी माना जाता है बघेलो से पूर्व ये यंहा के राजा हुआ करते थे |

१६.बैगा-बैगा भी आदिवासी जाति है इसका काम खेती करना है यह भी जंगल में निवास करने वाली जाति है।

१७.पनिका-एक पिछड़ी जाति जो वस्त्र बुनने का काम करती है।

१८.कोल-कोल जनजाति पिछड़ी जाति है।बघेलखंड में कोल अपने आप को सबरी की संतति मानते है। ये खेती करने का कार्य करते हैं ज्यादातर कोल बड़ी जातियों के बाशिंदे हैं।

१९.भूमिया-यह आदिवासी कोटि की एक जाति है यह भूत-प्रेत बाधा को झाड़ने फूकने का काम करती है।

२०.खैरवार –आदिवासियो की एक जाति जो खैर से कत्था बनाने का कार्य करती है। इसी कार्य के कारण ये खैरवार कहे जाते हैं। ये सिंगरौली जिले के चितरंगी व सीधी जिले के कुसमी विकासखंड मे ज्यादा संख्या में निवास करते हैं।

२१.पाव- (पाइक)यह भी जंगल के आस- पास रहने वाली अदिवासियो की एक प्रकार जाति है।इनकी संख्या बघेलखंड में बहुत अधिक नहीं हैं।

२२.कमर-यह गोंडो की ही एक उपजाति है।

२३.दरजी-शूद्र साम्प्रादाय की एक प्रजाति जो कपड़ा सिलने का कार्य करती है।

२४.काछी-यह पिछड़ी जाति है जो ठाकुरों व ब्राम्हणों की ज़मीन में सब्जी भाजी लगाने का कार्य करती है।

२५.खटिक-यह गाँव-गाँव घूम कर व्यापार करने वाली जाति है।

२६.वैसवार-यह परिश्रम करने वाली जाति है यह बघेलखंड के चितरंगी व व्योहारी तहसील में अधिकाधिक संख्या में निवास करती है।

२७.कहार-यह जाति प्रत्येक गाँव में रहती है जो सम्पन्न घरो में पानी भरने का कार्य करती है।

२८.बारी-यह पत्तल बनाने का कार्य करती है।

२९.लोहार-.लोहे से औज़ार बनाने वाली यह जाति हर गाँव में अवसयक्तानुसार निवास करती है।

३०.बढ़ई –यह लोहार की ही तरह की जाति है पर यह लकड़ी का कार्य करती है।

३१.कुर्मी-यह बघेलखंड की प्रमुख जाति है इसका मुख्य कार्य खेती करना है।

३२.कोटवार-यह बघेलखंड में काफी कम संख्या में लेकिन हर जगह पायी जाने वाली जाति है।इसका प्रमुख कार्य गाँव में चौकीदारी करना व खेती करना है।

३३.बहेलिया-यह बघेलखंड में पायी जाने वाली शिकारी किस्म की जाति है।यह भी प्रायः हर जगह पायी जाती है।

३४.कंजर-यह बघेलखंड में ही निवास करने वाली जाति है लेकिन इसका निवास अस्थायी है।यह पूरे बघेलखंड में घूम कर शिकार एवं भिच्छाटन का कार्य करती है।यह सीधी जिले के मझौली तहसील में पाए जाते हैं।

३५.बसदेवा-यह भिच्छाटन कर अपना भरण-पोषण करने वाली जाति है।यह बसदेवा गाथा गायन परम्परा के संवाहक के रूप पमें भी जाने जाते हैं।

३६.भरथरी-यह बघेलखंड की घुमंतू जाति है सारंगी बजाकर भिच्छाटन करना इनका प्रमुख कार्य है।

३७.कुंदेर –बघेलखंड में यह पिछड़ा वर्ग में आती है इस जाति का प्रमुख कार्य लकड़ीकी कारीगरी करना है |ये लकड़ी के खिलौने कूंद कूंद कर बनाते हैं यही कारण है की इस जाति का नाम कुंदेर पड गया |

३८.कचेर-यह जाति भी पिछड़ा वर्ग में आती है यह मूल रूप से मनिहार का कार्य करती है जो अक्सर जुलाहे किया करते थे |

३९.कलार-यह गोंडो की ही उपजाति है जिसका प्रमुख कार्य शराब बनाना है |

४०.घसिया-यह भी गोंडो की ही उपजाति मानी जाती है जो विवाह उत्सव में गुदुम बाजा बजाने का कार्य करती है |

४१.भील-यह कोल की ही तरह की जाति है जो कृषि कार्य का काम करती है |

इस प्रकार विभिन्न प्रकार की जातियों से बघेलखंड की माटी विकसित है तथा यह भी दिखाई देता है की इन जातियों का कार्य बघेलखंड में वैदिक वर्ण व्यवस्था के अधार पर ही है |जो बोझिल है तथा मानवीय संवंधो की मधुरता में रोक लगाती है |एक–दुसरे के साथ उठने बैठने एवं खाने-पीने तथा आत्मसात करने की प्रविति इसी वर्ण व्यवस्था के कारण नहीं पनप-सकी है |वर्तमान में जाति विहीन समाज का निर्माण जारी है |

बघेलखंड की अपनी रीति-रिवाज़ अपनी-अपनी जातीय परम्पराएं तथा जीवन यापन के अलग-अलग ढंग हैं | जीवन निर्वाह में विभिन्नता के अनेक दर्शन होते हैं फिर भी एकता लगन तथा परिश्रम ही इस खंड की पूंजी है |

बघेलखंड के प्रमुख सामाजिक गुण:

(क)यहां के समाज मे जाति प्रथा कि कट्टरता अधिक है |

(ख)जातियों मे भेद-प्रभेद का आधिक्य जैसे कि गोण्डों मे 2अलग–अलग अंतरजातियाँ हैं |

(ग) विवाह संस्कार प्रत्येक जाति के लिए आवश्यक है तथा हिन्दवानी और गोंडी दोनों के विवाह संस्कार अलग–अलग हैं |

(घ)आदिवासियो मे बहुपत्नी रखने ,प्रेम विवाह ,एवं कला–कौशल के आधार पर दूसरों कीऔरतों को जीतकर अपनी पत्नी बना लेने का भी रिवाज है |

(च) गोंडी संस्कृति कि जातियों मे "गोदना" गोदाने कि विख्यात परंपरा है |

(छ)आदिम सभ्यता का प्रभाव यहां के जनजीवन मे सहज ही झलकता है|

(ज)सामाजिक रीति – रिवाजों का आज भी कट्टरता से पालन किया जाता है |

|**(झ)**तरह –तरह के आभूषण पहनने एवं उसे सहेज कर रखने कि परंपरा है |

(ट)अनेक जातियों के होते हुए भी जातियों में भेद –प्रभेद हैं इसलिए इनमे श्रेष्ठ और निम्न के दर्शन होते हैं|

(ठ)विवाह संस्कार प्रत्येक जाति का मूल धर्म है |पति-पत्नी के सम्बन्ध बिना वैवाहिक रीति का सम्पादन नहीं हो सकता |किन्तु जातीय आधार पर अपनी-अपनी रीतियाँ हैं और उससे कट्टरता के साथ उच्च कोटि की जातियों में वैदिक रीति से विवाह किया जाता है |निभाने की भी परम्परा है |कंही ऐसी भी जातिया हैं जिनमे दूध सम्बन्ध बचाकर भी विवाह कर दिया जाता है |कहीं-कहीं गोत्र को देखकर विवाह किया जाता है | किन्तु निम्न कोटि की जातियों में कुछ वैदिक रीति के अलावा उनकी जातीय परम्परा में जैसे अहीरों में बढनी की पहले शादी करा दी जाती है फिर विवाह की रश्म शुरू होती है | कुछ जातियो में अग्नि का मिलन करवा दिया जाता है | पिछड़ी जनजातियो में कई विवाह कर लेने या बहुपत्नी रखने की परम्परा है|

गोंड ,कोल ,चमार ,कोरी,आदि कुछ ऐसी भी जातियां हैं जिनमे चाचा-ताऊ के लडकी से भी विवाह हो जाता है|

(ड)बघेलखंड में भी पुरुषो की आपेक्षा नारियो को उतनी स्वतंत्रता ,अधिकार व सामाजिक मान्यताएं प्राप्त नहीं हैं जबकि महिलाओं की संख्या पुरुषो की अपेक्षा ज़्यादा है | गृह सीमा में बंधी हुई ये अपना जीवन निर्वाह कर रही हैं |सोने चांदी व लाख के गहने पहनती हैं |यंहा पुत्र उत्पत्ति पर जो सुखानुभूति देखने को मिलती है वह पुत्री के पैदा होने पर नहीं|

(ढ)कुछ वर्षो पहले यंहा मूल उद्योग खेती हुआ करती थी लेकिन अब सिंगरौली जैसी कोल माइंस होने के कारन २५ कोयले एवं बिजली की कंपनिया आ गयी हैं और आर्थिक रूप से यंहा के लोग थोड़ा मज़बूत हुए हैं तो कहीं इन्ही के कारण पलायन के शिकार भी हुए हैं|

(ण)यंहा के सामाजिक स्थिति को बिगाड़ने वाले लोगो के प्रति समाज ही फैसला करती है |लेकिन समय के साथ बहुत कुछ बदला है इस सामाजिक ढ़ाचे का भी पतन हुआ है धीरे –धीरे समाज की वह स्थितियां भी बदलती नजर आ रही हैं जो आपसी सुलह और सामाजिक दायरे की थी |कहा जाता है की पहले यह भी एक परम्परा रही है कि अपने गाँव में लोग पुलिस का आना सम्मान के खिलाफ मानते थे बिना गाँव वालो की अनुमति पुलिस गाँव में न तो प्रवेश कर सकती ठी और न ही सम्बंधित व्यक्ति पर मुकदमा कर सकती थी अगर उस व्यक्ति ने गुनाह किया है तो समाज ही उसे सजा देता था परन्तु समय और समाज के तीव्र गति से बदलते रूप ने इसे भी विलुप्तता की कगार पर लाकर खड़ा कर दिया जो सुव्यवस्थित समाज का अभिन्न अंग थी|

(त)बघेलखंड में त्योहारों को मनाने का भी अपना एक अलग ढंग है कुछ त्यौहार तो विशेष महत्व रखते हैं तो कुछ त्यौहार सामान्य ढंग से मना लिए जाते हैं |प्रमुख त्योहारों में दशहरा ,दीपावली ,होली,नागपंचमी,तीजा ,जवारा आदि हैं |सामान्य त्योहारों में खाजुलइयाँ ,हरछठ ,शिवरात्री,बहुरा,करवा चौथ ,भाई दुइज ,खिचडी,बसंत पंचमी,रामनवमी,आदि इनमे से कुछ त्यौहार मेले के रूप में भी मनाये जाते हैं |

(थ) दहेज़ प्रथा बघेलखंड में प्रचलित तो है लेकिन यह ब्राम्हण ,क्षत्रिय ,वैश्य तक ही सीमित है |

(द)बहुपत्नी प्रथा भी बघेलखंड में मानी है अब धीरे-धीर सामाजिक जागरूकता के कारण इसका लोप हो रहा है |

(ध)शूद्र वर्ग के समाज में अनेक देवी- देवताओं की प्रथा है ये इन्हें प्रसन्न करने के लिए बली भी चढाते हैं कहा जाता है इनमे पूर्व में नरबली की परम्परा रही बाद में बघेलखंड के राजा विक्रमादित्य ने इस परम्परा पर अंकुश लगाया और तब से पूर्णरूपेण बंद है |पशु बलि देने की परम्परा को **"जपान"** कहते है |कोल जाति के लोग अपने देवी देवताओं को प्रसन्न करने के लिए विभिन्न प्रकार के नाटकीय क्रिया –कलाप भी करते हैं जैसे –जीभ में बाना छेदना ,हाथ में छेदना ,गर्म खप्पड़ हाथ में लिए रहना ,दांत से गर्म लोहे कि सांकल उठाना ,कील गडी खड़ाऊं पर चलना व् इनके स्थानीय देवी-देवताओं में,बघउत,बंदरिया,बाबा,सन्यासी ,स्थानीय देवताओं में दानो,बरम,महामाई,बघेसुर,छोटकादेव,बडकादेव,यादोराय,घमसान,पंडा,लक्षिमन ,काली,बदरिया आदि हैं|

(न)आदिवासियों की कुछ अपनी जातीय परम्पराए हैं ये अपने उत्सव को महुए की शराब पीकर मनाते हैं और रात भर अपने जातीय कला रूप करमा ,शैला ,ददरिया ,गीत नृत्य करते हैं जिसमे पुरुष और महिला सम्यक रूप से भाग लेते हैं |

साहित्यिक पड़ाव –

यहाँ के साहित्यिक पड़ाव की बात करे तो 19 वी शदी से ही यहाँ की साहित्यिक साधना प्रगति की आराधना अपनी सुरभि बिखेरने में तत्पर रही है |सोन–रेवा के कगारों की हरीतिमा की ही देन है ,बाणभट्ट की कादंबरी व हर्ष भारत जैसी पूत कृतिओ का प्रादुर्भाव हुआ है |सेनापति एवं पद्माकर की शैली में वृत्तानुपात प्रधान रचनाये लिखने का प्रचलन इस काल में रहा है| बघेली बोली मे लिखित साहित्य का अभाव है जबकि बघेली मे लोकसाहित्य प्रचुर मात्रा मे उपलब्ध है |लौकिक साहित्य ही लोकसाहित्य है | वैदिक साहित्य से भिन्न समस्त बाते लौकिक कहलाएंगी | यह लोक शब्द से उत्पन्न है |डॉ.सतेन्द्र ने लोक साहित्य की परिभाषा निम्नानुसार दी है –वह समस्त बोली व भाषागत जिसमे निम्न तत्व सम्मिलित हो लोक साहित्य कहलाता है –

अ.आदि मानव में अवशेष उपलब्ध हो |

ब.परम्परागत मौखिक क्रम में उपलब्ध बोली या भाषागत अभिव्यक्ति हो जिसे किसी की कृति न कहा जा सके | जिसे श्रुति ही माना जाता है और जो लोक मानस की प्रविति में समाई हुई हो |

स.कृतित्व हो लेकिन वो लोक मानस के सामान्य तत्वों से युक्त हो की उसके किसी व्यक्तित्व के साथ सम्बन्ध होते हुए भी लोक उसे अपने व्यक्तित्व की कृति स्वीकार करे |"

विश्वास और आचरण
रीति रिवाज़
कहानियाँ,गीत तथा कहावतें
लोक गाथा ,नृत्य,चित्र आदि |

अब यदि हम बघेली लोकसाहित्य की बात करें तो दीर्घकालीन यानी १०वीं शताब्दी के पूर्व से ही चली आती दिखाई पड़ती है |१०वी शतब्दी में कर्णदेव का 'सारावली' ग्रन्थ प्राप्त होता है |उसके बाद क्रमशः धर्मदास ,सोनन नाई ,ब्रिजेश महाराज जय सिंह ,महाराज विश्वनाथ सिंह,महाराज रघुराज सिंह,आदि के अनेक ग्रंथो में लोकजीवन भरा पडा है |भले ही इन सबका साहित्य विशुद्ध बघेली साहित्य न हो परन्तु बघेलखंड के जनजीवन और लोकपरम्परा की छाया उसमे पर्याप्त मिलती है |यही नहीं गोस्वामी तुलसीदास जिनका साहित्य लोकजीवन का महत्वपूर्ण उपादान है बघेलखंड के चित्रकूट में ही रमे जो सतना जिले में आता है |बघेली लोकसाहित्य की परम्परा में विश्वास और मनोभूमि तथा विकास का क्रमिक वातायन प्राप्त होता है |कुछ विद्वानों के अनुसार अलिखित साहित्य ही लोकसाहित्य है |जो अलिखित है क्या उसे ही हम लोकसाहित्य कह पाएंगे और जो लिखित है जैसे आल्हा ,ढोला मारू,पंचतंत्र की कहानिया क्या ये सब लोकसाहित्य में नहीं आयेगीं| मेरा तो मानना है की हर वो साहित्य लोकसाहित्य है जो उस जीवन शैली भाषा को छूकर निकल जाए |किसी साहित्य में हमें सिर्फ यह देखना है की उसमे लोकमानस की अभिव्यक्ति हुई है की नहीं क्योंकि लोकमानस ही लोकसाहित्य का निर्धारक तत्व है |बघेलखंडी लोकसाहित्य को निम्न भागो में विभक्त कर सकते हैं –

लोकगीत
लोककथा
लोकगाथा
कहावते
लोकनृत्य
पहेलियाँ
मन्त्र
वंही लोक गीतों को हम निम्नप्रकार से विभाजित हुआ पाते हैं -
बघेलखंड लोककलारूपों की वो अथाह जलराशि है ,जंहा तरह-तरह की लोककलाए रत्नरूपों में अंतर्निहित है |वही बघेलखंड के मधुर लोकगीत यंहा के लोक जनजीवन की पीड़ा हर लेते हैं |उनकी रग-रग में साँस की तरह रची-बसी है |बघेलखंड सीधी,रीवा ,सतना ,शहडोल ,सिंगरौली का पूरा भूभाग है |यंहा के लोकगीतों में यंहा के ऐतिहासिक ,सामाजिक

,राजनीतिक ,सांस्कृतिक परम्परा के दर्शन होते हैं |मानव जन्म से मृत्युपर्यन्त तक बघेलखंड में गीत गाने की परंपरा है | जिन्हें कुछ इस प्रकार विभाजित किया गया है -

1.जन्म संस्कार गीत
2. उपनयन संस्कार (बरुआ)गीत
3.विवाह संस्कार गीत
4.मृत्यु संस्कार गीत
5 .ऋतू गीत (कृषि गीत)
6 .पर्व गीत
7 .अनुष्ठानिक गीत /देवी गीत
8 .जाति विशेष गीत
9 .लोक गाथा गायन
10.लोक कथा गायन
11 .लोकनाट्य गीत
12 .श्रम गीत (क्रिया गीत)
13 .नृत्य गीत
14 .मंत्र गीत
15.यात्रा गीत
16.खेल गीत
17.बनजोरबा गीत

लोकगीतों के बाद लोककथा रूपों की हम चर्चा करते हैं जिसमे हमें लोक कथाओं के विभिन्न अलग –अलग विषयगत भिन्नताएं देखने को मिलती हैं -

१.पशु –पक्षी सम्बंधित कथाएं

२.जानवरों से सम्बंधित कथाएं

३.नीतिपरक कथाएं

४ धर्म संबंधी कथाएं

५.स्थानीय देवताओं सम्बंधित कथाएं

६.जातिगत कथाएं

७.भूत-प्रेत संबंधी कथाएं

८.जातक कथाएं

९.प्रेम परक कथाएं

१०.युद्ध संबंधी कथाएं

११.खेती किसानी संबंधी कथाएं

लोक गाथा गायन परम्पराओं की बात करे तो बघेलखंड में अलग-अलग जातियों में निम्न प्रकार की गाथा गायन परम्पराए चलन में हैं –

१.चदैनी

२.छाहुर

३.ललना

४.चंदनुआ

५.पदुम कंधइया

६.गढ़ केउंटी

७.रेवा –परेवा

८.भरथरी

९.नल-दम्यंती

१०.राजा हरिश्चन्द्र

११.गोंडी

१२.शिव-पार्वती

१३.रानी केतकी

१४.आल्हा

१५.हरदौल

१६.ढोला म्हारू

बघेलखंड में कहावतो का अधिकाधिक्य प्रचलन है कहावतो के निम्नलिखित प्रकार हमें देखने को मिलते हैं –

१.कृषि संबंधी कहावतें

२.नीतिपरक कहावतें

३.जातिगत कहावतें

४.पशु-पक्षी संबंधी कहावतें

५.धर्म संबंधी कहावतें

६.राजवंश संबंधी कहावतें

७.तकनीक संबंधी कहावतें

बघेलखंड मध्यप्रदेश के अन्य क्षेतत्रों की तरह नृत्य प्रधानता वाला क्षेत्र तो नहीं है लेकिन यंहा जातिगत नृत्यों की बहुलता देखने को मिलती है |जातिगत नृत्यों की हम निम्नवत चर्चा कर रहे हैं –

१.करमा

२.शैला

३.गुदुम

४.अहिराई

५.अहिराई –लाठी

६.केहरा

७.सजनयी

८.दादर

९. कोलदादर

१०. मटकी

११.भगोरिया

१२.भीली

१३.दर्दरिया

१४.सुआ

१५कोलनहई

१६.चमरौहीं

१७.धोबिआई

१८.कोंहरौहीं

१९.जवारा

२०.लहलेंदबा

बघेलखंडी लोक कलारूपो में पहेलियो का बहुत महत्व है इन्हें हम निम्न भिन्न रूपों में देख सकते हैं –

१.प्रकृति संबंधी पहेलियाँ

२.खेती संबंधी पहेलियाँ

३.नैतिक जीवन शैली सम्बंधित पहेलियाँ

४.संस्कारों संबंधी पहेलियाँ

बघेलखंड में मन्त्र गीतों की परम्परा सामान्य जनजीवन के सहज प्रयोग में तो नहीं हैं परन्तु कुछ ओझाओं से जो हमे मन्त्र सुनने को मिले वो निम्नवत हैं –

१.सांप के मन्त्र

२.बिच्छू के मन्त्र

३.भूत –प्रेतों के मन्त्र

४.ज़िन्द के मन्त्र

५. बलि के मन्त्र

६.विभिन्न रोगों के झाड़ने के मन्त्र

७.पशु रोग मन्त्र

८.स्थानीय देवताओं के सुमिरनी मन्त्र

९.कुल्हाचरन मन्त्र

१०. अन्य विषाक्त जानवरों के झाड़ने के मन्त्र

लिखित लोक साहित्य-साहित्य की विविधि विधाओं में से कविता में भी लोकसाहित्य का स्वरूप सरलता से देखा जा सकता है |कविता लोकमानस और लोकजीवन में गहरा सम्बन्ध स्थापित किये हुए है |आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी के शब्दों में –"साहित्य का अत्यंत महत्वपूर्ण भाव लोकसाहित्य पर आधारित है |"बघेलखंड में पूर्व से अब तक लगातार लोकसाहित्य लिखा जा रहा है जिसकी मूल भाषा बघेली ही है |लिखित साहित्य के तारतम्य में हम कुछ बघेली कवियों एवं पूर्व के बघेली साहित्य की बात रख रहे हैं जो निम्नप्रकार है-

लोक कवि बैजू 'काकू'

मधुर अली

गणेश भट्ट

श्यामसुंदर शुक्ल

हरिदास कवि

श्री शम्भू 'काकू'

नागेन्द्र प्रसाद शर्मा

गुलाम गौश खां

कालिका प्रासाद त्रिपाठी

सुदामा प्रासाद मिश्र

बाबूलाल दाहिया

शिवशंकर मिश्र 'सरस'

सनत कुमार सिंह

धीरेन्द्र त्रिपाठी

रामलखन शर्मा

शैफूद्दीन सिद्दीकी 'सैफू'

रामदास पयासी

भागवत प्रसाद पाठक

गोमती प्रसाद ' विकल '

बघेलखंड के सम्पूर्ण क्षेत्र के ये बघेली कवि हैं जिन्होंने सार्थक रचनाये कर बघेलखंड को बघेली भाषा को नए आयाम दिए भाषा को नई दिशा प्रदान की | बघेली भाषा के लिखित साहित्य में १०वी शताब्दी के काल से ही यंहा के राजवंशो से रचनाये होनी शुरू हो गयी थी जिनमे प्रमुख राजाओं के नाम हम लिख रहे है –

महाराजा विक्रमादित्य सिंह

महाराजा रघुराज सिंह

महाराजा विश्वनाथ सिंह

महाराजा मार्तंड सिंह

राजा राव बैरीशाल आदि |

बघेली बोली -. बघेली बोली भी अन्य बोलियों के समान्य हिन्दी से ही मिश्रित है | इस अंचल कि हिन्दी को भी पूर्वी हिन्दी कहा जाता है |अतः पूर्वी हिन्दी से एक समान जो बोलियाँ निकली उनमे प्रथम अवधी फिर बघेली और छत्तीसगढ़ी है |डाक्टर उदय नारायण तिवारी अवधी और बघेली में नाम मात्र का अंतर मानते हैं –भाषा संबंधी विशेषताओं की दृष्टी से अवधी तथा बघेली में नाम मात्र का अंतर है |अतएव अवधी से अलग बोली के रूप में इसे स्वीकारने की आवश्यकता न थी | डाक्टर ग्रियर्सन के अनुसार –"पूर्वी हिन्दी की अन्य बोलियों की भांति बघेली की भी उत्पत्ति अर्धमागधी से हुई है |बाबू श्याम सुन्दर दास तथा उदय नारायण तिवारी ने भी ग्रियर्सन की बात का समर्थन किया है |किन्तु बाबूराम सक्सेना ने अपने मत का समर्थन करते हुए लिखा है कि –"पूर्वी हिन्दी जैन अर्धमागधी की अपेक्षा पाली के अधिक निकट है |"डाक्टर सक्सेना के मत का खंडन करते हुए त्रिलोकी नारायण दीक्षित ने कहा है की –"सक्सेना का मत स्पष्ट नहीं है | उनका यह अनुमान है की- अवधी जैन मागधी से नही वरन उसके पूर्व किसी अर्धमागधी से उत्पन्न हुई है |"इस प्रकार अवधी और बघेली में नाम मात्र का अंतर है बघेली को अवधी से अलग करने की आवश्यकता नहीं है |अवधी के अंतर्गत तीन प्रमुख बोलियाँ हैं अवधी ,बघेली,और छत्तीसगढ़ी अवधी और बघेली में कोई अंतर नहीं है बघेलखंड में बोले जाने के कारण इसका नाम बघेली पडा |

कतिपय विद्वान् लेखको ने अवधी और बघेली में अंतर स्पष्ट करते हुए लिखा है जिसमे ग्रियर्सन का मत दृष्ट्व्य है –

१.बघेली में अतीत काल की 'करिया ते' अथवा तैं प्रयुक्त किया जाता है जबकी अवधी में इसका अभाव है |

२.अवधी में मध्यम पुरुष तथा भविष्यत् काल के रूप 'ब' संयुक्त करके सम्पन्न होते हैं जबकि बघेली में 'ह 'जोड़कर बनाए जाते है |यथा अवधी देखीलों तो बघेली देखिहौं |

३.अवधी 'व' तथा बघेली 'ब' में परिणित हो जाता है |यथा –अवधी आवाज बघेली अबाज अवधी आवा बघेली आबा |

बघेली में और कई एक अंतर अवधी से भिन्न दिखाई देते हैं |सर्वनाम में यह लगभग हिन्दी का अनुसरण तो करती है परन्तु अवधी का नहीं |सर्वनाम आदि की आवश्यकता पर अवधी में एक पूर्ण शब्द तुम ,उन या उनखर से बोध होता है,परन्तु वंही बघेली में प्रायः पांच शब्द का प्रयोग किया जाता है जैसे –तूपांच ,उनपंचे, तथा ओनखर पंचेन के आदि |हिन्दी में भाई लोग शब्द का प्रयोग होता है जैसे –तुमलोग ,उनलोगों का आदि | इसी तरह एकवचन हो दो वचन हो या बहुवचन हो सभी क्रियाओं में अंतर दिखाई देता है |अवधी में जंहा अहै –बातैं की टेक लगा के बोलते हैं तो वही बघेली में ऍ और ई लगाकर काम चला लिया जाता है |भूतकाल की क्रिया में भी अवधी में कहे रहों ,कहे रहें आदि का प्रयोग होता है जबकि बघेली में एकवचन हेतु कहे रहया तथा कहे रहे का प्रयोग होता है | विशेषण बनाने में भी बघेली में हा का प्रयोग कर विशेषण में बदल दिया जाता है यथा-ससुररिहा,पानी से पनिहा,बेटऊ से बेटउहा,नीक से निकहा ,भूख से भूखहा,पियास से पिअसहाआदि |कार्य किन समाप्ति पर बघेली में चुकेन शब्द का प्रयोग होता है जैसे की हिन्दी में लिए शब्द लगता है –खा लिए ,पहन लिए,उसी प्रकार बघेली में खाय लिहेन ,पहिन लिहेन आदि शब्द हैं | किसी के प्रति सम्मान व्यक्त करने के लिए हुकुम या मर्जी बोलकर आज्ञा सूचक जन वाक्य का प्रयोग होता है जैसे-हुकुम होय तो जइ बिलकुल उसी तरह हिन्दी में- हुकुम हो तो जाए उसी प्रकार बघेली का इहां ,उंहा ,जंहा ,तंहा और हिन्दी का यंहा , वंहा ,जंहा .तंहा आदि |तो इन सब उदाहरणों से यह सिध्ध होता है की अवधी से कंही भिन्न बघेली का अपना अस्तित्व है |गौर करे यदि यह अवधी के इतने नज़दीक होकर उससे भिन्न है तो अन्य बोलियों से भिन्न तो होगी ही |इस प्रकार हम बघेली को एक अलग बोली के रूप में विश्लेषण करने पर देखते हैं |

प्रस्तावित योजना वाले क्षेत्र की भाषा 'बघेली' है जो पूर्वी हिन्दी की प्रमुख बोली है | बघेली बोली बोलने वालो का क्षेत्र दो भागो मे बंटा है एक तो विशुद्ध बघेली और दूसरी गोंडी बघेली इसी आधार पर यंहा पाए जाने वाले कलारूपों को भी दो भागों मे बांटा गया है | एक हिंदवानी परंपरा और दूसरी आदिवासी परंपरा के नाम से विख्यात है | बघेली भाषा का क्षेत्र सम्पूर्ण बघेलखण्ड के साथ –साथ मिर्जापुर ,मंडला ,बालाघाट बांदा तथा छत्तीसगढ़ का बिलासपुर

तक का कुछ भाग भी शामिल है | बघेली भाषा 13 वी सताब्दी के आस - पास से अपने अस्तित्व में आई है | इसे बघेलखंडी , रिमारी तथा रिवाई के नाम से भी जाना जाता है |

बघेलखण्ड मे विभिन्न जातियों के लोग रहते हैं | इन जातियों के संस्कारों रीति – रिवाजों और रूढ़ियों मे बहुत अंतर है इसलिए यही कारण रहा है कि यंहा जातिगत लोक साहित्य ज़्यादा मिलता है यहाँ की **प्रमुख जातियाँ-**
बघेल,चौहान,परिहार,कर्चुली,सेंगर,गहरवार,कछवाह,बालंद,चंदेल,राजपूत,सोनवंसी,पाइक,भ दौरिया,बीसैन,दिखित,रघुवंशी,राणा,राठौर,वैश्य,हाड़ा,पवार,सोलंकी,पडरहा,तिवारी,परौहा ,चंद्रवंशी,शुक्ल,गर्ग,गौतम,शर्मा,पाण्डेय,कोपरिहा,पाठक,अग्निहोत्री,बेलउहां,उरमलिया ,दीक्षित ,राजोरिया ,चौबे,पमार ,बरगाही,बैसवार,मल्लाह ,गोंड, बनिया , आहीर , गड़रिया, तेली , कुम्हार , कोरी , बसुहार , चमार , डोम , भूमिहार ,खैखार ,पनिका , बैंगा , पाव ,कोल, कमर , पिड़िहा, दर्जी ,कुनबी ,कोटबार,काछी , खटिक, कहार,कोंहार , धोबी , बारी , भील, केवट ,कुंदेर , कचेर , डोमार , बसुहार ,लोहार , बढ़ई, लोनिया , लाला , बीआर , अगरिया ,घसिया , कलार , केवट भांट आदि प्रमुख जातियाँ हैं |बघेलखंड की मूल बोली बघेली है जो अवधी की उपभाषा मानी जाती है |

4.योजना के प्रस्तावित सांस्कृतिक विरासत /परम्परा से स्पष्ट रूप से सम्बंधित प्रतिनिधि ग्राम,समुदाय ,समूह ,परिवार एवं व्यक्ति का नाम एवं संपर्क (विवरण अलग से संलग्न करें

-:संलग्न

5.योजना के प्रस्तावित सांस्कृतिक विरासत / परम्परा के तत्वों की जीवन्तता का विस्तारित भौगोलिक क्षेत्र(ग्राम,प्रदेश,राज्य,देश,महादेश आदि)जिनमे उसका अस्तित्व है /पहचान है |

-: बसदेवा गाथा परम्परा बघेलखंड के आलावा देश के अन्य राज्यों में भी पाए जाती है |जिसे बसदेवा ,बासुदेव या हरबोलों के नाम से भी जानते हैं विलुप्त प्रायः होती गाथा गायन परम्परा को हम ग्राम,प्रदेश ,राज्य ,देश ,महादेश आदि के आधार पर उसके आस्तित्व को निम्नलिखित रूप से पहचान दे रहे हैं –

ग्राम जमुआर- बसदेवा गाथा गायन के लिए सीधी ,बघेलखंड ही नहीं सम्पूर्ण मध्य प्रदेश में जाना जाने वाला यह ग्राम जिसे कला रूपों से सम्बन्ध रखने वाले तमाम लोग जानते होंगे |यह गाथा गायन परम्परा आज भी इस ग्राम में बड़ी सक्रिय रूप से प्रचलन में है | सीधी से ६० किलोमीटर की दूरी पर अमरपुर सिहावल रोड पर स्थित यह ग्राम करीब २००० की आबादी वाला है |यंहा बसदेवा जाति के अलावा कोल ,कमर ,जोगी ,चमार ,आदि जाति निवास करती

है जिसमे से बसदेवा समुदाय की कुल जनसंख्या 85 है |इस समुदाय की जातिगत कला रूप के २ कलाकारों को छोड़ दे तो पूरे समुदाय से यह गायन परम्परा पूर्ण रूपेण खत्म हो चुकी है विलुप्तता की कगार पर यह गायन परम्परा आज भी इसी ग्राम के दो कलाकारों के नाम से पूरे रास्ट्रीय स्तर पर जानी जाती है |अनूप लाल बासदेव इस गाथा गायन परम्परा के लोक प्रसिद्ध और रास्ट्रीय स्तर पर भी ख्यातिलब्ध कलाकर हैं |ऊबड़-खाबड़ भूमि पर बसे इस ग्राम की कुल आबादी कृषि से ही अपना जीवन यापन करती है और कोई दूसरा माध्यम नहीं है साधन नहीं है | बसदेवा जाति भी अब अपनी पारम्परिक कला रूप को छोड़ मेहनत मजदूरी कर अपना और अपने परिवार का भरण-पोषण कर रहे हैं |

ग्राम चकड़उर- बघेलखंड में जमुआर के अलावा अन्य बसदेवा ग्राम भी हैं जंहा से बसदेवा जाति के लोग दूर-दराज के गाँवों व सीमावर्ती राज्यों में बसदेवा गाथा गायन के लोग भिच्छाटन के लिए जाते हैं |वैसे ये ग्राम लोक में जाने जाते हैं लेकिन मंचीय कार्यक्रम न हो पाने के कारण इनका राज्यीय स्तर पर कोई छवि नहीं बन पायी है |लेकिन इस ग्राम मे आज भी इस कलारूप के अच्छे जानकार व कलाकार निवासरत हैं जो अपनी परम्परा को ओढ़ते-बिछाते हैं |यह ग्राम सीधी से ९० किलोमीटर की दूरी पर सीधी खड्डी रोड पर बसा है जिसकी कुल मानक आबादी १७०० है और बसदेवा जाती समूह के लोग करीब 100 के आस-पास है |जिसमे से कुल २० लोग ही इस गायन परम्परा के संवाहक रूप में कार्य कर रहे हैं |भौगोलिक दृष्टी से यंहा की ज़्यादातर ज़मीन पथरीली और ऊबड़-खाबड़ है जो की अच्छी उपज की नहीं है |इस क्षेत्र का प्रमुख व्यवसाय ,जीवन यापन का साधन कृषि कार्य ही है |

ग्राम बैकुंठपुर-यह ग्राम रीवा सिरमौर रोड पर स्थित है |यह रीवा मुख्यालय से २५ किलोमीटर की दूरी पर समतल भूमि पर बसा हुआ है | इस गाँव की कुल आबादी १८०० की है | यंहा बसदेवा के अलावा बघेलो की बड़ी –बड़ी बस्तियां हैं | इस गाँव के बासदेव जाती के लोग भिच्छाटन के लिए आज भी दूर-दराज़ के गाँवों व सीमावर्ती राज्यों को जाते हैं और अपने परिवार का भरण-पोषण करते हैं |

ग्राम सीतापुर-यह ग्राम सीधी से बहेराडाबर होते हुए मऊगंज रोड पर सीधी से करीब ७० किलोमीटर कि दूरी पर स्थित है | इस ग्राम की कुल मानक आबादी २३०० है जंहा बसदेवा के अलावा कोल,चमार,गोंड,बैगा,व अन्य आदिवासी जातिया जैसे पनिका भी निवास करती है |इस गाँव में बसदेवा जाति की कुल संख्या 120 एवं पारम्परिक कला रूप के प्रदर्शन करने वालो की संख्या २० है |

ग्राम दौलतनगर- इस ग्राम में बसदेवा गाने वालो की कुल संख्या ११है |

ग्राम पतुलखी-यह जमुआर रोड पर ही स्थित ग्राम है यंहा बसदेवा तो हैं लेकिन गाथा गायन परम्परा को प्रस्तुत करने वाले कलाकार नहीं हैं |

ग्राम डिहुली-इस ग्राम में बसदेवा गाथा गाने वालो की कुल संख्या ५ है जो की आबादी की ५ प्रतिशत है |

ग्राम भटहा-सीधी से 30 किलोमीटर की दूरी पर सीधी रीवा रोड पर स्थित इस ग्राम की कुल मानक आबादी २४०० है एवं यंहा निवासरत बसदेवा जाति की कुल संख्या १२९ है जिसमे की बासदेव गाथा गायन परम्परा को प्रस्तुत करने वाले कलाकारों की कुल संख्या ११ है | यह ग्राम बसदेवा गाथा गायन परम्परा के लिए राज्यीय स्तर पर नहीं जाना जाता और न ही यंहा के कलाकारों को अब तक मंच प्रदान हुआ है |भटहा ग्राम में बसदेवा गाथा गायन को प्रस्तुत करने वाले बड़े ही बुजुर्ग कलाकार हैं जो की इसके इतिहास के सम्बन्ध में काफी कुछ जानते हैं जिनके कारण हमें नयी दृष्टी मिल सकी |और हम इस परम्परा के और लोगो को तलाशने में कामयाब रहे |चुरहट तहसील है इस लिए यह ग्राम शहर से जुड़ा होने के कारण त्वरित गति से अपनी सांस्कृतिक परम्परा और सामाजिक ढाँचे को खोता जा रहा है जो की इस परम्परा की देन रही है |अगामी कुछ ही सालो में यह कलारूप विलुप्त हो जाएगा |

बघेलखण्ड की गाथा गायन परंपराओ में प्रमुख गाथा परंपरा है बसदेवा गायन यह एक जाति विशेष "बसदेवा द्वारा गायी जाती है जो बघेलखण्ड के जमुआर, चुरहट (भटहा) बैकुण्ठपुर (रीवा) खडडी (नवानगर) पिपराही (सीतापुर) आदि जगहो पर निवासरत है | बसदेवा का सीधा अर्थ बासदेव से है | बासदेव कुए की जगत पर उगने वाले पीपल के वृक्ष को कहते है | बासदेव इसी पीपल के वृक्ष को अपना पूर्वज मानते है | बसदेवा एक दूसरा सम्बंध यदुवंशी राजा कृष्ण के पिता से भी बताते हैं | इनकी उत्पत्ति के संबंध मे लोक मिथक है की ये चक्रवर्ती सम्राट राजा दशरथ के काल के हैं | श्रवण कुमार उन्ही दिनो अपने बूढ़े माँ –बाप को तीर्थ यात्रा पर ले जा रहे थे | रात का वक्त हो चला था मॉ-बाप के कहने पर वो घनघोर जंगल मे ही विश्राम के लिए रूक जाते है | कुछ देर बाद वहा उन्हे एक बच्चे के रोने की आवाज सुनाई देती है | मॉ-बाप के कहने पर वो बच्चे की तरफ जाते है | वो देखते है कि पीपल के पेड़ के नीचे एक बालक पड़ा है और आस-पास कोई नही है | बच्चे को उठा कर कुछ देर तक आस-पास उसके मॉ-बाप को आवाज देते है जब कोई नही दिखता तब वो उसे अपने साथ रख लेते है | उसे उन्होने बासदेव पीपल के पेड़ के नीचे से उठाया था इसलिए उसका नाम बासदेव रख दिया | धीरे-धीरे दिन बीतते गये एक दिन वो अयोध्या के वनो की तरफ जाते है और वही दशरथ के शब्दभेदी बाण द्वारा श्रवण कुमार की मत्यु हो जाती है और वह बालक अकेला हो जाता है | तब से वह छोटा बालक श्रवण कुमार की दारूण गाथा को गा-गाकर अपना भरण-पोषण करने

लगा | कालांतर में इसी परंपरा में शामिल होने वाले व उस बासदेव के वंशज बसदेवा कहलाये एवं उनके द्वारा गायी जाने वाली गायन शैली को बसदेवा कहा जाने लगा |

बासदेव परम्परा की गायकी भारत के किसी अन्य राज्य में नहीं पाई जाती छत्तीसगढ़ सीमावर्ती राज्य को छोड़कर | बघेलखंड के बासदेव भिच्छाटन के लिए निकले और छत्तीसगढ़ राज्य के रायपुर ,बिलासपुर के कुछ गाँवों में निवास करने लगे |यंहा इनकी बड़ी आबादी है लेकिन आबादी का १० प्रतिशत ही आज अपनी कलारूप से जुड़ा हुआ है उसका गायन करता हैं |बाकी का समुदाय रोज़गार में लगा हुआ है | बघेलखंड में उपरोक्त ग्रामो में बासदेव जाति के लोग निवासरत हैं जिनके लोक कलारूप आज विलुप्तता की कगार पर हैं |

हरबोले बनाम बासदेव

बघेलखंड के तरह छत्तीसगढ़ व बुंदेलखण्ड-सागर के आस-पास हरबोले नामक परंपरा है जो भी बासदेवा की तरह श्रवण कुमार की कथा कहते है | वो भी भोर के वक्त गीत गाना शुरू करते है| लेकिन बसदेवा पंरपरा की तरह वो घर-घर जाकर गीत नही गाते बल्कि वो पेड़ पर चढ़ कर गीत गाना शुरू करते है| ये चिल्ला-चिल्ला कर गीत गाया करते है,तब गांव के सभी लोग उसे भिच्छा दे दे कर उसे पेड़ से उतरने की मिन्नत करते है | तब हरबोले उतरकर अपने डेरे पर चले जाते है वो इनकी गायन पंरपरा,गायन शैली व बोल में सिंफ हर गंगे और हरबोलो में अंतर है| बसदेवा गीत के प्रत्येक दोहे के अंत में हरगंगे और हरबोले, हरिबालो की ठेक लेते है | संभवत: हरबोले परंपरा की ही कालांतर में यात्रा के दौरान भौगोलिक परिवेश बदलने के कारण स्थानीयता प्रभाव से वर्तमान 'हरबोले परंपरा' के रूप में विकसित हुआ होगा। हरबोले परम्परा में गायकों का प्रमुख वाद्ययंत्र - पैंजना, खंजनी(खुटखुटी), सारंगी आदि होता है वहीं ये गेरूआ रंग का कुंता धोती व सिर पर पागा पहनते हैं जिस पागा में कृष्ण-राधा या राम लक्ष्मण की पीतल की मूर्ति लगी होती है।

6.योजना के प्रस्तावित सांस्कृतिक विरासत / परम्परा की पहचान एवं उसकी परिभाषा व् विवरण

1.मौखिक परम्पराए एवं अभिव्यक्तियाँ (भाषा इनमे आमूर्त सांस्कृतिक विरासत के एक वाहक के रूप में है)

2.प्रदर्शनकारी कलाएं

3.सामाजिक रीति–रिवाज़ ,प्रथाएं ,चलन,परम्परा,संस्कार एवं उत्सव आदि

4.प्रकृति एवं जीव जगत के बारे में ज्ञान एवं परिपाटी व अनुशीलन प्रथाए

5.पारम्परिक शिल्पकारिता

6.अन्यान्य

मौखिक परम्परा – बसदेवा गाथा गायन परम्परा एक शैली विशेष है जिसके अंतर्गत विभिन्न तरह के गाथाएँ गायी जाती हैं |यदि हम इसकी मौखिक परम्परा के कलारूपो की बात करे तो बसदेवा के आलावा अन्य कलारूप भी हैं जो जनमानस में प्रचलित और सराहनीय हैं |
मौखिक परम्परा में गीतों और कहावतो के पीछे चल रहे कथानको का विशेष महत्व है |हर कहावत का एक अपना कथ्य है जो कालांतर समय के बदलते हुए अब जनमानस से विलुप्त से हो गये हैं |

- भरथरी गाथा गायन
- निर्गुण भजन
- ढोला म्हारू गाथा गायन
- संस्कार गीत
- ऋतू गीत
- अनुष्ठानिक गीत
- कृषि कहावते

प्रदर्शनकारी कलाएं-प्रदर्शनकारी लोक कला रूपों की बात यदि बसदेवा जाति की करे तो इस जाति में बसदेवा शैली के अलावा अन्य दूसरे समुदाय जैसे भरथरी और यादवो की गाथा गायन शैली भी इनमे देखने को मिलती है |हम इस जाति कि शैलीगत कथा ,गाथा रूपों की बत करे तो निम्न कलारूप प्रदर्शन कारी कलारूप हैं-

1- सरवन गाथा
2- हरिश्चंद्र गाथा
3- मोरध्वज गाथा
4- भार्तिहरी गाथा
5- मोती कुवर गाथा
6- कृष्ण लीला

7- सती अनुसुइया

8- राम वनवास

9- कबीर की उलट बसिया

10-नल दयमन्ती

11-केवट प्रसंग

12-शिव विवाह

13-ढोला म्हारू

14-भरथरी गाथा गायन

15-यादवो की गाथा गायन शैलियाँ

3.सामाजिक रीति-रिवाज़ ,प्रथायें ,चलन ,परम्परा ,संस्कार एवं उत्सव-

- **रीति-रिवाज़** – इस परम्परा का निर्वहन करने वाला समुदाय बसदेवा कहलाता हैं इनके यंहा अन्य जातियों की ही तरह ही सामाजिक रीति रिवाज़ हैं साथ ही कुछ भिन्न तरह की जो विशेषताए हैं वही इन्हें बाकी जातियों से अलग करती हैं जैसे –

१.विवाह ब्राम्हणों द्वारा सम्पन्न कराया जाता है|

२.प्रेम विवाह पूर्व से ही प्रचलन में रहा है|

३.अन्य जातियों में लडकी के यंहा लडकी का पिता भोजन नहीं करता लेकिन इस समुदाय के लोग करते हैं|

४.मृत्यु पर मृत्यु संस्कार गीत गाने की परम्परा है|

५.दहेज़ प्रथा का बहिष्कार है|

६.स्त्री पुरुष सम्यक रूप से हर क्षेत्र में कार्य करते हैं|

७.बलि प्रथा

८.जोगी वस्त्र पहनना

९.जादू

१०.टोना-टोटके पर विश्वास

११.बहुविवाह प्रथा |

१२.स्थानीय देव पूजन

१३.वैदिक रीति के आधार पर ही संस्कारों का पालन

१४.मृत्यु के दशवे दिन शुद्ध क्रिया ,स्नान तथा पिंडदान

१५.अतिथि देवो भव की परम्परा

१६.जय गंगा कहकर जोहार करने की परम्परा

१७.अपने गोत्र में ही विवाह करने की रीति

१८.प्रेम विवाह मान्य
१९.स्त्री –पुरुषो में समानता

संस्कार – अन्य जातियों की तरह बसदेवा जाति व समुदाय के लोगो में भी प्रचलित १६ संस्कारों के निर्वहन करने की परम्परा है | जिनमे तीन प्रमुख संस्कार हैं इन्ही में से अन्य संस्कार भी मौजूद हैं या यूँ कहे की उपसंस्कार हैं |

जन्म संस्कार
विवाह संस्कार
मृत्यु संस्कार

इन सारे संस्कारों की निर्वहन की अलग अलग परम्पराए एवं नियम हैं जो जातीय परम्परागत रूप से कुछ क्षेत्रो में आज भी मौजूद हैं |

उत्सव – बसदेवा जाति के जातिगत उत्सव की बात करे तो पूरे वर्ष में निम्नलिखित उत्सव ये अपने जातीय विशेषताओं के साथ सम्पन्न करते है |

बासदेव महाराज एवं शारदा देवी पूजन उत्सव
खजूलइयाँ
होली
हरियरी
दीवाली
नागपंचमी
हरछठ
तीजा
कृष्ण जन्माष्टमी
दुर्गा पूजन
मकर संक्रांति

4.प्रकृति एवं जीव जगत के बारे में ज्ञान एवं परिपाटी व अनुशीलन प्रथाएं – चिन्हित कला रूप बसदेवा समुदाय के तमाम प्रकृति से सम्बंधित जानकारिया इनके मौखिक कला रूपों में सुनने को मिल जाते हैं साथ ही साथ इनके रहन-सहन व नित्य जीवन शैली को देख कर हम यह समझ सकते हैं कि इनका प्रकृति के प्रति कितना लगाव आस्था एवं ज्ञान की परिपाटी से जुड़ाव रहा है | उदाहरण के लिए हम चिन्हित कला रूपों के जातीय कहावतो ,मुहावरों व अन्य तमाम मौखिक परम्पराओं को समझते हैं जो निम्न लिखित हैं |

श्रवण गाथा – बसदेवा गाथा गायन परम्परा में जो श्रवण कुमार की गाथा कही जाती है वो पौराणिक कथाओं से अलग है | इतिहास में जो श्रवण कुमार की कथा मिलती है इसमें मत श्रवण कुमार की पत्नी को पतिव्रता स्त्री के रूप में प्रस्तुत करता है | और लोक में प्रचलित अन्य

कथाएं भी श्रवन कुमार की पत्नी को सास-ससुर की सेवा करने वाली बताया गया है | कुछ कथाओ में तो श्रवण कुमार की पत्नी को तो सीता हरन के वक्त रावण से लड़ने वाली जटायु को श्रवण कुमार की पत्नी कहा गया है | वंही बसदेवा गाथा गायन परम्परा में श्रवण कुमार की पत्नी को कुलटा ,चंडाल और अपने सास -ससुर को कष्ट देने वाली कहा गया है समाज उसे शाप देता है की अगले जन्म में तुम चमगादड़ बन कर उलटा लटकती रहोगी | इसके अलावा इस गाथा गायन परम्परा में माँ-बाप के सेवा ,सेवा फल और एक लायक बेटा बनने की बात कही गयी है जो की न माँ-बाप के लिए बल्कि आगे आने वाले सम्पूर्ण समाज की दिशा प्रदान करता रहेगा | इस गाथा गायन में मानव मूल्यों का उत्कृष्ट रूप देखने को मिलता है |ये पंक्तियाँ गौर से समझने लायक हैं –

"राम नाम का लय ला नाम ,जब लेबा भगवनके नाम |
तब होई पूरन सब काम जय गंगे ||
एक ठे सरबन बेटा रहयं माई बाप के सेवा करयं |
कर सेबा दुनिया से तरयं जय गंगे ||
घर मा रहय कुलक्षिन नारि सास -ससुर का गारी देय |
मरय बुढ़उना जिउ के काल जय गंगा ||"

हरिश्चन्द्र गाथा – देश की तमाम गाथा गायन परम्पराओं में राजा हरिश्चन्द्र की दानशीलता और संघर्ष की कथा सुनने को मिलती है | वंही जब हम बघेलखंड के बसदेवा गायन शैली के अंतर्गत हरिश्चन्द्र की गाथा सुनते हैं तो यंहा कथा को छोटा कर दिया जाता है और उसके मूल रूप को प्रयोगिक रूप में प्रस्तुत करती है | राजा हरिश्चन्द्र की दानशीलता अपने वचन के मातहत लाख यातनाओं को ढोना आज का समाज जो अब निर्मित हो रहा है वो कहता है की यह उस ज़माने की बात है अब बहुत कुछ बदल गया है हम अपने वचन पर कायम न रहे तो ज़्यादा बेहतर होगा |यंहा समाज या लिखित साहित्य तो चुप है लेकिन लोक मुखर हो उठता है और साफ़-साफ़ लब्जो में कह देता है की लोग अपनी पुरानी परम्परा का अनुसरण करने में अपनी बेईज्जती मानते है यही कारण है एसा फरेबी ,धोकाधड़ी वाला समाज हमारे सामने अपार पहाड़ की तरह खड़ा हो गया है जिसके आगे हम सब खुद को असक्षम पा रहे हैं |इस गाथा गायन परम्परा की कुछ पंक्तियाँ जो की ज्ञान परिपाटी की मिसाल हैं-

" का कही राजा न कहि जाय,रोहित बेटा खत्म भयें हां |
पिता जलाबय का जघा दा जय गंगे||
बोलयं राजा करय ज़वाब ,रानी पहिले नेग चार दइदा |
फेर चिता जलाबय के जाघा देब जय गंगे ||
बोलय रानी करयं ज़वाब रोहित बेटा तोंहरय आय |

हम तोंहरय ता परानी आहन जय गंगे ||
हम तोंहरय ता परानी आहन,हमसे नेग चार न ला |
बोलय राजा करयं ज़वाब कब तू रानी रहिउ हमार जय गंगे ||"

निर्गुण भजन – निर्गुण भजन गायन परम्परा में कबीर की उलटबासियो के अलावा लोक की मौखिक परम्परा के बहुत से मृत्यु संस्कार के उपरान्त गाये जाने वाले गीत भी शामिल हैं | इन गीतों में प्रक्रति, मानव जीवन सार ,प्राणी मात्र के प्रति सहानुभूति की बात स्पष्ट होती है जो इन पंक्तियों में देखने को मिलती है

"राम नगरिया राम की बसी गंग के तीर |
अटल राज महाराज की जे पर चौकी दीन ||
गुरू ने पठाया चेला पांच चीज़ लाना, रे चेला पांच चीज़ लाना |
पहिली भिच्छा अन्न लय आना गाँव नगर के पास न जाना |
घरबा बस्ती छोड़ के चेला झोली भर के लाना गुरु ने पठाया ||
दुसरी भिच्छा लकड़ी लय आना, पेड़ वृक्ष के पास न जाना |
वन पर्वत का छोड़ के चेला गट्ठर बाँध के लाना गुरू न्र पठाया ||
तिसरी भिच्छा जल लय आना, कुआं बाउलीके पास न जाना |
नदी ,तलरिया ,नरबा छोड़ के कमंडल भर के लाना गुरू ने पठाया ||
चउथी भिच्छा आग लय आना चुल्हा ,भट्टी के पास न जाना |
धुइनी ,माचिस छोड़ के खप्पड़ भर के लाना गुरू ने पठाया ||
धुंआ उड़ाते आना रे चेला धक धक करते आना |
पंचवी भिच्छा मांस लय आना जीव जन्तु के पास न जाना|
ज़िंदा,मुर्दा छोड़ के चेला शेर भर तू लाना गुरू ने पठाया चेला
नियत न गंवाना चेला झोली भर के लाना||"

मोरध्वज गाथा – इस गाथा गायन परम्परा में मोरध्वज का अपने वचन पालन के लिए अपने पुत्र का मांस तक पका देना यह आज के परिवेश के हिसाब से ठीक नहीं और कभी नहीं रहा होगा | लेकिन यह बात भी सत्य है की प्रजा के समक्ष राजा को राजा की परिभाषा के दायरे में रहना उसकी सत्यता की पहचान है और आज भी यह ज़रूरी है लेकिन आज का समाज और उसे चलाने वाले जनप्रतिनिधि अपनी सत्यता से दूर भागते जा रहे हैं इस स्थिति में किस तरह का समाज निर्मित हो रहा है यह हमारे सामने ही है |यह गाथा गायन परम्परा हमें अतीत की और नहीं बुलाती लेकिन हमे अतीत से सीखने को ज़रूर कहती है |

"मोरध्वज एक राजा रहे ,बड़ा दानिया राजा रहे |

दानी-दानी दुनिया कहय ,ओनखे बराबर नहीं आय दानी जय गंगे ||
तब बोलयं विष्णु भगवान ,सुनिला अर्जुन हमार बाति |
मोरध्वज एक राजा हमा ,चला परीक्षा लेई ओनखर जय गंगे ||
विष्णु भगवान साधू बनि जाय ,अर्जुन वीर शेर बनि जांय |
साधू, शेर दूनउ पहुंचे जांय मोरध्वज के द्वारे मा जय गंगे||"

कृष्ण गाथा – बसदेवा गाथा गायन परम्परा के अंतर्गत तमाम लोक में प्रचलित कथाओं का गायन किया जाता है |उन कथाओं में से कृष्ण कथा का गायन भी प्रमुख है जो की बसदेवा शैली अंतर्गत ही है | कृष्ण कथा के बहुत से अंश इस गाथा गायन परम्परा के अंतर्गत है लेकिन मै अभी कालिया दह की कथा के ज्ञान परिपाटी जो की बसदेवा अगेन शैली में नये प्रयोगों और मीमांसा के साथ प्रस्तुत होती है –

"धन्य धन्य हो किसिन महाराज जो लेई किसना के नाउ |
तरी जई ऊ भव सागर पार जय गंगा ||
हंसिके बोलय कनइया राज सुनि ला जसोदा बाटी हमार |
हमका जय दा खेलन माय जय गंगा ||
कलिया दह हम खेलय जाब अउर चराउब जमुना गाय |
माया सुनि ला बाति हमार जय गंगा ||
लाला कलिया दह मा काला नाग उंहा न जा तू खेलय लाल |
जमुना नहीं चराबा गाय जय गंगा ||
माया मोरइ बनायी दुनिया आय मोरइ रचाई दुनिया आय |
हमका केहू के डेरी नही आय ||"

5.पारम्परिक शिल्पकारिता –चिन्हित कलारूप के जातीय शिल्पकारिता की बात करे तो हमें बसदेवा जाति में देखने को मिलती हैं | लेकिन हम यह नहीं कह सकते की यह इनका पारम्परिक कार्य है ये लगभग इन्ही २५-30 सालो में जब समाज ने इनके कला रूप की कद्र करनी छोड़ दी और पुराने रीति की तरह ये झोपड़ियो में रहना गांव-गाँव भटकना छोड़ रहे थे ऐसे में इन्हें स्थिर रहकर कुछ रोज़गार के साधन तो ढूढने थे ऐसे में उन्होंने यह शिल्पकारिता करनी शुरू की छत्तीसगढ़ रायपुर में निवासरत बसदेवा इसके जीवंत उदाहरण हैं | जिनकी चर्चा हम क्रमशः निम्न रूप से कर रहे हैं –

१.वाद्ययन्त्रो का स्वतः निर्माण
२.जूट,पटसन की बुनाई और उस पर कढाई

7.योजना के प्रस्तावित सांस्कृतिक विरासत/परम्परा का एक रुचिपूर्ण सारगर्भित संक्षिप्त परिचय दें |

-:सारगर्भित संक्षिप्त परिचय -:

बसदेवा गाथा गायन परंपरा बघेलखण्ड, बुंदेलखंड, मध्यप्रदेश व सीमावर्ती छत्तीसगढ़ की गाथा गायन परंपरा है | मध्यप्रदेश के उत्तरपूर्वी भाग में बघेलखंड अंचल स्थिति है, इसके अंतर्गत सीधी, रीवा, अनूपपुर, सिंगरौली, शहडोल, सतना, उमरिया, उत्तरप्रदेश का सोनभद्र जिला व साथ ही पूर्वी इलाहबाद का क्षेत्र शामिल है| बसदेवा गायन यह एक जाति विशेष "बसदेवा द्वारा गायी जाती है जो बघेलखण्ड के जमुआर, चुरहट (भटहा) बैंकुण्ठपुर (रीवा) खडडी (नवानगर) पिपराही (सीतापुर) आदि जगहो पर निवासरत है | बसदेवा का सीधा अर्थ बासदेव से है | बासदेव कुए की जगत पर उगने वाले पीपल के वृक्ष को कहते है | बासदेव इसी पीपल के वृक्ष को अपना पूर्वज मानते है | बसदेवा एक दूसरा सम्बंध यदुवंशी राजा कृष्ण के पिता से भी बताते हैं | इनकी उत्पत्ति के संबंध मे लोक मिथ्य है कि ये चक्रवर्ती सम्राट राजा दशरथ के काल के हैं | श्रवण कुमार जिन दिनो अपने बूढ़े माँ –बाप को तीर्थ यात्रा पर ले जा रहे थे उसी समय तीर्थ यात्रा के दौरान एक दिन वो घनघोर जंगल मे ही मॉ-बाप के कहने पर वो घनघोर जंगल मे ही विश्राम के लिए रूक जाते है | कुछ देर बाद वहा उन्हे एक बच्चे के रोने की आवाज सुनाई देती है | मॉ-बाप के कहने पर वो बच्चे की तरफ जाते है | वो देखते है कि पीपल के पेड़ के नीचे एक बालक पड़ा है और आस-पास कोई नही है | बच्चे को उठा कर कुछ देर तक आस-पास उसके मॉ-बाप को आवाज देते है जब कोई नही दिखता तब वो उसे अपने साथ रख लेते है | उसे उन्होने बासदेव पीपल के पेड़ के नीचे से उठाया था इसलिए उसका नाम बासदेव रख दिया | धीरे-धीरे दिन बीतते गये एक दिन वो अयोध्या के वनो की तरफ जाते है और वही दशरथ के शब्दभेदी बाण द्वारा श्रवण कुमार की मत्यु हो जाती है और वह बालक अकेला हो जाता है | तब से वह छोटा बालक श्रवण कुमार की दारूण गाथा को गा-गाकर अपना भरण-पोषण करने लगा | कालांतर में इसी परंपरा में मिल होने वाले व उस बासदेव के वंशज बसदेवा कहलाये एवं उनके द्वारा गायी जाने वाली गायन शैली को बसदेवा गायन कहा जाने लगा |

एक और किंवदन्ती के अनुसार यह बासदेव परंपरा के लोग यदुवंशी राजा बासदेव के वंशज है | महाभारत युद्ध के पश्चात कृष्ण ने स्वयं अपने पूरे वंश का विनाश कर दिया,लेकिन राधा के वंश परंपरा के लोग कृष्ण के इंतजार में रहे | वो उनके गीत गाते और कृष्ण और राधा की मूर्ति सिर पर बांध कर प्रेम विरह गीत गा-गाकर भिच्छाटन का कार्य करने लगे | वो अपने आप को राधा कृष्ण के अनुचर मानते थे | कृष्ण पुरूष प्रधान होने के कारण वो अपने आप को बासदेव से जोड़ने लगे | यह बासदेव यदुवंशी पंरपरा के लोग हो सकते है लेकिन कृष्ण-

राधा की मूर्ति सिर पर पागा में बाधने का चलन कृष्ण-राधा के प्रेम प्रसंग को ख्याति मिलने के बाद ही शुरू हुआ होगा |

कहा जाता है कि वो कृष्ण की तरह मोर पंख भी बांधा करते थे | लोक में मूल रूप से बसदेवा गायन भोर के ऊषा प्रभात के आस-पास से शुरू होता है | जैसे ही पूर्व में सूरज की लाली छिटकती है| बसदेवा अपने-अपने झोपड़ियो में प्रवेश कर जाते है | बसदेवा एक जगह स्थाई रूप से घर बनाकर निवास करते है भिच्छाटन के लिए ठंड के चार महीनों को वो उपयुक्त समझते है | इन चार महीनो में वो अपने पूरे परिवार के साथ घर में ताला लगा कर बाहर निकल जाते है | किसी अन्य दूर गॉव मे अपना डेरा डालते है फिर वहॉ से आस-पास के सभी गावों में भिच्छाटन करते है इसके बाद फिर कही और डेरा डाल दूसरी अन्य जगहो पर भिच्छाटन आरम्भ करते है | सुबह 3 बजे के आस-पास वो अपने डेरे से निकल कर भिच्छाटन करने जाते है | वो मुख्य रूप से श्रवण कुमार की कथा गा-गा कर सुनाते है | गायन के वक्त उनके हाथ में वाद्ययंत्र् के रूप में मात्र् पैजना और खुट-खुटी खड़ताल रहता है | सिर पर राधा-कृष्ण की व शंकर-पार्वती की मुकुट रहती है | गेरूआ रंग की कुर्ता-धोती और सर पर चमकीले-गेरूये कलर में सिर पर पागा | यह अलग तरह का पागा है | पागा के साथ-साथ चुन्नटदार एक कपड़ा पागा से जुड़ा होता है | जिस पर पीतल की मूर्तिया बांधी जाती है | कालांतर मे इस गाथा गायन परंपरा मे अन्य लोक नायकों / देवताओं की कथाएँ गायी जाने लगीं | बासदेव ठंड के दिनों में घर-घर जाकर श्रवण कुमार की कथा कहते है बदले में भिच्छा प्राप्त कर दिन निकलने से पहले वापस झोपड़ी में आ जाते हैं | लोक मिथ्य है की दिन निकलने के बाद इन्हे देखना अशुभ है | अब बासदेव परंपरा के लोग भिच्छाटन गायन के अलावा तरह-तरह के काम धंधे करने लगे है | जैसे छत्तीसगढ़ में पाई जाने वाली बसदेवा जाति के लोग जूट-पटसन के थैले बनाते है और कुछ लोग अब भी गायन परंपरा से जुड़े है| इनके वाद्ययंत्रों की बात करे तो मूल रूप से खुटखुटी और पैंजना ही वाद्ययंत्र् है,लेकिन भिच्छाटन को मजबूती प्रदान करने के लिये इन्होने अपनी गायन शैली में थोड़ा बदलाव किया और ये निर्गुण भजनेां को सारंगी के साथ गाने लगे| निर्गुण भजनों में कबीर की उलटवांसिया प्रमुख है|

बसदेवा कृष्ण की पंरपरा से भी संबध रखते हैं | लोक में एक बार और वो कृष्ण के प्रेम प्रंसगो का सहारा लेते है | वो कहते है कि- कृष्ण एक बसोर(बांस का बर्तन बनाने वाले जाति विशेष की लड़की से प्रेम करते थे)प्रेम प्रसंग शारिरिक संबध तक पहुच चुका था | ऐसे में लोक-लाज को ध्यान में रखते हुए बसोर कन्या ने कृष्ण के समक्ष विवाह का प्रस्ताव रखा,लेकिन कृष्ण ने विवाह के लिए हां नही की बल्कि यह सांत्वना दी की हमारा तुम्हारा प्रेम लोक में अमर रहेगा | कृष्ण ने कहा की हम तुम्हें अपने होठो से लगा के रखेगें और तब से वो बासुरी के रूप में उसे स्वीकार करते है | बासुरी का संबध वो बसोर जाति के जातिगत कार्य

बांस के बर्तन बनाने से करते है | बघेलखंड मे विरह गीत हिंदुली की कथावस्तु भी एक राजकुंवर और बसोर की लड़की से प्रेम व विरह की कथा कहती है | कहा जाता है कि- इसी बसोर की वंश परंपरा व उसकी विरह कथा को गाकर कहने वाले लोग बासदेव की परंपरा में शामिल है | वहीं यह सिर पर मुकुट बांधने को महाराजा उग्रसेन के वंश पुत्र् बासदेव के मुकुट पहनने से स्वीकारते है | वो कहते है कि हमारे पूर्वज बासदेव मुकुट पहना करते थे,राजवंश खत्म होने के बाद हम गायक दलो ने इस परंपरा को अपने बीच जीवित रखा है |

बसदेवा गाथा गायन एक अत्यंत समृद्धशाली मौखिक परंपरा है। जैसा की ऊपर कहा गया है बसदेवा गाथा गायन आगे चलकर एक गायन परंपरा के रूप में स्थापित हुई जिसमें अन्य लोक नायकों/देवताओं की गाथा गायी जाने लगी। वर्तमान में इस शैली के अंतर्गत निम्न लोक नायकों/देवताओं की गाथा गायन भी की जाती है |जो निम्नवत हैं –

1- सरवन गाथा
2- हरिश्चंद्र गाथा
3- मोरध्वज गाथा
4- भार्तिहरी गाथा
5- मोती कुवर गाथा
6- कृष्ण लीला
7- सती अनुसुइया
8- राम वनवास
9- कबीर की उलट बसिया
10-नल दयमन्ती
11-केवट प्रसंग
12-शिव विवाह
13-ढोला म्हारू
14-भरथरी गाथा गायन

बसदेवा गाथा गायन परंपरा का प्रदर्शन पक्ष - यह परंपरा मूल रूप से गायिकी प्रधान है परन्तु साथ ही साथ इसमे अभिनय पक्ष भी उतना ही मजबूत नजर आता है जितना की गायिकी पक्ष |इसका मुख्य गायक गाते हुए अभिनय करता है | इसका कारण कही भी यह अरुचिपूर्ण या ऊबाऊ नहीं प्रतीत होता यह इसके प्रदर्शन पक्ष की विशेषता है |

बसदेवा गाथा गायन परंपरा का सामाजिक प्रथा - बसदेवा गाथा गायन परंपरा का अपना ऐतिहासिक महत्त्व है | बसदेवा एक जाति विशेष है जो यदुवंशी कृष्ण के वंशज है श्रवण के मृत्यु के पश्चात् ये श्रवण कि वेदना पूर्ण कथा घर –घर सुनाने लगे | कहा जाता है की - यह

श्रापित जाति है जो अलस्सुबह उठकर घर-घर जा कर गायन करते है और सूरज उगने से पहले ही अपने ठिकाने की ओर लौट आते है यह प्रथा अब धीरे धीरे बंद होती जा रही है लेकिन गायन आज भी जस का तस उन्ही परम्पराओ के नक़्शे कदम पर चला आ रहा है |

बसदेवा गाथा गायन परंपरा का दार्शनिक पक्ष – इस गाथा गायन परंपरा के लोग पुरातन से श्रवण कुमार की गाथा को गाते चले आ रहे है | बसदेवा पीपल के वृक्ष के नीचे मिला बालक था जिसे श्रवण कुमार ने पाला बसदेवा कृष्ण के प्रेम प्रसंग मोर मुकुट पहनने बासुरी को होठो पर हमेशा रखने वाले गूढ़ रहस्यों को उद्घाटित करता है |यह महाभारत काल में हुए भीषण नरसंहार के बाद उपजे प्रकृति के असंतुलन की बात करता है यह राधा के विरह स्वरूप उपजे विशेष लोग है जिन्होंने बाद में अपना एक स्वतन्त्र समाज निर्मित किया |

8.योजना के प्रस्तावित सांस्कृतिक विरासत /परम्परा के तत्वों के अभ्यासी व्यक्ति कौन है ? क्या इन व्यक्तियों की कोई विशेष भूमिका है या कोई विशेष दायित्व है इस परम्परा और कथा के अभ्याश एवं अगली पीढी को संचरण के निमित्त ?अगर है तो वो कौन है और उनका दायित्व क्या है ?

-:योजना के प्रस्तावित सांस्कृतिक विरासत / परम्परा के तत्वों के अधिकारी व्यक्ति और अभ्यासी निम्नवत हैं |

१.अनूप लाल बसदेवा –बसदेवा गाथा गायन परम्परा के लोक प्रसिद्द कलाकार जो की अब रास्ट्रीय स्तर पर ख्याति प्राप्त कलाकार भी हैं |इन्होने बसदेवा गायन परम्परा के लिए अब तक कई रास्ट्रीय ,राज्यीय स्तर के आयोजनों में अपनी सराहनीय प्रस्तुतियां दी हैं और विलुप्त होती इस गायन शैली को पुनर्जीवन दिया हैं |अनूप लाल जी ने प्रस्तुतियों के आलावा ऐसे ग्रामो में निवास कर रहे बसदेवा जाति के कलाकार जो की अपनी परम्परा को पूर्णरूपेण भूल चुके थे उनमे पुनः एक नया जोश भर दिया हैं और वो अब प्रस्तुतियों के लिए व्यस्ततम जीवन से समय निकाल अपनी परपरा के प्रति सजग हो गए हैं |अनूप लाल जी ने परम्परा से जुड़े उन तमाम लोगो तक पहुचाया जिनसे की हमे बसदेवा जाति के तमाम निवास स्थानों का पत्ता चल सका |

२.मोतीलाल बसदेवा – ये आज भी अपनी परम्परा को बनाये हैं जबकि उन्ही का मानना है की समाज बदल चुका है अब वो भिच्छाटन वाला समाज नहीं रहा जिससे की बसदेवा जाति का जीवन यापन होता था | लेकिन मोती लाल जी आज भी भिच्छाटन के माध्यम से ही अपनी जीविका चलाते हैं |

३.रामगोपाल बसदेवा –ये अपनी परम्परा के अच्छे जानकार और गायक हैं | ये भी भिच्छाटन का कार्य करते हैं | ठंड के दिनों में ये भिच्छाटन करने के उद्देश्य से सीमावर्ती राज्य

छत्तीसगढ़ तक चले जाते हैं | यह बडी बात है कि इन लोगो ने अब घुमंतू और भिच्छाटन परम्परा को बचा कर रखा है |असंतोष है तो इस बात का कि अब वो लोग नहीं रहे ,वो समाज नहीं रहा ,जो हमारी गायन परम्परा को सुनता था सम्मान करता था |और शायद यह असंतोष ठीक भी है समाज की बात ही छोडिये जो सरकार लोक कलारूपो को बचाने में करोणों रुपये खर्च कर रही है वो भी अभी तक सही मायने में इन तक पहुँच नहीं पायी |यदि पहुँची भी तो शायद शक्रिय तब होगी जब सब विलुप्त हो जाएगा | यह असंतोष आज इस समाज की परम्परा को इस छवि को धूमिल कर रहा है |

४.संतोष बसदेवा –ये इस गायन परम्परा के नवोदित गायक कलाकार हैं |

५.गैंबी प्रसाद बसदेवा –ये अब वैसे भिच्छाटन का कार्य छोड़ चुके हैं या दूसरे शब्दों में कहें तो ये भूल चुके हैं की इनकी यह परम्परा रही है कभी लेकिन इन्हें अब भी सारी गाथा गायन कथाये अब भी कंठस्थ है |

६.विवेक बसदेवा –ये भी इस गाथा गायन परम्परा के नवोदित कलाकार हैं |

७.लल्लू बसदेवा –वैसे बसदेवा गाथा गायन परम्परा समुदाय ने आने वाली नयी पीढी को सिखाना ही बंद कर दिया , या कहे की नयी पढ़ी ने सीखना ही छोड़ दिया | लेकिन इन्होने आज भी उस परम्परा को बचाकर रखा | वो अपनी परम्परा से प्रेम करते हैं या बेरोजगारी की मजबूरी ने उनके बच्चो को भी भिच्छाटन पर मजबूर कर दिया है | कारण कोई भी हो लेकिन इनकी सहमती के कारण ही इनके बच्चे इस कलारूप को सीख सके हैं और इस परम्परा की गायकी करते हैं |

८.जीतेंद्र बसदेवा –ये भी इस परम्परा के नवोदित कलाकार हैं और भिच्छाटन कर अपनी जीविका चलाते हैं |

९.ज्ञान और हुनर /कुशलता का वर्तमान में संचारित तत्वों के साथ क्या अंतर सम्बन्ध है ?

-:यदि हम चयनित कलारूप बसदेवा गाथा गायन परम्परा की ज्ञान परिपाटी का आज के परिवेश से अंतर सम्बन्ध को देखते हैं तो सर्वप्रथम हम बसदेवा की जातीय सांस्कृतिक विविधताओं और मौखिक परम्परा में बह रहे उस ज्ञान का हर कलारूप के जाति विशेष के आधार पर बात करते हैं | बसदेवा जाति अपने जातिगत शैली गायकी में तमाम लोक नायको,पौराणिक नायको ,एतिहासिक नायको की कथा गायी जाती है |जिसमें छुपी ज्ञान और हुनर /कुशलता का वर्तमान में संचारित तत्वों के साथ अंतर सम्बन्ध को समझते हैं –

1- **सरवन गाथा** –यह मूल रूप से श्रवण कुमार की कथा पर आधारित है कथा राम के सुमिरनी के साथ शुरू होती है और सर्वे भवन्तु सुखिनः के बोल के साथ खत्म होती है |सुमिरनी प्रक्रति की होती है और अंततः प्रकृति की कुशलता का भाव समेटती कथा

अनंत की और विलीन हो जाती है |कथा में श्रवण कुमार का माँ -बाप के प्रति अपार स्नेह ,उन्हें तीर्थ यात्रा के लिए कम्मर में लेकर निकलना ,श्रवण कुमार की असमय मृत्यु ,दसरथ का शापित होना ,राम का वनवास जाना ,और दशरथ की मृत्यु पर यह कथा विराम लेती है |यह कथा कहने को तो शरवन कुमार की है लेकिन शाप और दसरथ ये दोनों प्रक्रति के संतुलन को बनाये रखते हैं |इस कथा को गाने वाला आज भी सैकड़ो दर्शको को यह कथाः कह कर भावुक कर देता है पल भर के लिए ही वो मजबूर कर देता है अपने भूले बिसरे माँ -बाप के प्रति स्नेह आने को | यह हुनर ही है जो आज भी समाज में सहृदय संस्कृति को बचाए रख पा रहा है |

2- **हरिश्चंद्र गाथा** - राजा हरिश्चन्द्र की कथा पर आधारित यह गाथा गायन समाज के बदलते स्वरूप पर खेद प्रकट तो करती है | लोकनायक हरिश्चन्द्र की कथा कौन नहीं जानता लेकिन उसका इस जाति के लिए वर्षो से क्या महत्व रहा है और इस जाति ने अपने ज्ञान से समाज को क्या दिया | कहते हैं की ये किसी के भी घर में भोर के वक्त प्रवेश कर जाते थे और कथा गाना शुरू कर देते थे | इनकी गायकी सुन लोग जागते थे और इन्हें भिच्छा दे विदा करते हैं |लेकिन कुछ वर्षो में समाज का रूप इतनी तेज़ी से बदला की बसदेवा डरने लगे की कोई कुछ बुरा भला न कह दे की भोर के वक्त क्यों जगा दिया या आज कल बढ़ती चोरी ने इस परम्परा को वही रोक दिया |ज्ञान तो समाज को नयी दिशा देता ही रहा हैं ,मौखिक रूप से ही इतिहास पुराण की प्रमुख घटनाओं के बारे में परिचित कराता ही रहा है इनके हुनर ने आज के संचारित तत्वों से जो अन्तर्सम्बन्ध बना रखा है –

"तीनउ परानी गएँ बेंचाय,तीनउ का काम दे बताय |
राजि पाठि सब गय हय सिराय जय गंगा |
राजा हरिश्चन्द्र महाराज ओनखे हाथे मा झाडू दिहिन |
पूरा काशी डारा बटोर जय गंगा ||"

3.मोरध्वज गाथा - "मोरध्वज एक राजा रहे ,बड़ा दानिया राजा रहे |
दानी-दानी दुनिया कहय ,ओनखे बराबर नहीं आय दानी जय गंगे ||
तब बोलयं विष्णु भगवान ,सुनिला अर्जुन हमार बाति |
मोरध्वज एक राजा हमा ,चला परीक्षा लेई ओनखर जय गंगे ||
विष्णु भगवान साधू बनि जाय ,अर्जुन वीर शेर बनि जांय |
साधू, शेर दूनउ पहुंचे जांय मोरध्वज के द्वारे मा जय गंगे||
जय रघुनन्दन बोलय अधीर जय हो जय हो मोरध्वज |
तोरे दुआरे एक साधू आयें सिंह शेर द्वारे मा लेहे जय गंगा ||
पडी अनग राजा के कान सोने के गडुआ मा जल भरि लाउ |

साधू जी के चरण पखार जय गंगा ||
चरण धोय चरना मृत लेय गोड धोय राजा पी लेयं |
जनम - जनम के कटिगा पाप जय गंगा ||"

इस गायकी की ख़ास बात यह है की कथाये जो भी रहीं हो यह समुदाय समयानुसार कथाओं में निहित नैतिक तत्त्वों को बदलता रहा है | उपरोक्त कथा की पंक्तियां इसका उदाहरण रही है |

१०. आज वर्तमान में सम्बंधित समुदाय के लिए इन तत्वों का सामाजिक व सांस्कृतिक आयोजन क्या मायने रखता है ?

-: चयनित कलारूप बसदेवा वर्तमान में समुदाय विशेष के आयोजन के लिए तो मायने रखते ही हैं साथ ही अन्य समुदाय के लिए भी इनकी बड़ी उपयोगिता और उस समाज के प्रति सराहनीय कार्य रहा है | बसदेवा गाथा गायन बासदेव जाति का मुक्तिबोध है इस गाथा गायन का आयोजन इस समुदाय के सामाजिक ,सांस्कृतिक विकास के दौड़ में एक अहम भूमिका निभाता है | भूमिका ऐसी की आर्थिक रूप से अभावग्रस्त सामाज को जीवटता प्रदान किये हुए हैं | इसे जीवटता ने इसी जीवन राग ने उन्हें नई दिशा की और सार्थक कर्मो के निमित्त अब तक जोड़े रखा है |बसदेवा कलारूप के समुदाय विशेष जब भी इसका आयोजन करते हैं तो उनमे भविष्य का दर्शन पल रहा होता है |इन आयोजनों ने आज ही नहीं वर्षो पहले से इनके जीवन में संतुलन बनाए रखा है |यही संतुलन उनकी जीवन पद्धति को नए–नए रूपों में अवतरित करती रही है | कुछ लोग तो ये कहते हैं की यह सस्कृति में संक्रमण का दौर है |सच है लेकिन संक्रमण होने के लिए तो कुछ बचा है न | मूल से जुड़े हैं ,अपनी परम्परागत कलारूप को किसी भी हालत में लेकर यंहा पहुंचे तो आज केवल वही समुदाय ही नहीं वरन अन्य समुदाय भी उस आईने में खुद को पहचान पा रहे हैं |

१.अतिथि देवो भव की परम्परा आज हमारे देश से भी जाती रही | इसके क्या परिणाम सामने आये हैं ये हम सब देख ही रहे हैं और आगामी परिणामो के बारे में सोचकर पूरा देश परेशान है | लेकिन बसदेवा गायन परम्परा ने गायन करने वाले समुदाय में इस परम्परा की जड़ को गहरे जमा रखा है |

२.इस नृत्य के आयोजन से एक बड़ी बात यह सामने आ रही है की नई पीढी भी सीख रही है और नये दल भी बन रहे हैं |

३.बसदेवा गाथा गायन का आयोजन उस समुदाय के तमाम संस्कार रूपों को सुचारू रख पाने का माध्यम है | यदि इस तरह का आयोजन होता रहा तो जाति विशेष की सांस्कृतिक चेतना जीवित रहेगी जो समाज देश को नई दिशा प्रदान करेगी|

४.बसदेवा गाथा गायन सामाजिक ,सांस्कृतिक रूप से तो मायने रखता ही है यह गायकी इस जाति के लिए वंही इस जाति का यह महत्वपूर्ण व्यवसाय भी बना हुआ है | भागम-भाग और बेरोजगारी की दुनिया में इस नृत्य परम्परा ने इन्हें थोड़ी राहत प्रदान की है |

११.क्या योजना के प्रस्तावित सांस्कृतिक विरासत /परम्परा के तत्वों में ऐसा कुछ है जिसे प्रतिपादित अंतर्राष्ट्रीय मानव अधिकार के मानको के प्रतिकूल माना जा सकता है ? या फिर जिसे समुदाय ,समूह या फिट व्यक्ति के आपसी सम्मान को ठेस पहुँचती हो या फिर वे उनके स्थायी विकास को बाधित करती हो | क्या प्रस्तावित योजना के तहत या फिर सांस्कृतिक परम्परा में ऐसा कुछ है जो देश के क़ानून या फिर उनसे जुड़े समुदाय के समन्वय को या दूसरो को क्षति पहुंचाती हो ? विवाद खड़ा करती हो ?

-: नहीं एसा कुछ भी नहीं है |

१२.प्रस्तावित सांस्कृतिक विरासत /परम्परा की योजना क्या उससे संबंधित संवाद के लिए पारदर्शिता ,सजगता और प्रोत्साहन को सुनिश्चित करती है ?

-:हां पूर्णरूपेण करती है |

१३.योजना के प्रस्तावित सांस्कृतिक विरासत /परम्परा के तत्वों के संरक्षण के लिए उठाए जाने वाले उपायों/कदमो/प्रयासों के बारे में जानकारी में जो उसको संरक्षित या संवर्धित कर सकते हैं ,

१.औपचारिक एवं अनौपचारिक तरीके से प्रशिक्षण
२.पहचान ,दस्तावेजीकरण एवं शोध
३.रक्षण एवं संरक्षण
४.संवर्धन एवं बढ़ावा
५.पुनरुद्धार /पुनर्जीवन

-:उपरोक्त दिए गए तमाम उपाय ,कदम इस परम्परा को संरक्षित ,संवर्द्धित करने के उद्देश्य से आवश्यक हैं जो की त्वरित रूप से इस कला रूप के संरक्षण हेतु लागू किये जांय|

१४.स्थानीय राज्य एवं रास्ट्रीय स्तर पर योजना के प्रस्तावित सांस्कृतिक विरासत परम्परा के तत्वों के संरक्षण के लिए अधिकारियों ने क्या उपाय किये ? उनका विवरण दें|

-:अब तक इन कलारूपो के संरक्षण के लिए कोई उपाय नहीं किया गया | इन्द्रवती नाटय समिति सीधी द्वारा अब तक इन ग्रामो को चिन्हित कर लोककला ग्राम बनाये गए हैं व स्थानीय स्तर पर इनका मंचीय प्रदर्शन कार्यक्रम करवाया जाता है | साथ ही बसदेवा लोककला रूप को सरकारी स्तर के राष्ट्रीय कार्यक्रमों में प्रस्तुतियां हो चुकी हैं|

१५.योजना के प्रस्तावित सांस्कृतिक विरासत / परम्परा के तत्वों के व्यवहार ,जीवन्तता और भविष्य को क्या खतरे हैं ? वर्तमान परिदृश्य के उपलब्ध साक्ष्यो और सम्बंधित कारणों का व्योरा दे|

-:योजना के प्रस्तावित कलारूप बसदेवा गायन शैली को बचाने के उद्देश्य से यदि अति शीघ्र कोई कदम नहीं उठाया गया तो यह कहना गलत नहीं होगा को आने वाले तीन चार सालो में यह कलारूप पूर्णरूपेण विलुप्त हो जाएगा |जीवन्तता किसी भी कलारूप की हो वो सिर्फ उसके प्रयोग में आने उसके होते रहने से हैं जब उस कलारूप का आयोजन ही नहीं होगा तो वो कितने दिनों तक चलेगा |खासकर बसदेवा गायन जो की मौखिक परम्परा और भिच्छाटन गायन की शैली है |अब समय के चलते इस गाथा गायन की भिच्छाटन शैली तो जाती रही ,इसका भविष्य तो मात्र इस कलारूप के कलाकारों को भारत सरकार के स्तर पर ही अगली पीढी में इसके रूप को बने रहने के लिए कार्य करना कारगर होगा |क्यों की व्यवसाय था यह कलारूप अब जब व्यवसायायी करण के इस युग में इस व्यस्याय का कोई महत्व नहीं रहा तो निश्चित तौर पर यह जाति ,समुदाय जीवन यापन के लिए नए व्यवसाय की तलाश करेगा | और यदि यह समाज नए व्यवसाय की तलाश करेगा तो निश्चित तौर पर परम्परा बदलेगी और इतनी तेज़ी से बदलेगी की इन्हें अपने कलारूप को छोड़ने में कोई मोह नहीं होगा | जंहा लागाव,आस्था,मोह नहीं वह परम्परा ज्यादा दिनों तक जीवित नहीं रह सकी हैं सैकड़ो उदाहरण हमारे सामने रहे हैं जिन्हें हम देखते रहे और वो अचानक कंही खो गयी | पूछने जाएँ तो यही ज़वाब मिलता है की वर्षो पहले होती थीं अब नहीं होती | बाबा लोग करते थे क्यों की वो अपने बच्चो के भविष्य के बारे में नहीं सोचते थे | हमको सोचना पडेगा हमे अपने बच्चो को भूका नहीं मारना |

१६.संरक्षण के क्या उपाय अपनाने के सुझाव हैं ?(इसमें उन उपायों की पहचान कर उनकी चर्चा करे जिससे के प्रस्तावित सांस्कृतिक विरासत /परम्परा के तत्वों के संरक्षण और संवर्धन को बढ़ावा मिल सके | ये उपाय ठोस हो जिसे भविष्य की सास्कृतिक विरासत /परम्परा के तत्वों का राज्य स्तर पर संरक्षण किया जा सके |)

-:चयनित लोक कलारूपो के संरक्षण के निम्न लिखित उपाय हैं –

१.सर्वप्रथम यहां जाति विशेष की चयन कार्यशाला लगाई जाय ताकि पता चल सके की कलारूप कलारूप कहां -कहां हैं |

२. गाँव चिन्हित कर कलारूपो के स्थानीय स्तर पर प्रदर्शन हेतु मंच निर्माण कराया जाए ताकि प्रस्तुतियों के लिए उचित जगह रहे |

३.कलारूपों का दस्तावेजीकरण किया जाय |

४.सरकारी कार्यक्रमों में बसदेवा गाथा गायन के कलाकारों को आमंत्रित किया जाय |

५. बसदेवा जाति जो कलारूप व्यावसायिक हैं उन्हें व्यावसायिक रखे जाने का कार्य किया जाय एवं जो हैं उन्हें सरकारी स्तर पर कार्यक्रम दिलाएं जायं |

५.छात्रवृति इन्ही कलारूप के करने वालो की नयी पीढी को प्रदान की जाय ताकि ये अपनी परम्परा को सीख सके |

६. बघेलखंड में बसदेवा कला रूप के प्रशिक्षण हेतु प्रशिक्षण केंद्र खोले जायं |

७.सरकारी स्तर पर समय-समय पर बसदेवा लोक कला रूप की प्रतिस्पर्धाए कराई जाए |

८. सबसे महत्वपूर्ण यह है कि त्वरित रूप से गाथा गायन महोत्सव का आयोजन किया जाय इस क्षेत्र में ताकि कला रूपों का संगम हो सके एक –दुसरे की कला को देख सके समझ सके और जीवित रहने के उद्देश्य से प्रयोग कर सकें |

९. अब तक कार्य कर रही समियियो ,संस्थानों या व्यक्तिगत स्तर पर उन्हें प्रोत्साहन दिया जाय

१०.कला रूप को व्यवसायिक बनाने के साथ-साथ उस समुदाय विशेष को भी स्थानीय व्यवसाय के नये रास्ते खोले जांय ,उपाय सोचे जांय |

११. शिल्पकारिता करने वाली जातियों के शिल्प कला को व्यवसायिक कर उनके लोक कलारूप को बचा पाने में नेक कदम हो सकता है |

१२.चयनित कलारूप की ज्ञान परिपाटी और लोक ज्ञान परम्परा को अनिवार्य शिक्षा के रूप में स्कूल ,कालेज स्तर पर लागू किया जाय |

१३.विचार गोष्ठियों का आयोजन किया जाय एवं सांस्कृतिक चेतना के उद्देश्य से इसे पत्रकारिता से जोड़ा जाय |

१४.प्रत्येक विश्विद्यालय ,महाविद्यालय स्तर पर कलारूपो के प्रशिक्षण हेतु डिप्लोमा एवं सर्टीफिकेट कोर्स चलाये जाय इस स्थिति में दो काम एक साथ हो सकते हैं की कला से संबंधित लोक कलाकारों को वंहा प्रशिक्षक के रूप में रखा जायेगा और नये प्रशिक्षार्थी कलारूपो को सीख कर इस कलारूप के समर्थक और जानकार बनेगें |

१७.सामुदायिक सहभागिता (प्रस्तावित सांस्कृतिक विरासत /परम्परा के तत्वों के संरक्षण की योजना में समुदाय,समूह,व्यक्ति की सहभागिता के बारे में लिखे |)

-:निम्न लिखित संमुदाय ,समूह ,व्यक्ति की प्रस्तावित सांस्कृतिक विरासत /परम्परा के तत्वों के संरक्षण में योगदान है -

सहभागी समुदाय –

१.घसिया समुदाय –इस समुदाय ने अपने जातीय कला रूप को तो संरक्षित किया ही है साथ ही साथ अन्य जाति जैसे गोंड और अहीरों के जातीय नृत्यों गीतों के बढावा ,संवर्धन में इनका महत्वपूर्ण योगदान है | घसिया समुदाय के बहुत से कलाकार अन्य जातियों के उत्सव में शामिल होते हैं और उस परम्परा गत कलारूप में सहायक बनते हैं |और साथ ही बसदेवा गाथा गायन परम्परा के लोगो का सम्मान करने वाले व नियमित श्रोता हैं |

२.बैगा समुदाय –बैगा समुदाय अपने शैला ,करमा कला की प्रस्तुती के साथ –साथ बसदेवा गाथा गायन व अन्य गाथा गायन परम्परा के सहायक हैं |

३.गोंड समुदाय – शैला करने के लिए प्रसिद्ध यह जाति बसदेवा समाज में होने वाली परम्परागत कला रूपों की अच्छी दर्शक व सहायक है |

४.पनिका समुदाय – यह शिल्पकारिता के लिए जानी जाती है यह सभी कलाकार समूहों के वस्त्र निर्माण का कार्य करती है |बसदेवा जाति समुदाय कलाकारों के लिए भी यह जाति वस्त्र निर्माण का कार्य करती है |

५. कोल समुदाय –यह जाति अपनी जातीय परम्परा की संवाहक तो है ही साथ में बासदेव,यादव, कोंहार ,आदि जातियों के कलारूपो की भी सहायक जाति समुदाय के रूप में कार्य करती है |

६.यादव समुदाय – यह समुदाय बसदेवा,कोल और चमार जाति की दादर परम्परा की अच्छी दर्शक और सहायक है |

७.अगरिया समुदाय – यह सभी आदिवासी जातियों व समाज के हर वर्ग के लिए लोहे का काम करती रही है और करमा नृत्य भी

८.बादी समुदाय – यह गोंड की उपजाति है जो की गोदना गोदने की परम्परा के साथ –साथ शैला ,करम नृत्य भी करती है |बसदेवा जाति भी गोदना गोदाने के लिए जानी जाती है जो बादी समाज की महिलाओं का सहारा लेती है |

९.भूमिया समुदाय – यह भूमिहार जाति से सम्बंधित जाति है यह इन तमाम आदिवासी जातियों के देवताओं की उपासक के रूप में जानी जाती है |

१०.जोगी समुदाय – यह जाति समूह भी बसदेवा , बादी आदि की परम्परा का परिचय देते हैं उनके इतिहास की जानकारी रखते है |और बसदेवा की तरह ही वस्त्र पहनकर गाथाये और निर्गुण भजन का गायन करते हैं |

सहभागी समूह –

१.इन्द्रवती नाट्य समिति सीधी – विगत १२ वर्षो से यह संस्था लोक कला रूपों के संरक्षण ,संवर्धन और मंचीय कार्यक्रमों के लिए प्रयासरत रही है | इस संस्था ने अब तक सीधी के 107 ग्रामो को चिन्हित कर लोक कला ग्राम बनाये हैं ,जंहा से करीब १२०० लोक कलाकारों को जोड़ा गया है एवं बसदेवा गाथा गायन के कलाकारों को जोड़ने का महत्वपूर्ण कार्य करती रही है |

२.एक्सट्रीम आर्ट एंड एजुकेशनल सोसाइटी सीधी – यह संस्था भी विगत ७ वर्षो से क्षेत्र की सांस्कृतिक चेतना के लिए कार्य कर रही है और साथ ही साथ आदिवासी क्षेत्रो में शिक्षा को लेकर जन जागरूकता का कार्य कर रहे है |

३.अंगराग नाट्य एवं लोक साहित्य कला केंद्र लकोंडा- इस संस्था का निर्माण ३ वर्ष पहले मात्र एक उद्देश्य लोक कला रूपों के संकलन ,संरक्षण के लिए किया गया था और अब तक संस्था ने ५००० लोकगीतों का संकलन कार्य एवं तमाम लोक कलारूपो की मंचीय प्रस्तुतियों का कार्य कर रही है |बसदेवा गाथा गायन परम्परा के सम्बन्ध में इस संस्था का विशेष कार्य इनकी परम्परागत गायन कथाओं का संकलन कार्य है |

सहभागी व्यक्ति-

१.शिव शंकर मिश्र 'सरस'
२. इंजीनियर आर.बी.सिंह
३. रचना राजे सिंह
४.रोशनी प्रसाद मिश्र
५.नरेन्द्र बहादुर सिंह
६.पुष्पेन्द्र कुमार वर्मा
७.रजनीश जायसवाल
८.करुणा सिंह चौहान
९.प्रजीत साकेत
१०.आरती यादव
११.श्री निवास शुक्ल
१२.आर .डी.सिंह
१३.आशीष सिंह 'दीनू'
१४.बाबू लाल दाहिय
१५. देवेन्द्र पटेल
१६.डॉ.अनूप मिश्र
१७.मीनू सिंह चौहान
१८.विनय सिंह परिहार
१९.भागवत प्रसाद पाठक
२०.बाबूलाल कुंदेर
२१.मनोज पाण्डेय
२२.आदित्य सिंह बघेल
२३.पवन सिंह चौहान
२४.रामनरेश सिंह चौहान
२५.चन्द्रमोहन गुप्त
२६.विक्रम सिंह चौहान
27.अजीत सिंह चंदेल
28.रामबिहारी पाण्डेय
२९.राजकारण शुक्ला
३०.नेहा सिंह कुंदेर

३१.अनामिका सिंह
३२.कविता सिंह चौहान
३३.उपेन्द्र सिंह कुशराम
३४.प्रवीण पाण्डेय
35.सुन्दर लाल सिंह
३६.ध्रुव सेन सिंह चौहान

१८.संबंधित समुदाय के संघटक (को) या प्रतिनिधि (नों)प्रस्तावित सांस्कृतिक विरासत /परम्परा के तत्वों से जुड़े हर सामुदायिक संगठन प्रतिनिधि या अन्य गैर सरकारी संस्था जैसे की एसोशीएसन ,ऑर्गनाइजेशन ,क्लब ,गिल्ड, सलाहकार ,समिति, स्टीयरिंग समिति आदि |
१.संस्था /कम्पनी/हस्ती का नाम
२.सम्बंधित /अधिकारी व्यक्ति का नाम पदनाम व संपर्क
३.पता
४.फ़ोन नम्बर : मोबाइल नम्बर
५.ई-मेल
६.अन्य सम्बंधित जानकारी

-: बसदेवा गाथा गायन परम्परा देश की तमाम गाथा गायन शैलियों में अपना विशेष महत्व रखती है ये बात और है की इसके संरक्षण,सवर्धन के लिए कोई कार्य नही किया गया |मध्यप्रदेश राज्य में आदिवासी लोक कला परिषद है उनको तो शायद कुछ वर्ष पहले ये भी पता नहीं था की ऐसी भी कोई कला विधा है | सीधी के कुछ नाट्य और लोक कलारूपो के संरक्षण के लिए सराहनीय कार्य कर रही समितियों ने इस कला रूप के जीवंत होने का ढोल पीटा और यह बात उनके कानो तक भी पहुची | अब वो जानते हैं इस कालरूप की अंतिम साँसे चल रही हैं फिर भी अब तक इसे बचाने के उद्देश्य से कोई ठोस कदम नहीं उठाया गया | बसदेवा गाथा गायन परम्परा के आज भी सैकड़ो कलाकार हैं जो कुछ ही सालो में अपनी इस परम्परा को छोड़ देंगे और कुछ छोड़ भी चुके हैं ऐसा शोध के दौरान देखने को मिला | बसदेवा समुदाय को मंच दिलाने के लिए जो प्रयास यंहा के स्थानीय लोक कला प्रेमियों और संरक्षकों ने किया है वह सरकारी संगठन ने नहीं किया या यूँ कहे की कभी किया नही |इस समुदाय विशेष के लिए कुछ सम्बंधित व्यक्तियों, स्थानीय संस्थानों ने जो कार्य किया मै उनका नाम दे रहा हूँ-

सहभागी व्यक्ति-

१. **श्री बसंत निरगुणे** (आदिवासी लोक कला परिषद)-आदिवासी लोक कला परिषद भोपाल के पूर्व निदेशक इन्होंने बघेली लोक कला रूपों के संरक्षण ,संवर्धन हेतु सराहनीय कार्य किया हैं | जिसमे से बसदेवा गाथा गायन भी प्रमुख हैं |
मो.नं.09479539358

२. **कपिल तिवारी**(आदिवासी लोक कला परिषद)-पूर्व निदेशक आदिवासी लोक कला परिषद भोपाल
मो.नं.o755-277-5122

३.**श्री अशोक मिश्रा** (आदिवासी लोक कला परिषद)आदिवासी लोक कला परिषद भोपाल के वर्तमान निदेशक |

मो.नं.09826014630

४.बाबू लालकुंदेर- (स्थानीय लोक कला रूप संरक्षक)-बघेलखंड सीधी के बाबू लाल कुंदेर ने लोक कलारूपों को मंच प्रदान करने के उदेश्य को लेकर लगातार पिछले १० वर्षो से प्रयासरत रहे हैं व सफलता भी हासिल की |
पता-दक्षिण करौंदिया गोपाल दास रोड वार्ड-9 सीधी 486661
मो .09926094042
ई-मेल-indravatidramasociety@gmail.com

५.रोशनी प्रसाद मिश्र (स्थानीय लोक कला रूप संरक्षक)-बघेली रंगमंच व लोककला रूपों के क्षेत्र में विशिष्ट कार्य करने वाले रोशनी प्रसाद मिश्रा जी ने जातीय लोक कलारूपों को मंच प्रदान करने एवं उनके रंगमंचीय प्रयोग के लिए बेहतर व सराहनीय कार्य किया है |

पता-ग्राम-सिलवार,पोस्ट-गिजवार,जिला- सीधी 486661
मो. 09755756370
ई-मेल-eaaessidhi@gmail.com

६.नरेन्द्र बहादुर सिंह (स्थानीय लोक कला रूप संरक्षक)- बघेली रंगमंच के प्रतिष्ठित कलाकार,संगीतकार,रंगनिर्देशक व बघेली लोक कलारूपो ,लोकगीतों ,लोकतत्वों के संग्रहकर्ता के रूप में कार्य कर रहे नरेन्द्र बहादुर सिंह ने अब तक बघेली गीतों के करीब ५००० संग्रह किये हैं जिनमे संस्कार गीतों से लेकर जातीय गीत व नृत्य ,नाट्य ,गाथा गीत भी शामिल हैं | इसके साथ-साथ बघेली लोक कथाओं ,व गीतों में निहित कथ्यों को नाटय रुपान्तारण कर बघेली लोक को प्रचलन में लाने का सराहनीय कार्य किया है |महाकवि भाष के संस्कृत नाटको का बघेली में नाट्य रूपान्तर कर भाषा के लिए भी बेहतर कार्य किया है | वर्तमान में बघेली लोक कलारूपो पर शोध कार्य एवं बसदेवा गाथा गायन के शैलीगत रूप में गायी जाने वाली तमाम कथाओं का संग्रह कार्य |

पता –ग्राम+पोस्ट-लकोंडा ,तहसील-चुरहट ,जिला-सीधी ,मध्य प्रदेश 486661
मो. 07694922003
ई-मेल-angragsidhi@gmail.com

७.इंजी.आर.बी.सिंह – टाटा शिक्षा एवं सामाजिक संस्थान सीधी के निदेशक इंजी.आर.बी.सिंह जी ने बघेलखंड की लोक कलाओं के संरक्षण ,संवर्धन और उनके मंचीय रूप प्रदान करने के लिए प्रयासरत और इस क्षेत्र में कार्य करने वाली समितियों का सहयोग प्रदान किया है | आदिवासी कलाकारो के बच्चो को पिछले ६ वर्षो से मुफ्त शिक्षा का सराहनीय कार्य भी कर रहे हैं|

पता- टाटा शिक्षा एवं सामाजिक कल्याण समिति सीधी खुर्द जिला –सीधी मध्य प्रदेश
मो.09926388774
ई-मेल-tatacollge@gmail.com

सहभागी प्राइवेट ऑर्गनाइजेशन -

१.इन्द्रवती नाट्य समिति सीधी

२.एक्सट्रीम आर्ट एंड एजुकेशनल सोसाइटी सीधी

३.अंगराग नाट्य एवं लोक साहित्य कला केंद्र लकोंडा सीधी

४.बेस्ट इंटेलीजेंस थिएटर ट्रेनिंग इंस्टिट्यूट सीधी

५.साइलेंट थिएटर एक्ट सोसाइटी सीधी

६.रमा थिएटर ग्रुप निजवार

७.अनुभूति नृत्य एवं नाटय संस्थान इंदौर

८.रंगपटल परफार्मिंग आर्ट सीधी

९.टाटा शिक्षा एवं समाजिक संस्थान सीधी

१०.प्रगतिशील लेखक संघ इकाई सीधी

११.बघेली लोक कला परिषद सीधी

१९.किसी मौजूदा इन्वेंटरी,डेटाबेस या डाटा क्रिएशन सेंटर (स्थानीय ,राजकीय,राष्ट्रीय)की जानकारी जिसका आपको पता हो या आप किसी कार्यालय ,एजेंसी , ऑर्गनाइजेशन या व्यक्ति की जानकारी को इस तरह की सूची को संभाल कर रखता हो उसकी जानकारी दें|

-:बसदेवा गाथा गायन परम्परा के शैलीगत रूप में गायी जाने वाली तमाम गाथाओ ,कथाओं और उनके कालाकारो की इन्वेंटरी ,डेटाबेस या डाटा क्रिएशन सेंटर (स्थानीय ,राजकीय ,राष्ट्रीय) की सूची निम्न संस्थाओं के पास हैं -

१.इन्द्रवती नाट्य समिति सीधी

२.एक्सट्रीम आर्ट एंड एजुकेशनल सोसायटी सीधी

३.अंगराग नाट्य एवं लोक साहित्य कला केंद्र लकोंडा सीधी

४.रंगपटल परफॉर्मिंग आर्ट सोसाइटी सीधी

२०.के प्रस्तावित सांस्कृतिक विरासत /परम्परा के तत्वों से सम्बंधित प्रमुख प्रकाशित संदर्भ सूची या दस्तावेज़ (किताब,लेख,आडियो –विसुअल सामग्री ,लाइब्रेरी ,म्यूजियम ,सहृदय संग्राहको ,कलाकारों ,/व्यक्तियों,के नाम और पते तथा बेवसाईट आदि जो सम्बंधित सांस्कृतिक विरासत /परम्परा के तत्वों के बारे में हो |)

-:प्राथमिक शोध के दौरान हमे जो भी प्राप्त हुआ है उसे हम आप को प्रेषित कर रहे हैं | संग्राहको ,कलाकारो के नाम भी हम उनके वर्तमान पते के साथ अलग से संलग्न कर रहे हैं |साथ ही शोध के दौरान बसदेवा कलाकारो के साथ किये गए साक्षात्कार को ,फोटोग्राफ्स और लिखित रूप में भी भेज रहे हैं ,व इस विधा से जुड़े तमाम कलाकारो के नाम और पता भी अलग से संलग्न कर रहे हैं |

कुछ प्रमुख बसदेवा गाथा गायकों के साक्षात्कार

–शोध कार्य के दौरान बघेलखंड क्षेत्र के विभिन्न ग्रामो में निवासरत बसदेवा समुदाय के प्रतिनिधि कलाकारों से इस गाथा गायन परम्परा के सम्बन्ध में जो चर्चाएं हुई ,जो नए तथ्य सामने आये मै उसे मै निम्नवत प्रस्तुत कर रहा हूँ –

1.अनूप लाल बसदेवा – अनूप लाल जी सीधी जिले के जमुआर ग्राम के निवासी हैं | ये बसदेवा गायन के प्रतिष्ठित और लोकमान्य कलाकार हैं | शोध कार्य के दौरान नीरज कुंदेर की जो इनसे बातचीत हुई उस चर्चा का अंश निम्नवत है-

सवाल-आप का नाम बताएं ? आप किस ग्राम के निवासी हैं ?

ज़वाब-मेरा नाम अनूप लाल बासदेव है |और मै जमुआर ग्राम का निवासी हूँ |

सवाल-आप की यह गायन परम्परा कब से है ? और इस गायन परम्परा का गायन आप कब से कर रहे हैं ?

ज़वाब-यह गायन परम्परा मेरे ज्ञान में मेरे दादा-पुरखों से यानी करीब 200 वर्षो से चली आ रही है |और मै इस गायन परम्परा को पिछले ४० वर्षो से कर रहा हूँ |

सवाल-जिस गायन परम्परा के आप संवाहक हैं उसे बसदेवा क्यों कहते हैं ? क्या आप का नाम आप की गायन परम्परा के नाम पर है या आप के जातीय नाम पर आप की गायन परम्परा ?

ज़वाब-हम कृष्ण बासदेव महाराज के वंशज हैं इसलिए हम बासदेव हैं | जातीय नाम पर हमारी कला का नाम बसदेवा पडा है | हम बसदेवा शैली में बहुत सारी लोक कथाओं का गायन करते हैं,और सारी गाथाये बसदेवा गाथा के नाम से ही जानी जाती है |

सवाल-कपड़ा कैसा पहनते हैं और क्यों?

ज़वाब-हम लोग गेरुआ कपड़ा पहनते हैं क्योकि हमारे बासदेव महाराज ऐसा ही कपड़ा पहनते थे | और हम तो जोगी है इसलिए हमारा कपड़ा ऐसा ही रहता है |

सवाल-श्रवण गाथा को आप लोग अपनी पहली गाथा मानते हैं ? आप की गायन परम्परा में श्रवण कुमार की कथा ही पहले क्यों शुरू की गयी ?

जावाब- हां श्रवण गाथा हमारी पहली गाथा गायन परम्परा है |श्रवण कुमार ने ही बासदेव को पीपल के वृक्ष के नीचे से उठाकर पाला और अपने पास रखा इसलिए हमारे पुरखे लोग उनकी कथा कहते हैं |

सवाल-आप की सुमिरनी में राम नाम ही क्यों कहते हैं ?

ज़वाब- राम हमारे भगवान हैं और हम हिन्दू धर्म के हैं ,हिन्दू धर्म के सबसे बड़े देवता राम हैं | उन्हें सब जानते है | (दूसरे शब्दों में उनके ज़वाब को समझे तो राम लोक नायक हैं इस कारण वो आनायास ही कथा के सुमिरनी में आये और परम्परागत हो गए |)

सवाल- आपको कभी ऐसा कुछ लगा की आप की गाथा से समाज को क्या मिलता होगा ? क्यों कि आप जो श्रवण गाथा सुनाते हैं वह बड़ा मार्मिक है |

ज़वाब- हमारी गाथा गायन से समाज को असर होता था तभी तो घर का बँटवारा नहीं होता था | माँ-बाप को बच्चे सम्मान देते थे | आज कल का ज़माना तो देख ही रहे है की मेहरी आते ही माँ बाप को आश्रम (वृद्धाश्रम) भेज देते है |

सवाल-पहले आप की जाति घर चलाने के लिए क्या रोज़गार करती थी ?

ज़वाब-बसदेवा गायन हमारा हमेशा से रोज़गार रहा है लेकिन अब ज़माना बदल गया है इस कारण काम **नहीं चलता** |

सवाल-अब आप लोग पहले की तरह भोर में क्यों नहीं गाते ?

ज़वाब-अब लोगो का हम पर भरोषा नहीं रहा | गाँव शहर में चोरियां होने लगी तो लोग ये भी कह देते हैं की बसदेवा मागने आये थे उन्ही ने चुराया होगा | देखिये सम्मान सबको प्यारा है चाहे वह गरीब हो या अमीर तो हम क्यों अपना सम्मान गँवाए | दूसरा काम कर लेंगे एसा हमारे बच्चे सोचते हैं इस कारण अब वो लोग इस गायन को गाते ही नहीं और हम लोग जो गाते हैं तो दिन में |

2.रामगोपाल बसदेवा –राम गोपाल बासदेव से नीरज कुंदेर की बसदेवा गाथा गायन शैली ,परम्परा ,सांस्कृतिक चेतना को लेकर जो बाते हुई वो जस की तस प्रस्तुत है | सर्वप्रथम साक्षात्कार से पहले रामगोपाल बासदेव जी ने कबीर के निर्गुण भजन का बासदेव शैली में गायन किया –

"जनम –जनम तक माया हो रोबय चार महीना बहिनिया हो |

अउ तीन दिना तक तिरिया हो रोबय फेर करय घर बासा हो प्राणी ||

गोडबा पकड़ मोरि माया रोमय बंहिया पकड़ी मोर बहिनी हो |

छतिया मा मूड धय तिरिया हो रोबय फेर करय घर बासा हो रानी ||

ता सुमिरन राम नाम का कइला दुई दिन के जिंदगानी हो |

ई देंहिया मा काग विलोली काहे केर मोहिया हो |

ई देंहिया हय रैन बसेरा प्राणी छोड़ पिंजर उड़ जानना रे ||"

सवाल- जय राम जी कक्का,आपका नाम और आप कंहा से हैं आपके गाँव का नाम बताइये ?

ज़वाब- मेरा नाम रामगोपाल हैं और मैं चकडउर का हूँ |

सवाल- आप जो गाते हैं उसे क्या कहते हैं ,और क्या-क्या कथा सुनाते हैं इसमें आप |

ज़वाब-हम जो गाते हैं उसे बसदेवा कहते हैं और हम इस गाथा गायन में सरवन गाथा ,हरिश्चंद्र गाथा ,मोरध्वज गाथा ,भार्तिहरी गाथा गाते हैं |

सवाल- आप की गायन शैली को क्या आपके बच्चे लोग सीख रहे हैं ?

ज़वाब- नही अब इस गायन परम्परा को सीखने के लिए नये लोगो में उत्साह नही है | पहले हम लोग इसे गाकर ही अपना भरण-पोषण करते रहे हैं लेकिन अब न तो कोई सुनता है और न ही उतना सम्मान देते हैं तो यही कारण कि कोई सीख भी नही रहा | किसलिए सीखेंगे इसे सीख कर क्या करेंगे ऐसा हमारे बच्चे लोग पूंछते हैं |

सवाल- यदि सरकार इस परम्परा को बचाने के लिए कोई उपाय करे तो क्या आप लोग नई पीढी को सिखायेंगे |

ज़वाब- सरकार अगर मुफ्त मे करायेगी तो करके क्या करेंगे जब पेट चले तो सीखेंगे और सिखायेंगे भी |

सवाल-बसदेवा गाथा जो आप लोग गाते हैं क्या उससे आप लोगो का कुछ आर्थिक सहयोग होता है?

ज़वाब- होता था जब तब हम लोग गाँव-गाँव जाकर किया करते थे और अब नहीं होता इसी कारण बसदेवा गायक कम हो रहे हैं |

सवाल-सारंगी वादन क्या बसदेवा गायन शैली की परम्परा है ?

ज़वाब- नही , यह बसदेवो की परम्परा नहीं है | यह भरथरी गायकों की परम्परा है | बसदेवा तो खुटखुटी और पैंजना बजाकर गाते थे |

सवाल- तो फिर आप लोग क्यों गाते हैं ?

ज़वाब- खुटखुटी बजाने वालो की इज्जत कम होती है इसलिए हम लोग सारंगी बजाकर गाने लगे | इसको लोग सुनते हैं और दान भी देते हैं |

सवाल- यदि सरकार ने कुछ नहीं किया तो क्या आप लोग अपनी परम्परा के लिए कुछ काम नहीं करेंगे? उसे नहीं सुनायेंगे लोगो को यही परम्परा तो आपका आस्तित्व है ?

ज़वाब-हम करेंगे लेकिन हमारे बच्चे नही कर पायेंगे | हमारा तो किसी तरह बीत गया लेकिन उनका नहीं बीतेगा हम लोग मरेंगे तो यह परम्परा भी मर जायेगी |

3. रामकृपाल बासदेव - बसदेवा गायन शैली में तमाम लोक नायको की कथा को गाकर सुनाने की परम्परा रही है इसी तारतम्य में नीरज कुंदेर और रामकृपाल बासदेव की जो परिचर्चा हुई वो निम्नवत है-

सवाल- आप का नाम ?

ज़वाब- रामकृपाल

सवाल- आप के गाँव का क्या नाम है ?

ज़वाब-चकडउर

सवाल-आप यह गाथा गायन कब से कर रहे हैं ?

ज़वाब-मुझे यह गाथा गाते हुए लगभग ४० साल हो गये |

सवाल-इस गाथा गायन के लोग क्या -क्या कथा सुनाते हैं ?

ज़वाब- श्रवण कुमार, हरिश्चन्द्र, मोरध्वज,कृष्ण,भरथरी और कबीर के भजन |

सवाल-क्या अब आप के बच्चे इस गाथा गायन को गाते हैं ?

ज़वाब-नही,वो अब नहीं करते उन्हें भीख मांगने में शर्म आती है | मांगने से सम्मान कम होता है उनके संजोडी उनकी हंसी उड़ाते हैं की अब तुम भी भीख मांगोगे |

सवाल-मैंने सुना है की आप लोग रात को गाते थे क्या ये सही है और सही है तो क्यों गाते हैं ?

ज़वाब-हां ये बात सही है की हमारे पूर्वज लोग रात में मांगते थे | क्यों की उन्हें श्राप था की वो सूर्य उगने के बाद किसी को अपना चेहरा नहीं दिखाएँगे | लेकिन अब नहीं गाते क्यों की अब समाज बदल गया है गाँव-गाँव में चोरियां होने लगी हैं तो लोग यही सोचते हैं की बसदेवा ने की होगी | हमारा सम्मान कम होता है इसलिए अब हम रात में नहीं गाते |

सवाल-यदि इस कला से आप लोगो को रोज़गार मिला तो क्या आप लोग इस परम्परा के लिए गायन करते रहेंगे?

ज़वाब-जी बिलकुल करेंगे ,क्यों की हमे जीवन यापन ही तो करना है | और आदमी जीता किसके लिए है ? एक तो धन दूसरा सम्मान | दोनों मिलेगा तो हम क्यों नहीं केरेंगे
सवाल- बसदेवा यानी आप भी जब बघेलखंड से कंही और जाते हैं भिच्छाटन के लिए तो आप का क्या अनुभव रहा ?

ज़वाब-बघेलखंड से बाहर हम लोग जाते हैं तो बड़ा सम्मान करते हैं ,और हमारा गीत सुनने को भीड़ लगती है | घर-घर से लोग इकट्ठा होते है और हमारा स्वागत करते हैं और कहते हैं की बासदेव महाराज आप ठीक आ गए हमें आशीर्वाद दे |

सवाल-आप लोग इस परम्परा में मोरध्वज और हरिश्चन्द्र की कथा भी सुनाते हैं | क्या आप उसे सुना सकते हैं ?

ज़वाब –जी बिलकुल, लेकिन पूरा नहीं सूना पाएंगे थोडा-बहुत सुनाते हैं -

"मोरध्वज एक राजा रहे ,बड़ा दानिया राजा रहे |
दानी-दानी दुनिया कहय ,ओनखे बराबर नहीं आय दानी जय गंगे ||
तब बोलयं विष्णु भगवान ,सुनिला अर्जुन हमार बाति |
मोरध्वज एक राजा हमा ,चला परीक्षा लेई ओनखर जय गंगे ||
विष्णु भगवान साधू बनि जाय ,अर्जुन वीर शेर बनि जांय |
साधू, शेर दूनउ पहुंचे जांय मोरध्वज के द्वारे मा जय गंगे||"

" का कही राजा न कहि जाय,रोहित बेटा खत्म भयें हां |
पिता जलाबय का जघा दा जय गंगे||
बोलयं राजा करय ज़वाब ,रानी पहिले नेग चार दइदा |
फेर चिता जलाबय के जाघा देब जय गंगे ||
बोलय रानी करयं ज़वाब रोहित बेटा तोंहरय आय |
हम तोंहरय ता परानी आहन जय गंगे ||
हम तोंहरय ता परानी आहन,हमसे नेग चार न ला |
बोलय राजा करयं ज़वाब कब तू रानी रहिउ हमार जय गंगे ||"

बसदेवा गाथा गायन परम्परा के प्रतिनिधि कलाकारो की सूची

क्र.	नाम	पता	कलारूप	संपर्क सूत्र
1	**अनूपलाल बसदेवा**	ग्राम+पोस्ट-जमुआर, तहसील-सिहावल जिला-सीधी मध्य प्रदेश 486661	बसदेवा	07049473481
2	**रामकृपाल बसदेवा**	ग्राम+पोस्ट-चकडउर , तहसील-मझौली जिला-सीधी मध्य प्रदेश 486661	बसदेवा	----------
3	**रामगोपाल बसदेवा**	ग्राम+पोस्ट-भटहा , तहसील-चुरहट जिला-सीधी मध्य प्रदेश 486661	बसदेवा	----------
4	**प्रीतम बसदेवा**	ग्राम+पोस्ट-पिपराही , तहसील-मऊगंज जिला-सीधी मध्य प्रदेश	बसदेवा	7898695183
5	**मालाराम बसदेवा**	ग्राम+पोस्ट-दौलतपुर तहसील-मऊगंज जिला-सीधी मध्य प्रदेश 486661	बसदेवा	09752917449
6	**गणेश प्रसाद बसदेवा**	ग्राम+पोस्ट-भटहा , तहसील-चुरहट जिला-सीधी मध्य प्रदेश 486661	बसदेवा	07389792826
7	**काशी बसदेवा**	ग्राम+पोस्ट-बैंकुंठपुर , तहसील-रीवा जिला-रीवा मध्य प्रदेश 486661	बसदेवा	08085327819
8	**लल्लू बसदेवा**	ग्राम+पोस्ट-जमुआर, तहसील-सिहावल जिला-सीधी मध्य प्रदेश 486661	बसदेवा	09569469318
9	**जीतेंद्र बसदेवा**	ग्राम+पोस्ट-जमुआर, तहसील-सिहावल जिला-सीधी मध्य प्रदेश 486661	बसदेवा	----------
10	**रामसुमिरन बासदेव**	ग्राम+पोस्ट-चकडउर , तहसील-मझौली जिला-सीधी मध्य प्रदेश 486661	बसदेवा	09753692297

फार्म एक

ज्मुआर ग्राम के बसदेवा कलाकारो की सूची

विधा का नाम– बसदेवा गाथा गायन

क.	नाम	पता	मोबाईल नं.	रोजगार	उम्र
1	अनूप लाल बसदेवा	जमुआर	7049473481	कलाकारी	47
2	दिनेश कुमार बासदेव	जमुआर	9752179755	भिच्छाटन / खेती	40
3	कुजलाल बासदेव	जमुआर	.....	भिच्छाटन / खेती	65
4	राजमन बासदेव	जमुआर	.....	भिच्छाटन / खेती	40
5	भुग्गेलाल बासदेव	जमुआर	.....	भिच्छाटन / खेती	45
6	सूरज बासदेव	जमुआर	.....	भिच्छाटन / खेती	20
7	राजू बासदेव	जमुआर	.....	भिच्छाटन / खेती	20
8	सुन्दरलाल बासदेव	जमुआर	9685442868	भिच्छाटन / खेती	35
9	राजेन्द्र बासदेव	जमुआर	9753086910	भिच्छाटन / खेती	42
10	इन्द्रपति बासदेव	जमुआर	.....	भिच्छाटन / खेती	30
11	सुदामा बासदेव	जमुआर	.....	भिच्छाटन / खेती	35
12	राम शिरोमणि बासदेव	जमुआर	7049566179	भिच्छाटन / खेती	40
13	गुल्लू बासदेव	जमुआर	8085976132	भिच्छाटन / खेती	20
14	राहुल बासदेव	जमुआर	.....	भिच्छाटन / खेती	18
15	मुन्ना बासदेव	जमुआर	.....	भिच्छाटन / खेती	45
16	कमलेश बासदेव	जमुआर	.....	भिच्छाटन / खेती	22
17	संजय बासदेव	जमुआर	.....	भिच्छाटन / खेती	22
18	राधेश्याम बासदेव	जमुआर	.....	भिच्छाटन / खेती	40
19	जगदीश बासदेव	जमुआर	.....	भिच्छाटन / खेती	40
20	गँजेड़ी बासदेव	जमुआर	.....	भिच्छाटन / खेती	35
21	परवीत बासदेव	जमुआर	.....	भिच्छाटन / खेती	25
22	रावेन्द्र बासदेव	जमुआर	.....	भिच्छाटन / खेती	22
23	देवेन्द्र बासदेव	जमुआर	.....	भिच्छाटन / खेती	23
24	रंजीस बासदेव	जमुआर	.....	भिच्छाटन / खेती	22
25	बबुआ बासदेव	जमुआर	.....	भिच्छाटन / खेती	22
26	धनी बासदेव	जमुआर	.....	भिच्छाटन / खेती	20
27	सनी बासदेव	जमुआर	.....	भिच्छाटन / खेती	24
28	रघुवंश बासदेव	जमुआर	.....	भिच्छाटन / खेती	30
29	कमलेन्द्र बासदेव	जमुआर	.....	भिच्छाटन / खेती	22
30	जीतेन्द्र बासदेव	जमुआर	.....	भिच्छाटन / खेती	24
31	मोहनलाल बासदेव	जमुआर	.....	भिच्छाटन / खेती	35

फार्म एक

दौलत नगर सीतापुर के बसदेवा कलाकारों की सूची

विधा का नाम– बसदेवा गाथा गायन

क.	नाम	पता	मोबाईल नं.	रोजगार	उम्र
1	मालाराम बासदेव	दौलत नगर सीतापुर	9752917449	भिच्छाटन / खेती	60
2	सत्यनारायन बासदेव	दौलत नगर सीतापुर	.....	भिच्छाटन / खेती	55
3	यज्ञनारायन बासदेव	दौलत नगर सीतापुर	.....	भिच्छाटन / खेती	58
4	महेश बासदेव	दौलत नगर सीतापुर	.....	भिच्छाटन / खेती	53
5	मुनीम बासदेव	दौलत नगर सीतापुर	.....	भिच्छाटन / खेती	35
6	विक्की बासदेव	दौलत नगर सीतापुर	.....	भिच्छाटन / खेती	31
7	रमाकान्त बासदेव	दौलत नगर सीतापुर	.....	भिच्छाटन / खेती	38
8	लालजी बासदेव	दौलत नगर सीतापुर	.....	भिच्छाटन / खेती	42
9	राधेश्याम बासदेव	दौलत नगर सीतापुर	.....	भिच्छाटन / खेती	48
10	दीनदयाल बासदेव	दौलत नगर सीतापुर	.....	भिच्छाटन / खेती	41
11	रामजी बासदेव	दौलत नगर सीतापुर	.....	भिच्छाटन / खेती	47
12	दीनू बासदेव	दौलत नगर सीतापुर	.....	भिच्छाटन / खेती	44
13	अक्षयलाल बासदेव	दौलत नगर सीतापुर	.....	भिच्छाटन / खेती	38
14	शिवप्रसाद बासदेव	दौलत नगर सीतापुर	.....	भिच्छाटन / खेती	40
15	महेन्द बासदेव	दौलत नगर सीतापुर	.....	भिच्छाटन / खेती	41
16	लोहानी बासदेव	दौलत नगर सीतापुर	.....	भिच्छाटन / खेती	25
17	चमेले बासदेव	दौलत नगर सीतापुर	.....	भिच्छाटन / खेती	28
18	नरायन बासदेव	दौलत नगर सीतापुर	.....	भिच्छाटन / खेती	30
19	रामजियावन बासदेव	दौलत नगर सीतापुर	.....	भिच्छाटन / खेती	31
20	राममणी बासदेव	दौलत नगर सीतापुर	.....	भिच्छाटन / खेती	24
21	रामायण बासदेव	दौलत नगर सीतापुर	.....	भिच्छाटन / खेती	25
22	भोमेश्वर बासदेव	दौलत नगर सीतापुर	.....	भिच्छाटन / खेती	36
23	शिव शरण बासदेव	दौलत नगर सीतापुर	.....	भिच्छाटन / खेती	34
24	हरपाल बासदेव	दौलत नगर सीतापुर	.....	भिच्छाटन / खेती	35
25	सोनू बासदेव	दौलत नगर सीतापुर	.....	भिच्छाटन / खेती	25
26	मोनू बासदेव	दौलत नगर सीतापुर	.....	भिच्छाटन / खेती	26

फार्म एक

इन्द्रवती लोक कला ग्राम भटहा के कलाकारो की सूची

विधा का नाम– बसदेवा गाथा गायने

क.	नाम	पता	मोबाईल नं.	रोजगार	उम्र
1	राजकुमार बासदेव	भटहा	.....	भिच्छाटन / खेती	45
2	गैवी प्रसाद बासदेव	भटहा	.....	भिच्छाटन / खेती	60
3	गणेश कुमार बासदेव	भटहा	7389797826	भिच्छाटन / खेती	55
4	सुखेन्द्र बासदेव	भटहा	.....	भिच्छाटन / खेती	53
5	रमेश बासदेव	भटहा	.....	भिच्छाटन / खेती	56
6	छठीलाल बासदेव	भटहा	.....	भिच्छाटन / खेती	46
7	झल्ला बासदेव	भटहा	9685190148	भिच्छाटन / खेती	48
8	हरिपाल बासदेव	भटहा	.....	भिच्छाटन / खेती	31
9	फूलचन्द्र बासदेव	भटहा	9981588062	भिच्छाटन / खेती	25
10	रघुवीर बासदेव	भटहा	.....	भिच्छाटन / खेती	29
11	मोतीलाल बासदेव	भटहा	8349806949	भिच्छाटन / खेती	45
12	प्रदीप बासदेव	भटहा	7898782526	भिच्छाटन / खेती	54
13	धीरू बासदेव	भटहा	.....	भिच्छाटन / खेती	25
14	नीरज बासदेव	भटहा	7389797826	भिच्छाटन / खेती	36
15	कैलाश बासदेव	भटहा	9685704934	भिच्छाटन / खेती	36
16	कमलेश बासदेव	भटहा	7047161794	भिच्छाटन / खेती	35
17	अजय बासदेव	भटहा	.....	भिच्छाटन / खेती	33
18	राकेश बासदेव	भटहा	.....	भिच्छाटन / खेती	34
19	अमित बासदेव	भटहा	9579469318	भिच्छाटन / खेती	45
20	लल्लू बासदेव	भटहा	.....	भिच्छाटन / खेती	35
21	भइयालाल बासदेव	भटहा	.....	भिच्छाटन / खेती	47
22	रघुनन्दन बासदेव	भटहा	.....	भिच्छाटन / खेती	29
23	मिथिला बासदेव	भटहा	.....	भिच्छाटन / खेती	27
24	रामसिया बासदेव	भटहा	.....	भिच्छाटन / खेती	34

फार्म एक

बैकुण्ठपुर के बसदेवा कलाकारो की सूची

विधा का नाम– बसदेवा गाथा गायन

क.	नाम	पता	मोबाईल नं.	रोजगार	उम्र
1	काशी बासदेव	बैकुण्ठपुर	.....	भिच्छाटन / खेती	------
2	कॉटे बासदेव	बैकुण्ठपुर	.....	भिच्छाटन / खेती	------
3	दीपक बासदेव	बैकुण्ठपुर	.....	भिच्छाटन / खेती	------
4	चन्दन बासदेव	बैकुण्ठपुर	.....	भिच्छाटन / खेती	------
5	रजई बासदेव	बैकुण्ठपुर	.....	भिच्छाटन / खेती	------
6	लल्लू बासदेव	बैकुण्ठपुर	.....	भिच्छाटन / खेती	------
7	विश्राम बासदेव	बैकुण्ठपुर	.....	भिच्छाटन / खेती	------
8	मुन्ना बासदेव	बैकुण्ठपुर	.....	भिच्छाटन / खेती	------
9	गंगाराम बासदेव	बैकुण्ठपुर	.....	भिच्छाटन / खेती	------
10	मनोज बासदेव	बैकुण्ठपुर	.....	भिच्छाटन / खेती	------
11	जोकर बासदेव	बैकुण्ठपुर	.....	भिच्छाटन / खेती	------
12	अजय बासदेव	बैकुण्ठपुर	.....	भिच्छाटन / खेती	------
13	प्रकाश बासदेव	बैकुण्ठपुर	.....	भिच्छाटन / खेती	------
14	बिहारीलाल बासदेव	बैकुण्ठपुर	.....	भिच्छाटन / खेती	------
15	सुदर्शन बासदेव	बैकुण्ठपुर	.....	भिच्छाटन / खेती	------
16	रामू बासदेव	बैकुण्ठपुर	.....	भिच्छाटन / खेती	------
17	रोहन बासदेव	बैकुण्ठपुर	.....	भिच्छाटन / खेती	------

फार्म एक

चकड़ौर के बसदेवा कलाकरों की सूची

विधा का नाम– बसदेवा गाथा गायन

अ	नाम	पता	मोबाईल नं.	रोजगार	उम्र
1	रामकृपाल बासदेव	चकड़ौर	.....	भिच्छाटन / खेती	58
2	राजेश बासदेव	चकड़ौर	.....	भिच्छाटन / खेती	25
3	लालमन बासदेव	चकड़ौर	.....	भिच्छाटन / खेती	40
4	रामगोपाल बासदेव	चकड़ौर	.....	भिच्छाटन / खेती	55
5	संजय बासदेव	चकड़ौर	.....	भिच्छाटन / खेती	30
6	अमृतलाल बासदेव	चकड़ौर	.....	भिच्छाटन / खेती	30
7	आकाश बासदेव	चकड़ौर	.....	भिच्छाटन / खेती	15
8	राधिका बासदेव	चकड़ौर	.....	भिच्छाटन / खेती	45
9	लालू बासदेव	चकड़ौर	.....	भिच्छाटन / खेती	44
10	रामसुमिरन बासदेव	चकड़ौर	9753692297	भिच्छाटन / खेती	50
11	अरूण बासदेव	चकड़ौर	.....	भिच्छाटन / खेती	35
12	प्रकाश बासदेव	चकड़ौर	.....	भिच्छाटन / खेती	30
13	मनकेश्वर बासदेव	चकड़ौर	.....	भिच्छाटन / खेती	35
14	देवेन्द्र बासदेव	चकड़ौर	.....	भिच्छाटन / खेती	25
15	सोनू बासदेव	चकड़ौर	.....	भिच्छाटन / खेती	20
16	छोहन बासदेव	चकड़ौर	.....	भिच्छाटन / खेती	35

फार्म एक

डिहुली के बसदेवा कलाकारो की सूची

विधा का नाम– बसदेवा गाथा गायन

क.	नाम	पता	मोबाईल नं.	रोजगार	उम्र
1	भांकरमुनि बासदेव	डिहूली	.....	भिच्छाटन / खेती	40
2	लालजी बासदेव	डिहूली	.....	भिच्छाटन / खेती	22
3	लालता बासदेव	डिहूली	.....	भिच्छाटन / खेती	22
4	संतोश कूमार बासदेव	डिहूली	8719094496	भिच्छाटन / खेती	30
5	भयामलाल बासदेव	डिहूली	.....	भिच्छाटन / खेती	65
6	कल्लू बासदेव	डिहूली	.....	भिच्छाटन / खेती	65
7	राजेन्द्र बासदेव	डिहूली	.....	भिच्छाटन / खेती	45

फार्म एक

पतुलखी ग्राम के बसदेवा कलाकारो की सूची

विधा का नाम– बसदेवा गाथा गायन

क.	नाम	पता	मोबाईल नं.	रोजगार	उम्र
1	मुन्नीलाल बासदेव	पतुलखी	9630942285	भिच्छाटन / खेती	37
2	आशीष बासदेव	पतुलखी	7084250661	भिच्छाटन / खेती	22
3	रंगलाल बासदेव	पतुलखी	.....	भिच्छाटन / खेती	50
4	हीरालाल बासदेव	पतुलखी	.....	भिच्छाटन / खेती	55
5	रामसिया बासदेव	पतुलखी	8085327819	भिच्छाटन / खेती	45
6	सीताराम बासदेव	पतुलखी	9993465531	भिच्छाटन / खेती	46
7	शिव शंकर प्रसाद बासदेव	पतुलखी	.....	भिच्छाटन / खेती	45
8	चिन्तामणि बासदेव	पतुलखी	.....	भिच्छाटन / खेती	35
9	संतोष बासदेव	पतुलखी	.....	भिच्छाटन / खेती	30
10	भोले बासदेव	पतुलखी	.....	भिच्छाटन / खेती	22

फार्म एक

पिपराही ग्राम के बसदेवा कलाकारो की सूची

विधा का नाम– बसदेवा गाथा गायन

क.	नाम	पता	मोबाईल नं.	रोजगार	उम्र
1	रामस्वरूप बासदेव	पिपराही	9179915350	भिच्छाटन / खेती	55
2	गौरी शंकर बासदेव	पिपराही	9589502692	भिच्छाटन / खेती	48
3	प्रीतम बासदेव	पिपराही	7898695183	भिच्छाटन / खेती	50
4	उमेश बासदेव	पिपराही	9981799873	भिच्छाटन / खेती	50
5	रवि बासदेव	पिपराही	.....	भिच्छाटन / खेती	53
6	बबलू बासदेव	पिपराही	.....	भिच्छाटन / खेती	28
7	लक्ष्मण बासदेव	पिपराही	.....	भिच्छाटन / खेती	27
8	रामलखन बासदेव	पिपराही	.....	भिच्छाटन / खेती	47
9	दानेन्द्र बासदेव	पिपराही	.....	भिच्छाटन / खेती	54
10	रामानुज बासदेव	पिपराही	.....	भिच्छाटन / खेती	60
11	अनुज बासदेव	पिपराही	.....	भिच्छाटन / खेती	45
12	कैलाश बासदेव	पिपराही	.....	भिच्छाटन / खेती	55
13	बब्बू बासदेव	पिपराही	.....	भिच्छाटन / खेती	45
14	संतोश बासदेव	पिपराही	.....	भिच्छाटन / खेती	47
15	रामसखा बासदेव	पिपराही	.....	भिच्छाटन / खेती	32
16	दादूलाल बासदेव	पिपराही	8085854336	भिच्छाटन / खेती	38
17	मनीलाल बासदेव	पिपराही	.....	भिच्छाटन / खेती	29
18	पृथ्वीराज बासदेव	पिपराही	.....	भिच्छाटन / खेती	39
19	पवन कुमार बासदेव	पिपराही	.....	भिच्छाटन / खेती	41
20	छुगन्ने बासदेव	पिपराही	.....	भिच्छाटन / खेती	45
21	शिव शरण बासदेव	पिपराही	.....	भिच्छाटन / खेती	35
22	गोविन्द बासदेव	पिपराही	.....	भिच्छाटन / खेती	62
23	छोटे बासदेव	पिपराही	.....	भिच्छाटन / खेती	61
24	राजू बासदेव	पिपराही	.....	भिच्छाटन / खेती	36
25	मोहन बासदेव	पिपराही	.....	भिच्छाटन / खेती	56
26	यज्ञसेन बासदेवे	पिपराही	.....	भिच्छाटन / खेती	64
26	शिव नन्दन बासदेव	पिपराही	.....	भिच्छाटन / खेती	47
27	अमरजीते बासदेवे	पिपराही	.....	भिच्छाटन / खेती	36

बसदेवा गाथा गायन परंपरा में सहभागी प्राइवेट ऑर्गनाइजेशन -

१.इन्द्रवती नाट्य समिति सीधी

२.एक्सट्रीम आर्ट एंड एजुकेशनल सोसाइटी सीधी

३.अंगराग नाट्य एवं लोक साहित्य कला केंद्र लकोंडा सीधी

४.बेस्ट इंटेलीजेंस थिएटर ट्रेनिंग इंस्टिट्यूट सीधी

५.साइलेंट थिएटर एक्ट सोसाइटी सीधी

६.रमा थिएटर ग्रुप गिजवार

७.अनुभूति नृत्य एवं नाटय संस्थान इंदौर

८.रंगपटल परफार्मिंग आर्ट सीधी

९.टाटा शिक्षा एवं समाजिक संस्थान सीधी

१०.प्रगतिशील लेखक संघ इकाई सीधी

११.बघेली लोक कला परिषद सीधी

१२.पहल सामाजिक संस्थान सीधी

१३.देवधरा मानव कल्याण समिति सिहावल

१४.ज्योत्सना जन कल्याण समिति

१५.रैदास सामाजिक कल्याण समिति भमरहा

बसदेवा गाथा गायन परंपरा से सम्बंधित सहभागी व्यक्ति-

१.शिव शंकर मिश्र 'सरस'
२. इंजीनियर आर.बी.सिंह
३. रचना राजे सिंह
४.रोशनी प्रसाद मिश्र
५.नरेन्द्र बहादुर सिंह
६.पुष्पेन्द्र कुमार वर्मा
७.रजनीश जायसवाल
८.करुणा सिंह चौहान
९.प्रजीत साकेत
१०.आरती यादव
११.श्री निवास शुक्ल
१२.आर .डी.सिंह
१३.आशीष सिंह 'दीनू'
१४.बाबू लाल दाहिय
१५. देवेन्द्र पटेल
१६.डॉ.अनूप मिश्र
१७.मीनू सिंह चौहान
१८.विनय सिंह परिहार
१९.भागवत प्रसाद पाठक
२०.बाबूलाल कुंदेर
२१.मनोज पाण्डेय
२२.आदित्य सिंह बघेल
२३.पवन सिंह चौहान
२४.रामनरेश सिंह चौहान
२५.चन्द्रमोहन गुप्त
२६.विक्रम सिंह चौहान
27.अजीत सिंह चंदेल

28.रामबिहारी पाण्डेय
२९.राजकारण शुक्ला
३०.नेहा सिंह कुंदेर
३१.अनामिका सिंह
३२.कविता सिंह चौहान
३३.उपेन्द्र सिंह कुशराम
३४.प्रवीण पाण्डेय
35.सुन्दर लाल सिंह
३६.ध्रुव सेन सिंह चौहान

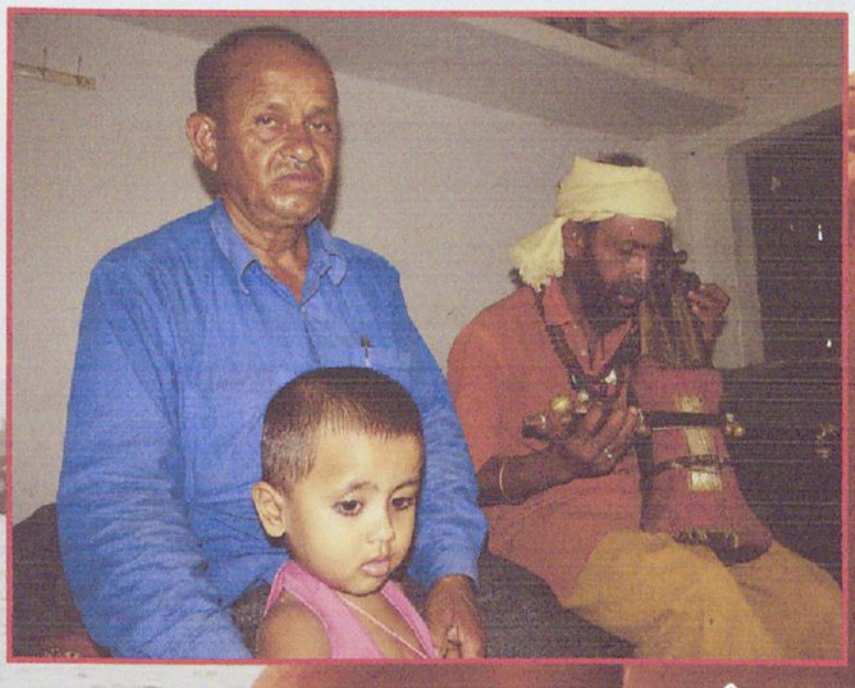

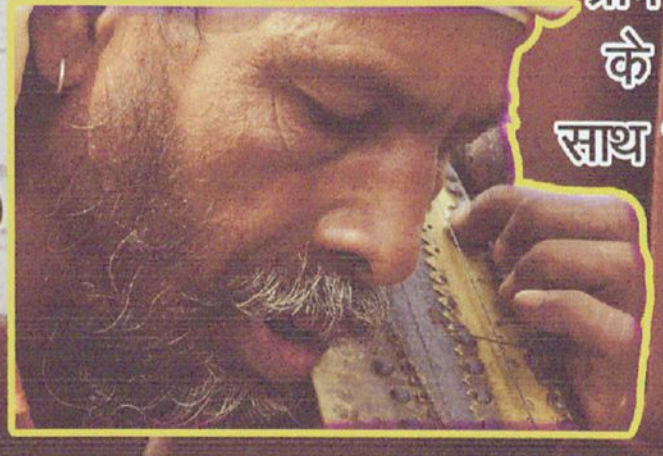

ग्राम – कोडरा, बसदेवा गाथ गायन के लाकार राम गोपाल वासदेव के साथ साक्षात्कार करते हुए नीरज कुन्देर

ग्राम – पिपराही, बसदेवा गाथा गायन के कलाकार
रामस्वरूप वासदेव के साथ साक्षात्कार करते हुए नीरज कुन्देर

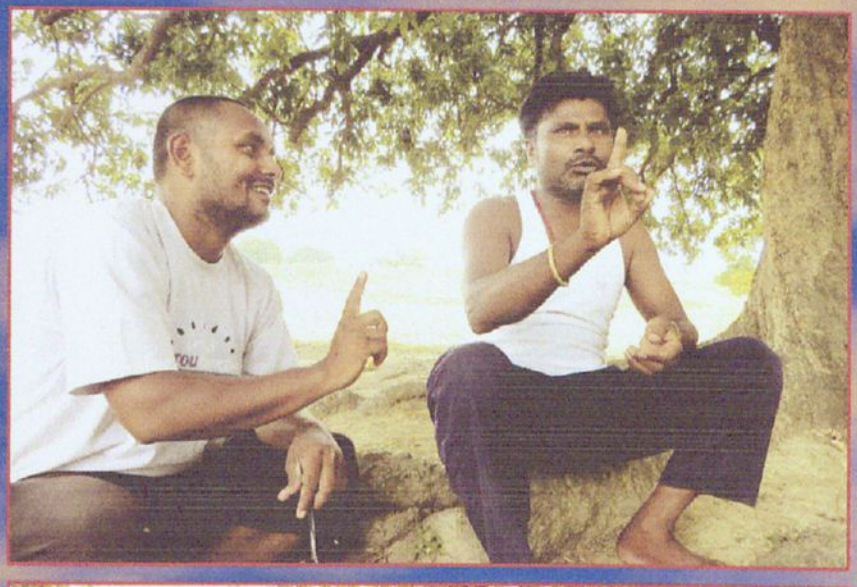

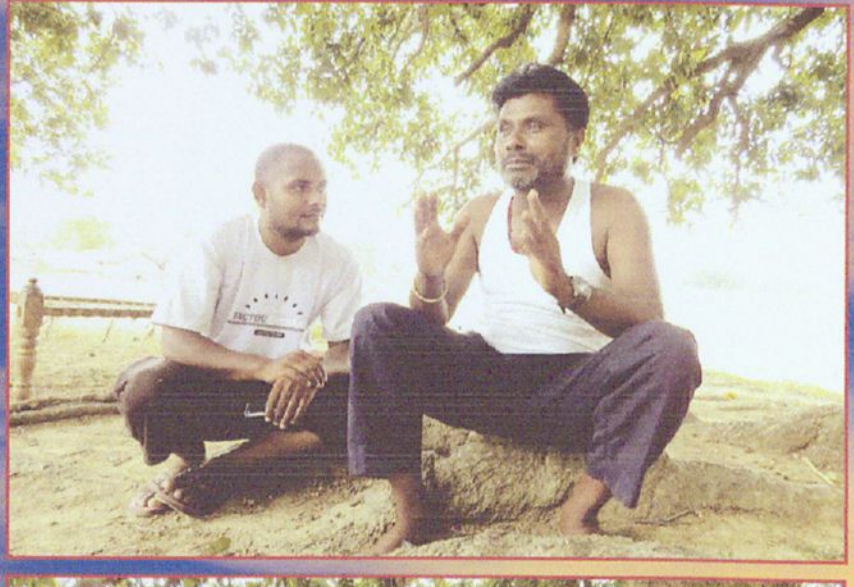

ग्राम – पिपराही, बसदेवा गाथ गायन के कलाकार,
रामस्वरूप वासदेव के साथ साक्षात्कार करते हुए नीरज कुन्देर

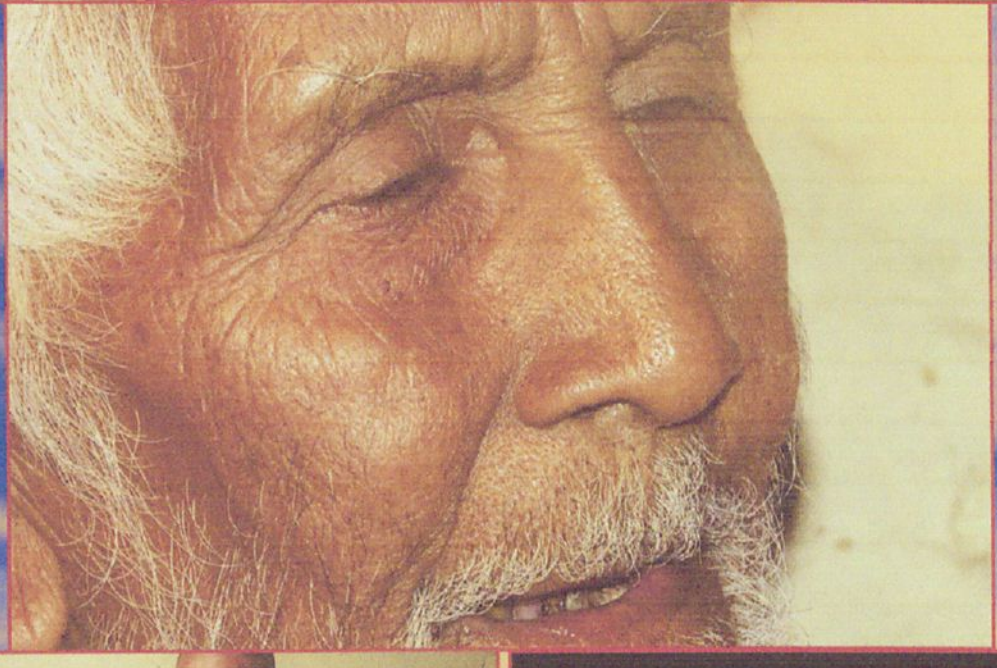

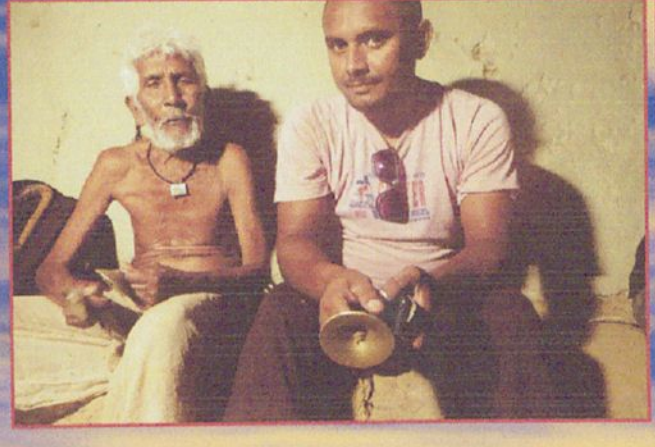

ग्राम – भटहा, बसदेवा गाथा गायन के कलाकार,
गैवीनाथ वासदेव के साथ साक्षात्कार करते हुए नीरज कुन्देर

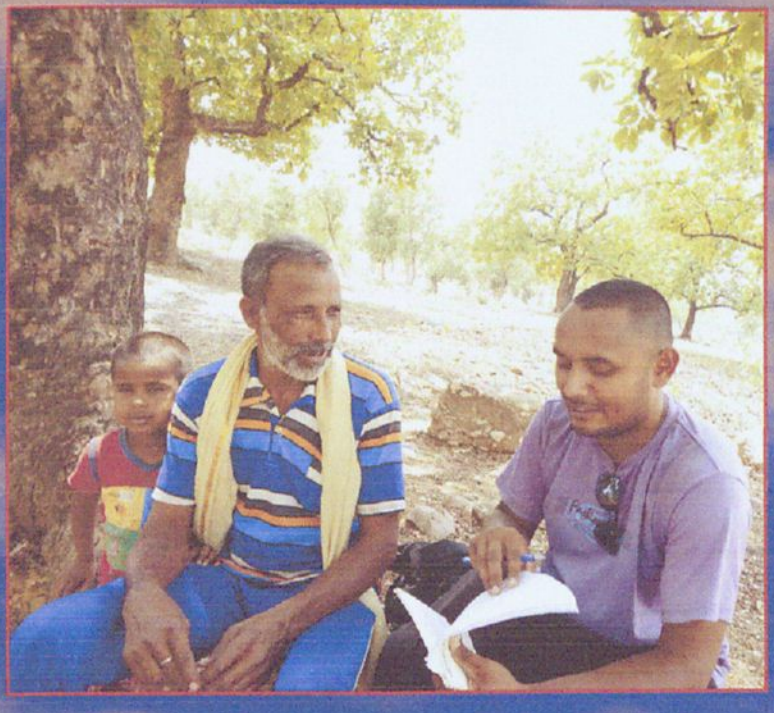

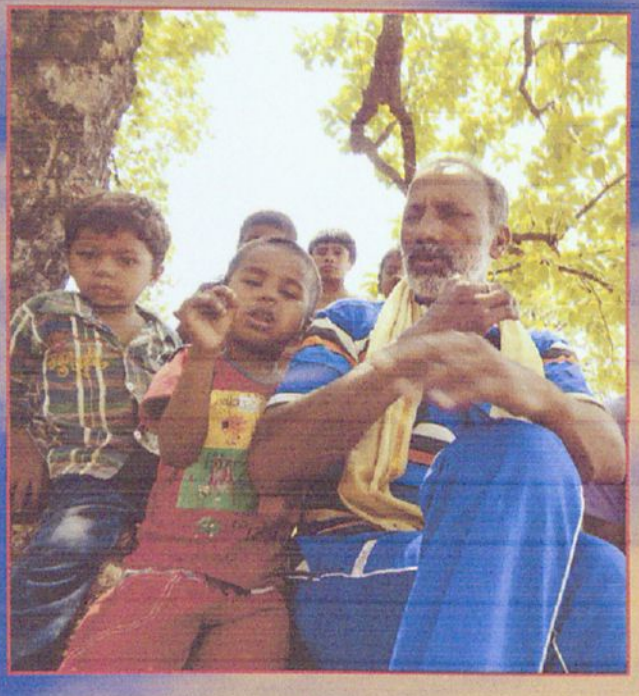

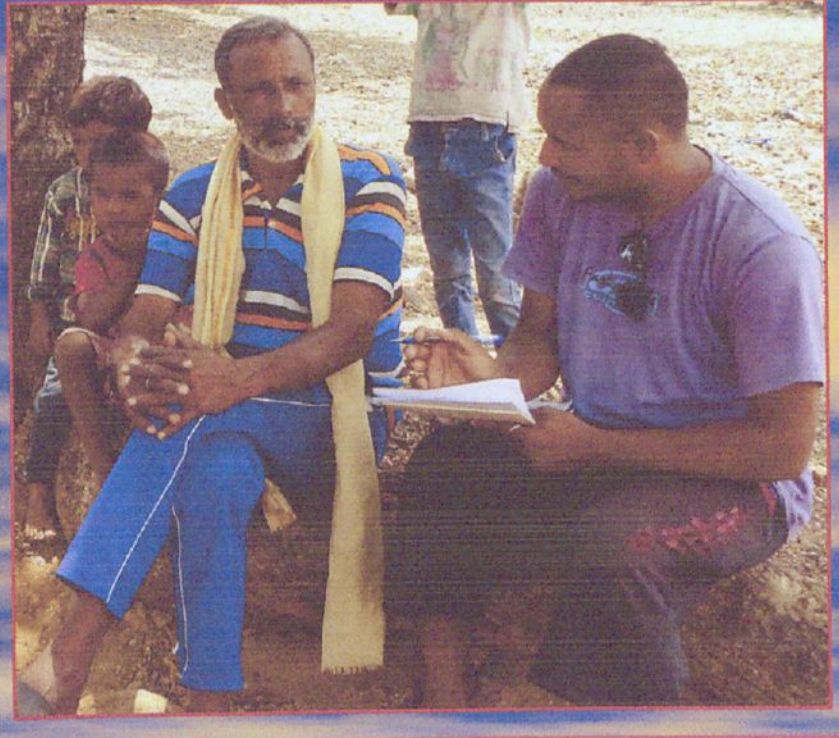

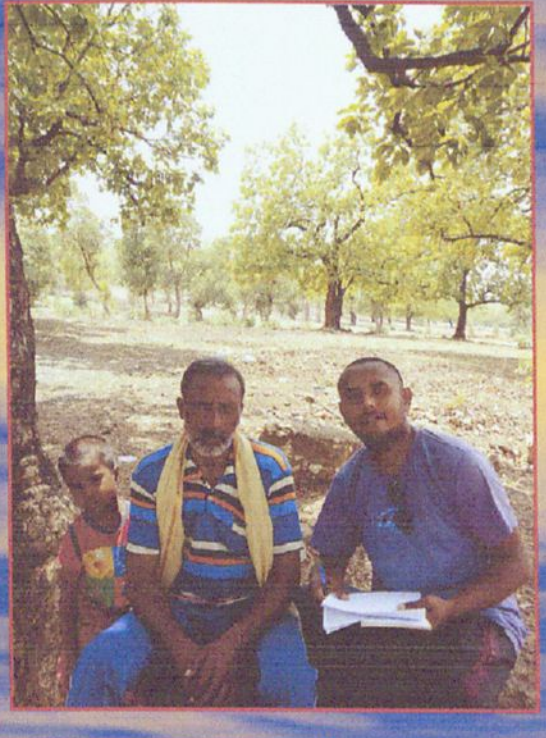

ग्राम – जमुआर, बसदेवा गाथा गायन के कलाकार,
अनूप लाल वासदेव के साथ साक्षात्कार करते नीरज कुन्देर

बसदेवा गाथा गायन की
प्रस्तुति देते कलाकार

बसदेवा गाथा गायन परम्परा कलारूप के आगामी शोध बिंदु

बसदेवा गाथा गायन परम्परा बघेलखंड की इकलौती ऐसी कलारूप है जिसमे तमाम लोकनायको की गाथाये गायी जाती हैं |अमूर्त सांस्कृतिक विरासत/परम्परा के अंतर्गत चुने गये बसदेवा गाथा गायन कलारूप का शोध कार्य नीरज कुंदेर द्वारा संगीत नाटक अकादमी द्वारा दिए गए निर्देशों के आधार पर किया गया है | आगामी दिनों में गाथा गायन का शोध कार्य निम्न बिन्दुओं के आधार पर पूरा किया जाना है-

1.गाथा गायन के प्रतिनिधि कलाकारों का साक्षात्कार व समुदाय की जीवन शैली का दस्तावेजीकरण |

2.गायी जाने वाली कथाओं का लेखन कार्य |

3.बसदेवा गाथा गायन शैली के कथ्य रूप और लोक प्रसिद्ध कथाओं के कथ्य का तुलनात्मक अध्यन कार्य |

4.बसदेवा जाति का ऐतिहासिक ,सामाजिक ,सांस्कृतिक अध्ययन |

5.बसदेवा जाति की जातिगत प्रथाओं ,रीतियों व जीवन शैली का अध्ययन |

6.गायन रूपों का ऑडियो ,वीडियो दस्तावेजीकरण |

7.बसदेवा और हरबोलों की परम्परा का तुलनात्मक अध्ययन |

8.गाथा गायन के वाद्ययन्त्रो का संग्रह कार्य |

9. गाथा गायन की हो रही मंचीय प्रस्तुतियों का दस्तावेजीकरण |

10.सम्बंधित समुदायों का अध्ययन |

आमूर्त सांस्कृतिक विरासत शोध कार्य

भाग-2

2016

24/11/2016
ICH

नीरज कुंदेर , सीधी द्वारा आमूर्त सांस्कृतिक विरासत
अंतर्गत चयनित कलारूप

बसदेवा

का शोध कार्य भाग-2 प्रस्तुत है |

अंतिम अनुमोदन हेतु अग्रेषित
31/3/17
31/7/17

प्रस्तुती प्रस्तुति

नीरज कुंदेर

MO. 09926094042

e-mail – indravatidramasociety@gmail.com

प्रति,

श्री सुमन कुमार

उप सचिव (नाटक)

संगीत नाटक अकादमी, नई दिल्ली

विषय- आमूर्त सांस्कृतिक विरासत अंतर्गत चयनित **बसदेवा गाथा** का शोध कार्य भाग-2 प्रस्तुत करने के सम्बन्ध में

मान्यवर.

आमूर्त सांस्कृतिक विरासत अंतर्गत बघेलखंड के परिप्रेक्ष्य में अकादमी द्वारा बसदेवा गाथा गायन परम्परा को शोध कार्य के लिए चुना गया था | चयनित कलारूप का शोध कार्य रिपोर्ट भाग-1 अकादमी द्वारा दिए गए निर्देशानुसार जमा किया जा चुका है | कलारूप का शोध कार्य भाग-2 की रिपोर्ट मैं आप तक प्रस्तुत कर रहा हूँ |

अतः माननीय से निवेदन है कि कार्य को स्वीकार कर उचित मार्गदर्शन दें |

निवेदक

नीरज कुंदेर

मोब. 9926094042

शोध कार्य भाग-2

मध्यप्रदेश राज्य में बघेलखंड क्षेत्र के परिप्रेक्ष्य में **नीरज कुंदेर, सीधी** द्वारा आमूर्त सांस्कृतिक विरासत अंतर्गत शोध कार्य के लिए चुने गए ....

बसदेवा

गाथा गायन परम्परा का शोध कार्य भाग-2 प्रस्तुत है |

इसके पूर्व शोध कार्य भाग-1 आकादमी को भेजा जा चुका है |

चयनित कलारूप विषयान्तार्गत चर्चा हो इसके पूर्व बघेलखंड की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि और परम्परा का संक्षिप्त परिचय दे दूं।

बघेली लोक कलारूप

बघेली गीतों का विभाजन

1. **संस्कार गीत** (जन्म, उपनयन, विवाह, मृत्यु चार संस्कारों के कुल 48 प्रकार के गीत)
2. ***ऋतु गीत*** (वर्षा, हिंडोला, बारहमासा, कृषि, क्वांर स्नान व कार्तिक मास से चैत मास तक के कुल 6 प्रकार के गीत)
3. ***अनुष्ठानिक गीत /देवी गीत*** (3 प्रकार)
4. ***श्रम गीत*** (बघेलखंड में टप्पा, झोलइयाँ, मलेलबा, ददरिया, सैरा, बनजोरबा, ठड़गिता मिलाकर 7 प्रकार
5. ***यात्रा गीत***
6. ***जातीय गीत*** (अब तक के शोध कार्य में लगभग 11 प्रकार
7. ***खेल गीत*** (107 प्रकार के बघेली खेलों में से 13 खेलों के गीत प्राप्त हुए हैं।)
8. ***मंत्र गीत*** (विभिन्न मन्त्र गीत लगभग 17 प्रकार
9. ***अन्य गीत*** (कबीर, कथा व नृत्य आदि के गीत)

बघेली लोक कथाओं कि विषय वस्तु

१. पशु –पक्षी सम्बंधित कथाएं

२. जानवरों सम्बंधित कथाएं

३. नीतिपरक कथाएं

४. धर्म संबंधी कथाएं

५. स्थानीय देवताओं सम्बंधित कथाएं

६.जातिगत कथाएं

७.भूत-प्रेत संबंधी कथाएं

८.जातक कथाएं

९.प्रेम परक कथाएं

१०.युद्ध संबंधी कथाएं

११.खेती किसानी संबंधी कथाएं

बघेली गाथा गायन रूप-

१.चदैनी

२.छाहुर

३.ललना

४.चंदनुआ

५.पदुम कंधइया

६.गढ़ केउंटी

७.रेवा–परेवा

८.भरथरी

९.नल-दयमन्ती

१०.राजा हरिश्चन्द्र

११.गोंडी

१२.शिव-पार्वती

१३.रानी केतकी

१४.आल्हा

१५.बनजोरबा

६.ढोला म्हारू

१७.बसामन मामा

१८. बाना गीत

१९. कर्ण गाथा

२०. बसदेवा (यह गाथा गायन कि शैली विशेष हैं जिसके अंतर्गत 5 अलग-अलग लोक नायको की कथा कही जाती हैं)

नोट- अभी जातिगत गाथाओं कि तलाश जारी हैं|

बघेली कहावतों की विषय-वस्तु-

१.कृषि संबंधी कहावते

२.नीतिपरक कहावते

३.जातिगत कहावते

४.पशु-पक्षी संबंधी कहावते

५.धर्म संबंधी कहावते

६.राजवंश संबंधी कहावते

७.तकनीक संबंधी कहावते

बुंदेलखंड के लोक नृत्य-

१.करमा

२.शैला

३.गुदुम्ब-बाजा

४.अहिराई

५.अहिराई–लाठी

६.केहरा

७.सजनई

८.जेड़ी

९. कोलदहका

१०. मटकी

११.भगोरिया

१२.भीली

१३.ददरिया

१४.सुआ-रीना

१५. देवारी-छौंका

१६.चमरौंही

१७.धोबिआई

१८.कोंहरौंहीं

१९.जवारा काली नृत्य

२०.लहलेंदबा

२१. बरिहौंही

२३. बाघ नृत्य

२४. दुल-दुल घोड़ी नृत्य (लिल्ली घोड़ी नृत्य)

२५. शैला–डंडा

२६. छपैया

२७.अगुआनी

२८. लागा

२९. राई

३०. कलशा

३१. बैगा फाग नृत्य

३२. शैला-रीना

३३. अहिर नाचा

३४. परघौनी

३५. झकझुलिया आदि |

नोट- जातिगत नृत्य रूपों पर शोध जारी है |

बघेली शिल्प कला-

१.बांस शिल्प

२.काष्ठ शिल्प व पत्थर शिल्प

३.लौह शिल्प

४. मिट्टी शिल्प

बघेली चित्रकला व अंग अंकन

१.आदिवासी पेंटिंग

२.भित्ति चित्र- (बैगा, गोंड, घसिया, कोल, ढोलिया आदि के भित्ति चित्र)

३. गोदना कला

बसदेवा परिचय -:

बसदेवा गाथा गायन परंपरा बघेलखण्ड, बुंदेलखंड, मध्यप्रदेश व सीमावर्ती छत्तीसगढ़ की गाथा गायन परंपरा है | मध्यप्रदेश के उत्तरपूर्वी भाग में बघेलखंड अंचल स्थिति है, इसके अंतर्गत सीधी, रीवा, अनूपपुर, सिंगरौली, शहडोल, सतना, उमरिया, उत्तरप्रदेश का सोनभद्र जिला व साथ ही पूर्वी इलाहबाद का क्षेत्र शामिल है| बसदेवा गायन यह एक जाति विशेष "बसदेवा द्वारा गायी जाती है जो बघेलखण्ड के जमुआर, चुरहट (भटहा) बैकुण्ठपुर (रीवा) खाडडी (नवानगर) पिपराही (सीतापुर) आदि जगहो पर निवासरत है | बसदेवा का सीधा अर्थ बासदेव से है | बासदेव कुए की जगत पर उगने वाले पीपल के वृक्ष को कहते है | बासदेव इसी पीपल के वृक्ष को अपना पूर्वज मानते है | बसदेवा एक दूसरा सम्बंध यदुवंशी राजा कृष्ण के पिता से भी बताते हैं | इनकी उत्पत्ति के संबंध मे लोक मिथ्य है की ये चक्रवर्ती सम्राट राजा दशरथ के काल के हैं | श्रवण कुमार जिन दिनो अपने बूढ़े माँ -बाप को तीर्थ यात्रा पर ले जा रहे थे उसी समय तीर्थ यात्रा के दौरान एक दिन वो घनघोर जंगल मे ही मॉ-बाप के कहने पर वो घनघोर जंगल मे ही विश्राम के लिए रूक जाते है | कुछ देर बाद वहा उन्हे एक बच्चे के रोने की आवाज सुनाई देती है | मॉ-बाप के कहने पर वो बच्चे की तरफ जाते हैं | वो देखते है कि पीपल के पेड़ के नीचे एक बालक पड़ा है और आस-पास कोई नही है | बच्चे को उठा कर कुछ देर तक आस-पास उसके मॉ-बाप को आवाज देते है जब कोई नही दिखता तब वो उसे अपने साथ रख लेते है | उसे उन्होने बासदेव पीपल के पेड़ के नीचे से उठाया था इसलिए उसका नाम बासदेव रख दिया | धीरे-धीरे दिन बीतते गये एक दिन वो अयोध्या के वनो की तरफ जाते है और वही दशरथ के शब्दभेदी बाण द्वारा श्रवण कुमार की मत्यु हो जाती है और वह बालक अकेला हो जाता है | तब से वह छोटा बालक श्रवण कुमार की दारूण गाथा को गा-गाकर अपना भरण-पोषण करने लगा | कालांतर में इसी परंपरा में मिल होने वाले व उस बासदेव के वंशज बसदेवा कहलाये एवं उनके द्वारा गायी जाने वाली गायन शैली को बसदेवा गायन कहा जाने लगा |

एक और किंवदन्ती के अनुसार यह बासदेव परंपरा के लोग यदुवंशी राजा बासदेव के वंशज है | महाभारत युद्ध के पश्चात कृष्ण ने स्वयं अपने पूरे वंश का विनाश कर दिया,लेकिन राधा के वंश परंपरा के लोग कृष्ण के इंतजार में रहे | वो उनके गीत गाते और कृष्ण और राधा की मूर्ति सिर पर बांध कर प्रेम विरह गीत गा-गाकर भिच्छाटन का कार्य करने लगे | वो अपने आप को राधा कृष्ण के अनुचर मानते थे | कृष्ण पुरूष प्रधान होने के कारण वो अपने आप को बासदेव से जोड़ने लगे | यह बासदेव यदुवंशी परंपरा के लोग हो सकते है लेकिन कृष्ण-राधा की मूर्ति सिर पर पागा में बाधने का चलन कृष्ण-राधा के प्रेम प्रसंग को ख्याति मिलने के बाद ही शुरू हुआ होगा |

कहा जाता है कि वो कृष्ण की तरह मोर पंख भी बांधा करते थे | लोक में मूल रूप से बसदेवा गायन भोर के ऊषा प्रभात के आस-पास से शुरू होता है | जैसे ही पूर्व में सूरज की लाली छिटकती है| बसदेवा अपने-अपने

झोपड़ियो में प्रवेश कर जाते है | बसदेवा एक जगह स्थाई रूप से घर बनाकर निवास करते है भिच्छाटन के लिए ठंड के चार महीनों को वो उपयुक्त समझते है | इन चार महीनो में वो अपने पूरे परिवार के साथ घर में ताला लगा कर बाहर निकल जाते है | किसी अन्य दूर गॉव मे अपना डेरा डालते है फिर वहॉ से आस-पास के सभी गावों में भिच्छाटन करते है इसके बाद फिर कही और डेरा डाल दूसरी अन्य जगहो पर भिच्छाटन आरम्भ करते है | सुबह 3 बजे के आस-पास वो अपने डेरे से निकल कर भिच्छाटन करने जाते है | वो मुख्य रूप से श्रवण कुमार की कथा गा-गा कर सुनाते है | गायन के वक्त उनके हाथ में वाद्ययंत्र् के रूप में मात्र् पैंजना और खुट-खुटी खड़ताल रहता है | सिर पर राधा-कृष्ण की व शंकर-पार्वती की मुकुट रहती है | गेरूआ रंग की कुर्ता-धोती और सर पर चमकीले-गेरूये कलर में सिर पर पागा | यह अलग तरह का पागा है | पागा के साथ-साथ चुन्नटदार एक कपड़ा पागा से जुड़ा होता है | जिस पर पीतल की मूर्तिया बांधी जाती है | कालांतर मे इस गाथा गायन परंपरा मे अन्य लोक नायकों / देवताओं की कथाएँ गायी जाने लगीं | बासदेव ठंड के दिनों में घर-घर जाकर श्रवण कुमार की कथा कहते है बदले में भिच्छा प्राप्त कर दिन निकलने से पहले वापस झोपड़ी में आ जाते हैं | लोक मिथ्य है की दिन निकलने के बाद इन्हे देखना अशुभ है | अब बासदेव परंपरा के लोग भिच्छाटन गायन के अलावा तरह-तरह के काम धंधे करने लगे है | जैसे छत्तीसगढ़ में पाई जाने वाली बसदेवा जाति के लोग जूट-पटसन के थैले बनाते है और कुछ लोग अब भी गायन परंपरा से जुड़े हैं| इनके वाद्ययंत्रों की बात करे तो मूल रूप से खुटखुटी और पैंजना ही वाद्ययंत्र् है,लेकिन भिच्छाटन को मजबूती प्रदान करने के लिये इन्होने अपनी गायन शैली में थोड़ा बदलाव किया और ये निर्गुण भजनों को सारंगी के साथ गाने लगे| निर्गुण भजनों में कबीर की उलटवांसिया प्रमुख है |

बसदेवा कृष्ण की पंरपरा से भी संबध रखते हैं | लोक में एक बार और वो कृष्ण के प्रेम प्रंसगो का सहारा लेते है | वो कहते है कि- कृष्ण एक बसोर(बांस का बर्तन बनाने वाले जाति विशेष की लड़की से प्रेम करते थे)प्रेम प्रसंग शारिरिक संबध तक पहुच चुका था | ऐसे में लोक-लाज को ध्यान में रखते हुए बसोर कन्या ने कृष्ण के समक्ष विवाह का प्रस्ताव रखा,लेकिन कृष्ण ने विवाह के लिए हां नही की बल्कि यह सांत्वना दी की हमारा तुम्हारा प्रेम लोक में अमर रहेगा | कृष्ण ने कहा की हम तुम्हें अपने होठो से लगा के रखेगें और तब से वो बासुरी के रूप में उसे स्वीकार करते है | बासुरी का संबध वो बसोर जाति के जातिगत कार्य बांस के बर्तन बनाने से करते है | बघेलखंड मे विरह गीत हिंदुली की कथावस्तु भी एक राजकुंवर और बसोर की लड़की से प्रेम व विरह की कथा कहती है | कहा जाता है कि- इसी बसोर की वंश पंरपरा व उसकी विरह कथा को गाकर कहने वाले लोग बासदेव की पंरपरा में शामिल है | वहीं यह सिर पर मुकुट बांधने को महाराजा उग्रसेन के वंश पुत्र् बासदेव के मुकुट पहनने से स्वीकारते हैं | वो कहते है कि हमारे पूर्वज बासदेव मुकुट पहना करते थे,राजवंश खत्म होने के बाद हम गायक दलो ने इस पंरपरा को अपने बीच जीवित रखा है | यह परंपरा मूल रूप से गायिकी प्रधान है परन्तु साथ ही साथ इसमे अभिनय पक्ष भी उतना ही मजबूत नजर आता है जितना की गायिकी पक्ष |इसका मुख्य गायक गाते हुए अभिनय करता है | इसका कारण कही भी यह अरुचिपूर्ण या ऊबाऊ नहीं प्रतीत होता यह इसके प्रदर्शन पक्ष की विशेषता है | बसदेवा गाथा गायन परंपरा का अपना ऐतिहासिक महत्त्व है | बसदेवा एक जाति विशेष है जो यदुवंशी

कृष्ण के वंशज हैं श्रवण के मृत्यु के पश्चात् ये श्रवण कि वेदना पूर्ण कथा घर –घर सुनाने लगे |कहा जाता है की - यह श्रापित जाति है जो अलस्सुबह उठकर घर गर जा कर गायन करते है और सूरज उगने से पहले ही अपने ठिकाने की ओर लौट आते है यह प्रथा अब धीरे धीरे बंद होती जा रही है लेकिन गायन आज भी जस का तस उन्ही परम्परओ के नक़्शे कदम पर चला आ रहा है |इस गाथा गायन परंपरा के लोग पुरातन से श्रवण कुमार की गाथा को गाते चले आ रहे है | बसदेवा पीपल के वृक्ष के नीचे मिला बालक था जिसे श्रवण कुमार ने पाला बसदेवा कृष्ण के प्रेम प्रसंग मोर मुकुट पहनने बासुरी को होठो पर हमेशा रखने वाले गूढ़ रहस्यों को उद्घाटित करता है |यह महाभारत काल में हुए भीषण नरसंहार के बाद उपजे प्रकृति के असंतुलन की बात करता है यह राधा के विरह स्वरूप उपजे विशेष लोग है जिन्होंने बाद में अपना एक स्वतन्त्र समाज निर्मित किया |

बसदेवा गाथा गायन एक अत्यंत समृद्धशाली मौखिक परंपरा है। जैसा की ऊपर कहा गया है बसदेवा गाथा गायन आगे चलकर एक गायन परंपरा के रूप में स्थापित हुई जिसमें अन्य लोक नायकों/देवताओं की गाथा गायी जाने लगी। वर्तमान में इस शैली के अंतर्गत निम्न लोक नायकों/देवताओं की गाथा गायन भी की जाती है |जो निम्नवत हैं –

1- सरवन गाथा
2- हरिश्चंद्र गाथा
3- मोरध्वज गाथा
4- भार्तिहरी गाथा
5- मोती कुवर गाथा
6- कृष्ण लीला
7- सती अनुसुइया
8- राम वनवास
9- कबीर की उलट बसिया
10- नल दयमन्ती
11- केवट प्रसंग
12- शिव विवाह
13- ढोला म्हारू
14- भरथरी गाथा गायन

बसदेवा छत्तीसगढ़

बसदेवा कथा गायकों की सबसे बड़ी बस्ती चिरहुलडीह, रायपुर में हैं जहां लगभग 800 बसदेवा परिवारों का निवास हैं इनमें से लगभग 200 कथा गायकों ने अपनी कला परम्परा का निर्वाह करते हुए छत्तीसगढ़ को कथा, आख्यानों से लगातार गुंजित किया है। छत्तीसगढ़ के निरगुनिया कबीर पदों के संकलन के लिए 1984 में रायपुर के आमापारा चौक पर चिरहुलडीह के निकट रहने वाले गायकों ने बताया था कि पास ही बसदेवा समुदाय के लोग रहते हैं। जो किसी समय कर्वधा से स्थानांतरित हुए थे और छत्तीसगढ़ अंचल में उनकी सबसे अधिक संख्या इसी चिरहुलडीह बस्ती में है।
विजय चौक से दुर्ग की ओर जाने वाली सड़क पर जाते हुए आमापारा के आगे सब्जी बाजार से लगा हुआ रामकुंड मोहल्ला है। इसके आगे जाने पर चिरहुलडीह मोहल्ला दीखने लगता है। नये नवेले लोग इस नाम को लगभग नहीं जानते हैं पर कभी इसे बसदेवा पारा भी कहा जाता था। हीरोहांडा की ऐजेन्सी की बाजू की गली से जायें तो एक दूसरी ही दुनिया दीखने लगती है। गली के दायें तरफ की सपाट दीवार और बायें तरफ सांस लेता जीवन, छोटे-छोटे डिब्बेनुमा मकानों की तंग गलियां, गलियों के पतलेपन के आकारों में सिमटे दुबले-पतले बच्चों के खेलते-कूंदते नगें पावों की आहट और किलकारियों से गूंजता मोहल्ला लेकिन, आदमी के पसीने और सघन बसाहट से उपजी गंध शहर को इससे अलग करती महसूस होती है।

आगे जाने पर पीपल के विशाल वृक्ष के नीचे नये निर्मित शीतला मंदिर दीखता है और उसके दूसरे बाजू पान की दुकान पर पूछने पर कि क्या यही बसदेवाओं की बस्ती है। वह कहता है कि हां ये जो सीमेन्ट गेट देख रहे हो यही है से है बसुदेव की बस्ती।

बसुदेव की बस्ती का द्वार अभी कुछ दस-पन्द्रह साल पुराना है सीमेंन्ट से निर्मित है। उस पर लिखा है "'जय मां काली मंदिर बसदेव पारा' मंदिर का पत्थर बताता है कि यह मंदिर 13 नवम्बर 1879 विक्रम संवत् 1936 माघ कार्तिक कृष्णपक्ष तिथि चतुर्दशी दिन गुरूवार को सिपाही लाल वासुदेव द्वारा प्रतिष्ठित किया गया था। बाद में 1997 में इसका जीर्णोद्धार किया गया। मंदिर में काली माता विराजित हैं। मंदिर में ही पीपल का पेड़ उगा है और शिव की पिंडी पूजित है।

बसदेवा स्थायी आवास वाले किन्तु भ्रमणशील चरित गायक हैं। भारतीय संस्कृति के आदर्श-उदात्त और नैतिक चरित्र बसदेव गायकी के आधार हैं। अत्यंत पिछडी दशा और अभावों में जीवने के बावजूद ये सदियों से अपनी गायकी के माध्यम से जनमानस को शिक्षित और संस्कारित करते रहे हैं। जीवन के उदात्त मूल्यों की रक्षा के साथ उनका पोषण और संर्वधन करते रहे हैं। आज बदली हुई परिस्थिति में भी ये ऋतु चक्र के साथ अपने निश्चित पारंपरिक जीवन कर्म में रत हैं। अपने एकमात्र गायन कम्र के प्रति ये शंका और पुनरावलोकन के दौर से गुजर रहे हैं बावजूद इसके अधिसंख्य बसदेव स्वयं के काम के प्रति अटूट विश्वास और गहन आस्था के कारण सामाजिक सरोकार का निर्वाह कर रहे हैं।

'हरबोले' और 'जय गंगान' बसदेवा गायकी की टेक से लिए गये शब्द हैं इन टेकों को गायकी में इस्तेमाल के कारण बसदेवों को हरबोले ओर जय गंगान के नाम से अभिहित किया जाता है। भटरी, भाटगिरी से बना है और बाभन कर्मगत विशेषण हैं। बसुदेव के भजन कीर्तन करने वाले लोग बसदेवा कहलाये किन्तु वे बसदेवा जो श्रवण कुमार की गाथायें गाते हैं। वे बसदेवा के अंतर्गत श्रावणी ब्राम्हण कहलाते हैं।

रामकुंड तालाब

बसदेवा गंगा नदी के किनारों के पुरातन निवासी रहे हैं। वैदिक काल में यज्ञ में के विविध अनुष्ठानों के बीच बीच आख्यानों की परम्परा थी। लगभग 36 आख्यान तो गाये ही जाते थे। इस तरह राजस्थान से चली लोककथाओं, गाथाओं की धारा पूरे गंगा क्षेत्र में फैली। प्रदेश में फैली महामारी के भंयकर रूप से प्रत्येक जाति के लोगों ने पलायन किया और इसीलिए बसदेवा बघेलखण्ड की भूमि पर प्रवेश करते हुए गोंडवाना की धरती पर अपनी गाथाओं को गंुजाने लगे। पश्चात भौरमदेव की छाया में लम्बे समय तक पीढ़ियों का सरंक्षण हुआ। रायपुर के क्षेत्र की धार्मिक भाव प्रवण जनता के आदरभाव से प्रभावित होकर कर्वधा से बसदेवाओं के समूह रायपुर के रामकुंड तालाब के पास एकत्र हुए और यहीं का आवास उन्हें भाया आखिर रामकुंड तालाब के पास के विविध धार्मिक स्थल में पंचेश्वर महादेव मंदिर, गोरखनाथ महादेव, औघड़नाथ महादेव तथा भूतनाथ महादेव मंदिर के मंदिरों में गूंजती भक्ति धारा ने बसदेवाओं के लिए एक आदर्श स्थान सिद्ध किया और वे स्थायी रूप से यही बस कर छत्तीसगढ़ के सुदूर ग्रामों तक अपने यजमान खोजने लगे और परिवेश को संगीत और आख्यानों से सत्यालोक से परिचित कराने लगे।

पंचेश्वर महादेव, रामकुंड

पान की दुकान पर ही बजरंग से मुलाकात होती हैं वे मंदिर तक मुझे ले आते हैं। मैं कैमरा से चित्र लेता हूं तब तक बस्ती के कुछ लोग आ मदिर के पटिये पर जमा हो जाते हैं। मजमा लग जाता है मैं बैग से कापी-पेन निकाल उनसे चर्चा करने लगता हूं।

बसदेवा लगभग 200 साल से इस बस्ती में रहते हैं हमारे पूर्वज भी कर्वधा से यहां स्थानातरित हो यहां पहुंचे थे। तब यहां बस रामकुंड तालाब था जिसके चारों ओर आम के विशाल वृक्ष थे वह आमापारा भी कहलाने लगा था। तब यहां से रेल्वे की लाईन देखी जा सकती थी। अब यहां लगभग 800 परिवार रहते हैं। हर घर में लोग अधिक हो गये। जगह की कमी हो गई है। कुछ परिवार चंगोरा भाट रहने चले गये। छत्तीसगढ़ में

उनकी जानकारी में पिथौरा, चैरेंगा, मुसुआ में, बछेरा, नवागांव, अकलतरा, धमतरी, कांकेर में कुछ अशतः सरगुजा के अंबिकापुर में में केदारपुर के पास इनकी बस्ती है। कुछ बसदेवा बस्तर में भी हैं। मलाजखंड के पौनी, महाराष्ट्र के वर्धा में भी वासुदेवाओं की बस्ती बसी है।

बसदेवाओं का मुख्य कर्म गायकी है और अशतः व्यवसाय। गायकी के सिलसिल में वे अपने स्थायी आवासों से चार मास के लिए बाहर निकलते हैं और दूर-दूर के नगर ग्रामों की यात्रा करते हैं। अपने जाने पहचाने जजमानों को भूलते नहीं ओर दान की अनूठी परम्परा के सम्बंध को पुनः पुनः दोहरा कर उस सत्य की प्रतीति के बदले अपने दान की महिमा का भी बखान करते हैं। आख्यान की परम्परा व्यक्ति को जीवन के मोक्ष के उन प्रतिमानों की बारंबार याद दिलाती और उस वैराग्य तक ले जाती जब उसके सामने धन-सम्पदा की व्यर्थता का बोध होता। उपजी भावना धर्म और दान के कर्म की ओर उत्साह भरती आकृष्ट करती।
छत्तीसगढ़ की धरती पर स्थायी रूप से बसने का कारण यह था कि मान-सम्मान और दान अन्य जगहों के बनिस्पत अधिक प्राप्त होता है। बसदेवाओं को अधिक सम्मान प्राप्त हआ। साथ ही दान के रूप बर्तन, गहन, कपडे, अन्न और कभी कभी जमीन भी प्राप्त हुई है। बसदेवाओं के लिए छत्तीसगढ़ का लोक मानस इतना अनुकूल लगता है कि उन्हें अपने कलाकर्म और धर्मकर्म की सार्थकता पूर्ण होती लगती है।

बसदेव रामअवतारी, कृष्ण अवतारी, सरमन की कथा, हरिश्चन्द्र की कथा, मोरध्वज की कथा, भरथरी कथा, सती अनुसुईया कथा, शिव विवाह की कथायें गाते है। बीच में याद कर कहते हैं कि 25 साल पहिले रायपुर के किन्हीं द्वारिका नाथ ने भगवान कृष्ण, सरमन और मोरध्वज की कथाओं का उनके गायन से ध्वनि संकलन किया था। और फिर याद करते कहते हैं कि कोई और भी हमारे बारे में जानकारी लेने के लिए आये थे। शायद भोपाल से ही...फिर वे कभी वापस नहीं मिल सके...

वासुदेव कलाकार गाई जाने वाली गाथाओं को उनकी मूल बोली शब्दों में गाते और उसके परिवेश को भी जीते पर छत्तीसगढ़ की जमीन पर रहते हुए यहां के परिवेश की समझ ओर अपने यजमानों के भाषाई व्यवहार को सीख-समझ गये। एक समय जो लोक नाट्य नाचा का था। नाचा जब इस अंचल में जादू बिखेर रहा था तो उस के ताने-बाने ने इन बसदेवा कलाकारों के मन को भी आकृष्ट किया। फुंसत के समय में आत्मप्रेरणा से इस बस्ती में नाचा की गूंज भी गुंजित होने लगी। बस्ती के वासुदेव कलाकारों ने नाचा से प्रभावित होकर एक मंडली भी बनाई थी और नाम रखा था 'वासुदेव नाच पार्टी, रामकुंड' उसमें बल्देव वासुदेव, मानसिंग वासुदेव, मुन्ना वसुदेव, रामादीन वासुदेव, भागीरथी वासुदेव, भगतराम वासुदेव, गिरधर वासुदेव, प्रमुख थे। परी की भूमिका मुन्ना वासुदेव निबाहते, नर्तक रामाधीन वासुदेव, पूरी मंडली ने पहली प्रस्तुति आपने ही मोहल्ले के जन्माष्टमी के आयोजन पर की। इसके प्रदर्शन के बाद यूनिवर्सिटी में, महाराष्ट्र मंडल में, रामकुंड के लावारिन में, ईदगाह भाटा में, शताक्षी मंदिर के पास, सेमरिया और टाटीबंध में इसके प्रदर्शन किए।

अब वासुदेव नवयुवक गाथाओं के पारंपरिक गायन-वादन और चर्या से सरोकार स्थापित नहीं कर पा रहे हैं। विविध दैनिक व्यवसाय में संलग्नता उन्हें इस परंपरा से एक दूरी पैदा करती है। उनके मन में आदर्श सत्य और ज्ञान के पीछे पाया धन एक भिक्षुक के पाये धन का अहसास कराता है।

1980 के बाद पुराने मध्यप्रदेश में हुई कला गतिविधियों में इस बसदेवा पारा का सर्वेक्षण तो हुआ पर किसी भी कलाकार या समूह का नाम न प्रदीप्त हुआ और न कोई सम्मान, शासन ने इस गायक समुदाय के कला संरक्षण लिए कोई ऐसी योजना बनाने में दिलचस्पी भी नहीं ली कि यह परम्परा, परम्परागत रहे। नये छत्तीसगढ़ के अब तक 14 साल बीतने पर यह दूरी और बसदेवाओं का अज्ञातवास पूर्ववत है।

नवयुवकों ने वासुदेव युवा कल्याण समिति बनाई है उसे 2 साल काम करते हो गया है। गनेश, देव, कुलदीप, उमाशंकर, हरिओम वासुदेव युवा शक्ति हैं वे अपने समाज के लिए कुछ आगे करना चाहते हैं अपने भौतिक विकास और परम्परा की अक्षणुता पर पर लक्ष्य क्या हो इस बारे में प्रयासरत हैं।

बसदेवा छत्तीसगढ़ की कथा गायकी और लोक मानस के धार्मिक भावाभिव्यक्ति के सतत् उत्प्रेरक हैं। प्रदेश इनके परम्परागत कथा गायन से सदैव संस्कारित हुआ है। संस्कृति के दृश्यांकित रहने के आधारभूत कार्यों में बसदेवाओं की संलग्नता छतीसग़ढ़ को विशेष बनाती है। छतीसगढ़ का लोक मानस इस समुदाय के गायन कर्म के प्रति सम्मान की दृष्टि रखता है।

बुंदेले हरबोलों के मुंह-

हरबोले बनाम बासदेव-

बघेलखंड के तरह छत्तीसगढ़ के बुंदेलखण्ड-सागर के आस-पास हरबोले नामक परंपरा है जो भी बासदेवा की तरह श्रवण कुमार की कथा कहते है| वो भी भोर के वक्त गीत गाना शुरू करते है| लेकिन बसदेवा परंपरा की तरह वो घर-घर जाकर गीत नही गाते बल्कि वो पेड़ पर चढ़ कर गीत गाना शुरू करते है| ये चिल्ला-चिल्ला कर गीत गाया करते है,तब गांव के सभी लोग उसे भिच्छा दे दे कर उसे पेड़ से उतरने की मिन्नत करते है| तब हरबोले उतरकर अपने डेरे पर चले जाते है वो इनकी गायन परंपरा,गायन शैली व बोल में सिर्फ हर गंगे और हरबोलो में अंतर है| बसदेवा गीत के प्रत्येक दोहे के अंत में हरगंगे और हरबोले, हरिबालो की ठेक लेते है| संभवत: हरबोले परंपरा की ही कालांतर में यात्रा के दौरान भौगोलिक परिवेश बदलने की कारण स्थानीयता प्रभाव से वर्तमान 'हरबोले परंपरा' के रूप में विकसित हुआ होगा। हरबोले परमपरा में गायकों का प्रमुख वाद्ययंत्र - पैंजना, खंजनी(खुटखुटी), सारंगी आदि होता है वहीं ये गेरूआ रंग का कुंता धोती व सिर पर पागा पहनते हैं जिस पागा में कृष्ण-राधा या राम लक्ष्मण की पीतल की मूर्ति लगी होती है

बुंदेले हरबोलों के मुंह हमने सुनी कहानी थी, के बोल आज भी बुंदेलखंड क्षेत्र में गूंज रहे हैं, लेकिन इन किस्से-कहानियों में जान फूंकने वाले बसदेवा या बुंदेले हरबोले अब विलुप्ति की कगार पर पहुंच गए हैं, जिनके जिक्र के बिना भारत के पहले स्वतंत्रता संग्राम की कहानी पूरी नहीं हो सकती।
11 मई 1857 की भारत की आजादी की पहली लड़ाई के 150 वर्ष पूरे हो रहे हैं। इस मौके पर पूरा देश भारत माता के उन सपूतों को याद कर रहा है जिन्होंने अपने-अपने तरीके से देश की आजादी के लिए अपना तन-मन-धन न्यौछावर किया। ऐसे अवसर पर बसदेवाओं व बुंदेले हरबोलों को याद करना उनकी दम तोड़ती परंपरा को नई जिंदगी दे सकता है।
बसदेवाओं द्वारा भारत की आजादी की पहली लड़ाई में दिए गए योगदान के सिलसिले में डा. हरिसिंह गौर विश्वविद्यालय के हिन्दी के प्रोफेसर, लेखक व पत्रकारिता विभाग के अध्यक्ष सुरेश आचार्य ने बताया कि बसदेवा अल सुबह बस्तियों में एक खास धुन में गाते हुए दान लेने जाते थे। अंग्रेजों के खिलाफ मंगल पांडे की आजादी की अलख को गांव-गांव में द्वार-द्वार तक ले जाने में बसदेवाओं ने सक्रिय भूमिका निभाई।

उन्होंने आजादी की लड़ाई के प्रतीक कमल के फूल व रोटी को समाज के कोने-कोने तक पहुंचाया। कहा तो यह भी जाता है कि सुभद्रा कुमारी चौहान की प्रसिद्ध कविता झांसी की रानी की रचना इन्हीं हरबोलों के बखान से प्रभावित रही।

बसदेवाओं के बारे में कहा जाता है कि वे अपने आपको वासुदेव कृष्ण के वंशज मानते थे। तब के वसुदेव ही आज के बसदेवा के नाम से जाने जाते हैं। ये शुरुआत में कृष्ण की लीलाओं पर आधारित गीत गाते थे। बसदेवा समाज की परंपरा का निर्वाह करने वाले लोग खासतौर पर भोर के साथ ही गांवों में लोगों को जगाने का काम करते थे। इसकी एवज में गृहिणियों से अन्न व वस्त्र के रूप में मिले दान से ही ये अपना गुजारा चलाते रहे।

सागर विश्वविद्यालय में समाजशास्त्र विभाग में वरिष्ठ व्याख्याता दिवाकर राजपूत के मुताबिक हालांकि बसदेवा गायकी आज एक लुप्तप्राय सामाजिक परंपरा है पर इसके अपने समय में बड़े गहरे सामाजिक सरोकार थे। उन्होंने कहा कि उस वक्त आज के समान संचार के साधन तो थे नहीं सो सामाजिक व धार्मिक मूल्यों की बातों को गुनगुना सकने वाली आसान सी धुनों के माध्यम से आम जन तक पहुंचाने का असरदार जरिया बन गई थी बसदेवा गायकी।

डा. आचार्य बताते हैं कि बसदेवा सिर्फ अपनी गायकी के अलहदा अंदाज के लिए ही नहीं जाने जाते हैं, उनका रहन सहन व पहनावा भी कुछ कम रोचक नहीं था। जब बसदेवा भिक्षा मांगने के लिए निकलते थे उस समय उनके हाथ में लकड़ी की बनी हुई खड़ताल की टंकार उन्हें लयबद्ध बनाए रखती थी। रंगे सन से बनी टोकरियों को उल्टा कर सर पर टोप की भांति लगाए रहते थे। उनके सर की शोभा बढ़ाती ये टोकरियां बुनाई कला का अद्भुत नमूना होती थीं जिनमें आटा, दाल व बेसन जैसी सामग्री भी रखी जा सकती थी। इसके अलावा रंगबिरंगी लाठी, कंधे पर लटका झोला इनकी वेशभूषा का खास अंग होते थे।

बसदेवाओं के बारे में अपने बचपन की यादें ताजा करते हुए सागर के एक पुस्तक व्यवसायी राजेश केशरवानी ने बताया कि अक्सर गर्मियों के दिनों में जब हम खुले आंगन में सोते थे तो सुबह नींद बसदेवाओं की खड़ताल की खनक पर गाए जाने वाले गीतों को सुनकर ही टूटती थी।

घर के लोगों द्वारा अनाज व वस्त्र के रूप में दान मिलने के बाद वो नाम जरूर पूछते थे और उसके बाद अगले द्वार तक पहुंचने तक वह दानदाता का नाम लेकर गीत के माध्यम से कृतज्ञता प्रकट करते रहते थे। गीत की हर पंक्ति की समाप्ति में वो हरे मोरे राम जरूर जोड़ते थे।

बसदेवा गायकी की पारंपरिक विविधताओं के बारे में डा. आचार्य ने बताया कि वर्तमान उत्तर प्रदेश राज्य के हिस्से में आने वाले बुंदेलखंड तक इनका प्रभाव था। मध्यप्रदेश में जहां ये अपने गाने के बाद हरे मोरे राम की टेक देते थे। उत्तर प्रदेश वाले इलाके में ये हर हर गंगे की टेक लगाते थे।

बसदेवाओं की जिंदगी पर अध्ययन कर रहे ओपी चौबे ने बताया कि वर्तमान में यह परंपरा खत्म सी हो चली है। मुश्किल से 40-50 लोग ही अब इस परंपरा का निर्वाह करते नजर आते हैं। सागर जिले की बंडा तहसील के दो गांव उमरारी व उलदन में ही इनकी महज दो-ढाई सौ की आबादी रह रही है। उन्होंने कहा कि बसदेवाओं की लुप्त होती परंपरा के संरक्षण की दिशा में केंद्र व राज्य सरकारों की ओर से गंभीर प्रयास किए जाने की जरूरत है।

सागर शहर में आज भी बसदेवा गायकी व परंपरा के मुताबिक जीवन-यापन कर रहे 75 वर्षीय धनपत

बताते हैं कि अब समय बदल गया है, शहरों में देर से उठने के चलन से हमारी सुबह की टेर उनको नींद में खलल लगती है। उन्होंने कहा कि समाज में अपराध बढ़ने से डरे लोग अब हमें अपना नाम बताने से भी कतराते हैं। यहां तक कि हमारे बच्चे भी इस परंपरा को आगे बढ़ाने के लिए तैयार नहीं हैं। वह पढ़-लिखकर नौकरी या धंधा-पानी करना चाहते हैं।
वर्षों से हमारा पारंपरिक ज्ञान बड़े ही सहज अंदाज में नई पीढ़ी तक पहुंचाने का काम बसदेवा बखूबी करते आए हैं। एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक ज्ञान के सहज प्रवास को बनाए रखने वाली बुंदेले हरबोलों की इस परंपरा को संजोने और सहेजने की कोशिश देश की आजादी में सक्रिय भूमिका अदा करती है।

चारण भाटों की परम्परा और छत्तीसगढ़ के बसदेवा -

मुझे याद है वो ठण्ड का दिन दरअसल, धान कटने के बाद गांवों में खुशनुमा ठंड पसर जाती है और सुबह 'गोरसी' की गरमी के सहारे बच्चे ठंड का सामना करते हैं. ऐसे ही मौसमों में सूर्य की पहली किरण के साथ गली से आती कभी एकल तो कभी दो तीन व्यक्तियों के कर्णप्रिय कोरस गान की ओर कान खड़े हो जाते। 'गोरसी' से उठकर दरवाजे तक जाने पर घुंघरू लगे करताल या खंजरी के मिश्रित सुर से साक्षात्कार होता। घर के द्वार पर सर्वांग धवल श्वेत वस्त्र में शोभित एक बुजुर्ग व्यक्ति उसके साथ दो युवा नजर आते. बुजुर्ग के सिर पर पीतल का मुकुट भगवान जगन्नाथ मंदिर की छोटी प्रतिकृति के रूप में हिलता रहता। वे कृष्ण जन्म से लेकर कंस वध तक के विभिन्न प्रसंगों को गीतों में बड़े रोचक ढ़ंग से गाते और खंजरी पर ताल देते, एक के अंतिम छूटी पंक्तियों को दूसरा तत्काल उठा लेता फिर कोरस में गान चलता। कथा के पूर्ण होते तक हम दरवाजे पर उन्हें देखते व सुनते खड़े रहते. इस बीच घर से नये फसल का धान सूपे में डाल कर उन्हें दान में दिया जाता और वे आशीष देते हुए दूसरे घर की ओर प्रस्थान करते। स्मृतियों को विराम देते हुए बाहर निकल कर देखा, बाजू वाले घर मे एक युवा वही जय गंगान गा रहा था, बुलंद आवाज पूरे कालोनी के सड़कों में गूंज रही थी. उसके वस्त्र 'रिंगी चिंगी' थे, किन्तु स्वर और आलाप बचपन में सुने उसी जय गंगान के थे. मन प्रफुल्लित होने लगा, और वह भिक्षा प्राप्त कर मेरे दरवाजे पर आ गया।

श्री कृष्ण मुरारी के जयकारे के साथ उसने अपना गान आरंभ कर दिया. वही कृष्ण जन्म, देवकी, वासुदेव, मथुरा, कंस किन्तु छत्तीसगढ़ी में सुने इस गाथा में जो लय बद्धता रहती है ऐसी अनुभूति नहीं हो रही थी. फिर भी खुशी हुई कि इस परम्परा को कोई तो है जिसने जीवित रखा है क्योंकि अब गांवों में भी जय गंगान गाने वाले नहीं आते.

किताबों के अनुसार एवं इनकी परम्पराओं को देखते हुए ये चारण व भाट हैं। मध्यप्रदेश के बघेलखंड व छत्तीसगढ़ में इन्हें बसदेवा या भटरी या राव भाट कहा जाता है, इनमें से कुछ लोग अपने आप को ब्रम्ह भट्ट

कहते हैं एवं कविवर चंदबरदाई को अपना पूर्वज मानते हैं. चारण परम्परा के संबंध में ब्रह्मपुराण का प्रसंग तो स्पष्ट करता है कि चारणों को भूमि पर बसानेवाले महाराज पृथु थे। उन्होंने चारणों को तैलंग देश में स्थापित किया और तभी से वे देवताओं की स्तुति छोड़ राजपुत्रों और राजवंश की स्तुति करने लगे (ब्रह्म पु. भूमिखंड, 28.88)। यहीं से चारण सब जगह फैले। महाभारत के बाद भारत में कई स्थानों पर चारण वंश नष्ट हो गया। केवल राजस्थान, गुजरात, कच्छ तथा मालवे में बच रहे। इस प्रकार महाराज पृथु ने देवता चारणों को "मानुष चारण" बना दिया। इसी प्रकार भाटों के संबंध में जनश्रुतियों में भाटों के संबंध में कई प्रचलित बातें कही जाती हैं। इनकी उत्पत्ति क्षत्रिय पिता और विधवा ब्राह्मणी माता से हुई बताई जाती है। ..... वस्तुत: यह एक याचकवर्ग है जो दान लेता था। ..... कहते हैं, चारण तो कच्छ में ही हैं पर भाट सर्वत्र पाए जाते हैं .... चारण तो केवल राजपूतों के ही दानपात्र होते हैं, पर भाट सब जातियों से दान लेते हैं। ..... कविराज राव रघुबरप्रसाद द्वारा लिखित और प्रकाशित भट्टाख्यानम् नामक छोटी सी पुस्तक में कवि ने खींचतानी से प्रमाण जुटाकर यह सिद्ध करने का प्रयास किया है कि भाट शब्द ब्रह्मभट्ट से बना है, उसे ब्रह्मराव भी कहा गया है। भट्ट जाति की उत्पत्ति का प्रतीक पुरुष ब्रह्मराव था जिसे ब्रह्मा ने यज्ञकुंड से उत्पन्न किया था। भाट स्वयं को कभी सूत, मागध और वंदीजन कहकर अपने को सरस्वतीपुत्र कहने लगते हैं और कभी अग्निकुंड से उद्भूत बताते हैं। **(विकिपीडिया)**

मध्यप्रदेश के बघेलखंड व छत्तीसगढ़ के राव भाटों के संबंध में उपरोक्त पंक्तियों का जोड़ तोड़ फिट ही नहीं खाता | छत्तीसगढ़ से इतर राव भाट वंशावली संकलक व वंशावली गायक के रूप में स्थापित हैं और वे इसके एवज में दान प्राप्त करते रहे हैं | छत्तीसगढ़ के बसदेवा या राव भाट वंशावली गायन नहीं करते थे वरण श्री कृष्ण का ही जयगान करते थे | इनके सिर में भगवान जगन्नाथ मंदिर पुरी की प्रतिकृति लगी होती है जो इन्हें कृष्ण भक्त सिद्ध करता है | वैसे छत्तीसगढ़ की सांस्कृतिक परम्पराओं में पुरी के जगन्नाथ मंदिर का अहम स्थान रहा है इस कारण हो सकता है कि इन्होंनें भी इसे अहम आराध्य के रूप में सिर में धारण कर लिया हो | छत्तीसगढ़ में इन्हें बसदेवा कहा जाता है जो मेरी मति के अनुसार 'वासुदेव' का अपभ्रंश हो सकता है. गांवों में इसी समाज के कुछ व्यक्ति ज्योतिषी के रूप में दान प्राप्त करते देखे जाते हैं जिन्हें भड्डरी कहा जाता है | छत्तीसगढ़ में इनका सम्मान महराज के उद्बोधन से ही होता है, यानी स्थान ब्राह्मण के बराबर है | छत्तीसगढ़ के राव भाटों का मुख्य रोजगार चूंकि कृषि है इसलिये उनके द्वारा वेद शास्त्रों के अध्ययन पर विशेष ध्यान नहीं दिया गया होगा और वे सिर्फ पारंपरिक रूप से पीढ़ी दर पीढ़ी वाचिक रूप से भजन गायन व भिक्षा वृत्ति को अपनी उपजीविका बना लिए होंगें | छत्तीसगढ़ी की एक लोक कथा 'देही तो कपाल का करही गोपाल' में राव का उल्लेख आता है | जिसमें राव के द्वारा दान आश्रित होने एवं ब्राह्मण के भाग्यवादी होने का उल्लेख आता है |

गांवों में जय गंगान गाने वालों के संबंध में जो जानकारी मिलती हैं वह यह है कि यह परम्परा अब मध्यप्रदेश व छत्तीसगढ़ में लगभग विलुप्ति के कगार पर है, अब पारंपरिक जय गंगान गाकर भिक्षा मांगने वाले बसदेवा इसे छोड़ चुके हैं | समाज के उत्तरोत्तर विकास के साथ भिक्षा को वृत्ति या उपवृत्ति बनाना कतई सही नहीं है किन्तु सांस्कृतिक परम्पराओं में जय गंगान की विलुप्ति चिंता का कारण है | अब यह समुदाय जय गंगान गाकर भिक्षा मांगने का कार्य छोड़ चुका है | पहले इस समुदाय के लोग धान की फसल काट मींज कर घर में लाने के बाद इनका पूरा परिवार छकड़ा गाड़ी में निकल पड़ते थे गांव गांव और अपना डेरा शाम को किसी गांव में जमा लेते थे | मिट्टी को खोदकर चूल्हा बनाया जाता था और भोजन व रात्रि विश्राम के बाद अल सुबह परिवार के पुरूष निकल पड़ते थे जय गंगान गाते हुए गांव के द्वार द्वार, मेरे गांव के

आस पास के राव भाटों की बस्ती के संबंध में जो जानकारी मुझे है उसमें चौरेगा बछेरा (तह. सिमगा, जिला रायपुर) में इनकी बहुतायत है |

पारंपरिक भाटों के गीतों में कृष्ण कथा, मोरध्वज कथा आदि भक्तिगाथा के साथ ही 'एक ठन छेरी के दू ठन कान बड़े बिहनिया मांगें दान' जैसे हास्य पैदा करने वाले पदों का भी प्रयोग होता था | समयानुसार अन्य पात्रों नें इसमें प्रवेश किया, प्रदेश के ख्यातिनाम कथाकार व उपन्यासकार डॉ.परदेशीराम वर्मा जी के चर्चित उपन्यास 'आवा' में भी एक जय गंगान गीत का उल्लेख आया है -

जय हो गांधी जय हो तोर,
जग म होवय तोरे सोर। जय गंगान ....
धन्न धन्न भारत के भाग,
अवतारे गांधी भगवान। जय गंगान .....

मेरे शहर के दरवाजे पर जय गंगान गाने वाले व्यक्ति का जब मैं परिचय लिया तो मुझे आश्चर्य हुआ | उसका और उसके परिवार का दूर दूर तक छत्तीसगढ़ से कोई संबंध नहीं था. उसकी पीढ़ी जय गंगान गाने वाले भी नहीं है वे मूलत: कृषक हैं | वह भिक्षा मांगते हुए ऐसे मराठी भाईयों के संपर्क में आया जो छत्तीसगढ़ में भिक्षा मांगने आते थे और कृष्ण भक्ति के गीत गाते थे. उनमें से किसी एक नें जय गंगान सुना फिर धीरे धीरे अपने साथियों को इसमें प्रवीण बनाया. अब वे साल में दो तीन बार छत्तीसगढ़ के शहरों में आते हैं और कुछ दिन रहकर वापस अपने गांव चले जाते हैं. मेरे घर आया व्यक्ति का नाम राजू है उसका गांव खापरी तहसील कारंजा, जिला वर्धा महाराष्ट्र है | इनके पांच सदस्यों की टोली समयांतर में दुर्ग आती हैं और उरला मंदिर में डेरा डालती हैं |

चारणों का उद्भव

चारणों का उद्भवन कैसे और कब हुआ, वे इस देश में कैसे फैले और उनका मूल रूप क्या था, आदि प्रश्नों के संबंध में प्रामाणिक सामग्री का अभाव है; परंतु जो कुछ भी सामग्री है, उसके अनुसार विचार करने पर उस संबंध में अनेक तथ्य उपलब्ध होते हैं।

चारणों की उत्पत्ति दैवी कही गई है। ये पहले मृत्युलोक के पुरुष न होकर स्वर्ग के देवताओं में से थे सृष्टिनिर्माण के विभिन्न सृजनों से चारण भी एक उत्पाद्य तत्व रहे हैं। भागवत के टीकाकार श्रीधर ने इनका विभाजन विबुधा, पितृ, असुर, गंधर्व, भूत-प्रेत-पिशाच, सिद्धचारण, विद्याधर और किंनर किंपुरुष

आदि आठ सृष्टियां के अंतर्गत किया है। ब्रह्मा ने चारणों का कार्य देवताओं की स्तुति करना निर्धारित किया। मत्स्य पुराण में चारणों का उल्लेख स्तुतिवाचकों के रूप में है। चारणों ने सुमेर छोड़कर आर्यावर्त के हिमालय प्रदेश को अपना तपक्षेत्र बनाया, इस प्रसंग में उनकी भेंट अनेक देवताओं और महापुरुषां से हुई। इसके कई प्रसंग प्राप्त होते हैं। वाल्मीकि रामायण- में तपस्वी चारणों के प्रसंग मिल जाते हैं। ब्रह्मपुराण का प्रसंग तो स्पष्ट करता है कि चारणों को भूमि पर बसानेवाले महाराज पृथु थे। उन्होंने चारणों को तैलंग देश में स्थापित किया और तभी से वे देवताओं की स्तुति छोड़ राजपुत्रों और राजवंश की स्तुति करने लगे। यहीं से चारण सब जगह फैले। महाभारत के बाद भारत में कई स्थानों पर चारण वंश नष्ट हो गया। केवल राजस्थान, गुजरात, कच्छ तथा मालवे में बच रहे। इस प्रकार महाराज पृथु ने देवता चारणों को "मानुष चारण" बना दिया। यही नहीं जैन धर्म सूत्रग्रंथ (महावीर स्वामी कृत पन्नवणा सूत्र) में मनुष्य चारण का प्रसंग मिलता है। कल्हण ने अपनी राजतरंगिणी में चारण कवियों के हँसने का उल्लेख किया है।

चारणों का निवास क्षेत्र एवं सामाजिकता-

इन प्रसंगों द्वारा चारणों की प्राचीनता उनका कार्य तथा उनका सम्मान और पवित्र कर्तव्य स्पष्ट होता है। कर्नल टाड ने लिखा है : इन क्षेत्रों में चारण मान्य जाति के रूप में प्रतिष्ठित हैं। 1901 के जनगणना विवरण में कैप्टन बेनरमेन ने चारणों के लिये लिखा है : चारण पवित्र और बहुत पुरानी जाति मानी जाती है। इसका वर्णन रामायण और महाभारत में है। ये राजपरिवार के कवि हैं। ये अपनी उत्पत्ति देवताओं से होने का दावा करते हैं। राजपूत इनसे सदैव सम्मानपूर्वक व्यवहार करते हैं। ये बड़े विश्वासपात्र समझे जाते हैं। इनका दर्जा ऊँचा है। ये अक्सर बारहट के नाम से पुकारे जाते हैं।

मारवाड़ में रहनेवाले चारण मा डिग्री तथा कच्छ के कच्छा कहलाते हैं। गुजरात के चारणों ने तो अब अपना चारणपन छोड़ दिया है पर अभी मा डिग्री चारण यथावत् हैं। उपर्युक्त उद्धरणों के अनुसार चारण जाति देवता जाति थी, पवित्र थी, जिसको सुमेर से हिमालय पर और हिमालय से भारत में लाने का श्रेय महाराज पृथु को है। यहीं से ये सब राजाओं के यहाँ फैल गए। चारण भारत में पृथु के समय से ही प्रतिष्ठित रहे हैं। परंतु आधुनिक विद्वान् इसे सत्य नहीं मानते। श्री चंद्रधर शर्मा लिखते हैं : ब्राह्मणों के पीछे राजपूतों की कीर्ति बखाननेवाले चारण और भाट हुए

भाट-

भाट (संस्कृत 'भट्ट' से व्युत्पन्न शब्द) भी काव्यरचना से संबंधित हैं लेकिन इनके विषय में निश्चयपूर्वक कुछ नहीं कहा जा सकता। भाट शब्द भी भाट जाति का अवबोधक है। राजस्थान में चारणों की भाँति भाटों की जातियाँ है। उत्तर प्रदेश में भी इनकी श्रेणियाँ हैं, लेकिन थोड़े बहुत ये समस्त उत्तर भारत में पाए जाते हैं। दक्षिण में अधिक से अधिक हैदराबाद तक इनकी स्थिति है। इनके वंश का मूलोद्गम क्या रहा होगा, यह कहना कठिन है। जनश्रुतियों में भाटों के संबंध में कई प्रचलित बातें कही जाती हैं। इनकी उत्पत्ति क्षत्रिय पिता और विधवा ब्राह्मणी माता से हुई बताई जाती है। नेस्फील्ड के अनुसार ये पतित ब्राह्मण थे, बहुधा राजदरबारों में रहते, रणभूमि के वीरों की शौर्यगाथा जनता को सुनाते और उनका वंशानुचरित बखानते थे। किंतु रिजले का इससे विरोध है। पर इन बातों द्वारा सही निर्णय पर पहुँचना कठिन है। वस्तुत: यह एक याचकवर्ग है जो दान लेता था।

चारणों के भी भाट होते हैं। रामासरी तहसील साजत में चारणों के भाट चतुर्भुज जी थे। हरिदान अब भी चारणों के भाट हैं। भाटों के संबंध में एक कथा प्रचलित है। जोधपुर के महाराज मानसिंह महाराज अहमदनगर (ईडर) से तख्तसिंह को गोद लाए। तख्तसिंह के साथ एक भाट आया जिसका नाम बाघाजी भाट था। यहाँ लाकर चारणों को नीचा दिखाने के लिये उसे कविवर की पदवी दी। दो गावँ भी दिए। परंतु बाघा को कविता के नाम पर कुछ भी नहीं आता था। आजकल उसी बाघा के लिये राजस्थान में यह छप्पय बड़ा प्रचलित है :

जिण बाघे घर जलमगीत छावलियाँ गाया।

जिण बाघे घर जलम थरों घर चंग घुराया॥

जिण बाघे घर जलम लदी बालम लूणाँ री।

जिण बाघे घर जलम गुँथी तापड़ गूणां री॥

बेला केइ बणबास देओ सारा ही हूनर साझिया।

गत राम तणी देखो गजब बाघा कविवर बाजिया॥

इस तरह इस छप्पय में बालदिया चंग बजानेवाले, छावलियाँ गानेवाले, तापड़ों की गूण गूँथनेवाले, बिणजोर, बासदेव के स्वाँग लानेवाले, काबडिया, तथा कूगरिया (मुसलमान), आदि अनेक भाट पेशों के अनुकूल भाट बने हुए हैं। डिंगल साहित्य में चारणों की भाँति कोई भी गीत या छंद भाटों द्वारा लिखा हुआ नहीं मिलता, ऐसी स्थिति में भाटों का नाम चारणों के साथ कैसे लिया जाने लगा, यह समझ में नहीं आता। निश्चित रूप

से यह चारण जाति को उपेक्षित करने लिये किसी चारणविरोधी का कार्य रहा होगा। अन्यथा वंशावलियाँ पढ़कर भरमान पोषण करनेवाले प्रत्येक पेशा और व्यापार करनेवाले सैकड़ों प्रकार की जातियों के विविध भाटों की क्या चारणों से समता हो सकती हैं ?चारण स्वाभिमानी और सत्यनिष्ठता की प्रतीक जाति रही हैं।।भाट समाज का अपना अलग गुणधर्म हैंचारण लोग अपने साथ भाट शब्द को जोड़ना कतई पसंद नहीं करते।।

जयौ रांम गोब्यंद बीठल बासदेव।
हरि बिश्न बैकुंठे मधुकीटभारी ।।
कृश्न केसों रिषीकेस कमलाकंत।
अहो भगवंत त्रिबधि संतापहारी ।।
अहो देव संसार तौ गहर गंभीर।
भीतरि भ्रमत दिसि ब दिसि, दिसि कछू न सूझै ।।
बिकल ब्याकुल खेंद, प्रणतंत परमहेत।
ब्रसित मति मोहि मारग न सूझै ।।
देव इहि औसरि आंन, कौंन संक्या समांन।
देव दीन उधरन, चरंन सरन तेरी ।।
नहीं आंन गति बिपति कौं हरन और।
श्रीपति सुनसि सीख संभाल प्रभु करहु मेरी।।1।।
अहो देव कांम केसरि काल, भुजंग भांमिनी भाल।
लोभ सूकर क्रोध बर बारनूँ।।2।।
ग्रब गैंडा महा मोह टटनीं, बिकट निकट अहंकार आरनूँ।
जल मनोरथ ऊरमीं, तरल तृसना मकर इन्द्री जीव जंत्रक मांही।
समक ब्याकुल नाथ, सत्य बिष्यादिक पंथ, देव देव विश्राम नांही ।।3।।
अहो देव सबै असंगति मेर, मधि फूटा भेर।
नांव नवका बड़ैं भागि पायौ।
बिन गुर करणधार डोलै न लागै तीर।
तिषैं प्रवाह औ गाह जाई।
देव किहि करौं पुकार, कहाँ जाँऊँ।
कासूँ कहूँ, का करूँ अनुग्रह दास की त्रासहारी।
इति ब्रत मांन और अवलंबन नहीं।
तो बिन त्रिबधि नाइक मुरारी ।।3।।
अहो देव जेते करौं अचेत, तू सरबग्गि मैं न जांनूं।

ग्यांन ध्यांन तेरौं, सत्य सतिग्रिद परपन मन सा मल।
मन क्रम बचन जंमनिका, ग्यान बैराग दिढ़ भगति नाहीं।
मलिन मति रैदास, निरुल सेवा अभ्यास।
प्रेम बिन प्रीति सकल संसै न जांहीं ॥4॥

चारण भारत के पश्चिमी गुजरात राज्य में रहने वाले व हिन्दू जाति की वंशावली का विवरण रखने वाले वंशावलीविद, भाट और कथावाचक।

उत्पत्ति-

चारण लोग राजस्थान की राजपूत जाति से अपनी उत्पत्ति का दावा करते हैं और संभवत: मिश्रित ब्राह्मण तथा राजपूत वंश से उत्पन्न हो सहते हैं। इनके कई रिवाज उत्तरी भारत में उनके प्रतिरूप भाटों से मिलते-जुलते हैं। दोनों समूह वचन भंग के बजाय मृत्यु के वरण को अधिक महत्त्व देने के लिए विख्यात हैं। चारण, योद्धा तथा राजाओं से संबंधित कथा गीतों की रचना एक विशिष्ट पश्चिमी राजस्थानी बोली में करते हैं, जिसे 'डिंगल' कहा जाता है, जिसका प्रयोग किसी अन्य उद्देश्य के लिए नहीं किया जाता।

चारण-भाट-

'चारण' एवं 'भाट' को अलग-अलग जाति में वर्गीकृत किया जा सकता है, किन्तु दोनों वर्गों के सामाजिक अन्तर को देखते हुए उन्हें एक ही जाति की दो उप-जातियाँ कहा जा सकता है। चारण जाति में ब्राह्मण और राजपूत के गुणों का सामन्जस्य मिलता है। पठन-पाठन तथा साहित्यिक रचनाओं के कारण उनकी तुलना ब्राह्मणों से की जाती है। चारण लोग राजपूत जाति तथा राजकुल से सम्बन्धित थे तथा वे शिक्षित होते थे। अपने शैक्षिक ज्ञान की अधिकता के कारण वे राजस्थानी वात, ख्यात, रासो और साहित्य के लेखक रहे थे।

वहीं दूसरी ओर भाट लोग जनसाधारण से सम्बंधित थे, अधिकतर पढ़े-लिखे नहीं थे। लालसायुक्त याचक-प्रवृत्ति ने उनकी प्रतिष्ठा को धुमिल किया। शिक्षा की कमी के कारण वे चारणों से अलग पीढ़ीनामा, वंशावली तथा कुर्सीनामा के संग्रहकर्ता थे। लेकिन फिर भी समाज में दोनों की प्रतिष्ठा बराबर की रही थी। चारण तथा भाटों को अपनी सेवा के बदले राज्य अथवा जागीरों से कर मुक्त भूमि, गाँव आदि प्राप्त होते थे।

स्वामि भक्ति-

भूमि धारक चारण कृषि कार्य भी करते थे। युद्ध में भाग लेने व शान्ति की स्थापना में यह जाति राजपूत जाति के निकट थी। 18वीं शताब्दी में मराठों के विरुद्ध तथा 19वीं शताब्दी में आन्तरिक उपद्रवों को दबाने में इस जाति के लोगों ने सफल सैनिक कार्यवाहियों में भाग लिया था। महाराणा अमरसिंह के काल में कुछ चारणों तथा भाटों ने अपने पैतृक व्यवसाय के साथ-साथ व्यापारिक सामान भी एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाने व बेचने का कार्य आरम्भ किया। ऐसे लोगों को 'बनजारा' कहा जाता था। चारणों की स्वामि भक्ति सदैव उल्लेखनीय रही थी। संकटकाल में भी वह अपने स्वामी के साथ रहता था। उनका घर संकटकाल में राजपूत स्त्रियों के लिए सर्वाधिक सुरक्षित माना जाता था।

भाट

अंगरेजी किताब में भाट के मायने बेगारी और भेड़ चराने वाले के लिखे हैं। पादरी श्रंग भाट को एक वे असल कौम खयाल करते, और उन की उत्पत्ति की तीन कथाये लिखते हैं- एक तो यह है कि ''ये लोग छत्री मर्द और वैश्य औरत से पैदा हुए हैं'', दूसरी यह है कि ''इनका बाप छत्री था और मां एक विधवा ब्राह्मणी थी'', तीसरी बात यह मशहूर है कि ''ये लोग ब्राह्मण बाप और शूद्र मां की संतान हैं।'' सर हेनरी इल्यट ने लिखा है कि ''भाटों को महादेवजी ने अपनी भौं के पसीने से पार्वतीजी के खुश करने के वास्ते पैदा किया था लेकिन वह पार्वतीजी को छोड़ कर महादेवजी के गुण गाने लगा इसलिये बैकुंठ से निकाला गया और पृथ्वी पर भटकने लगा। भाटों ने भी यही बात लिखाई है कि हमारे मूल पुरुष को महादेवजी ने अपने नांदिये की रखवाली के वास्ते भसमी से पैदा किया था मगर वह तमाम दिन फिरता रहता था और नांदिये की बहुत कम रखवाली करता था। इसलिये महादेवजी ने उसका ''भौंराभाट'' नाम रखा और शाप दिया कि तेरी औलाद भी इसी तरह भमती फिरेगी। मारवाड़ में भाटों की 9 न्यातें कहलाती हैं, जिनके नाम हैं-

1. *ब्रह्मभट्ट*, जो पूरब मेरठ राजों को मांगते हैं।
2. *चंडीसा*, इनका मूल पुरुष चंड भाट था। ये ब्राह्मण, राजपूत, कलबी, पिटल, बणाक सुथार, कुम्हार, नाई और दरजी वगैरा 21-22 कौमों को मांगते हैं।
3. *बड़वा*, मेवाड़ और ढूंढ़ाड़ में जियादा रहते हैं और वहां के राजपूतों और दूसरे लोगों की पीढ़ियां लिखते हैं।
4. *जागा*, ये महेसरी वगैरा कौमों को मांगते हैं।
5. *शासनी*, इनको शासन जमीन जियादा मिली हुई है और ये राजपूतों की नौकरी करते हैं।

6. *तूरी*, ये मोची और मेघवालों को मांगते हैं।
7. *बूना*, ये बालद लादते हैं और फलोदी परगने में पल्लीवाल ब्राह्मणों को भी मांगते हैं और कोई राजपूतों की छावलियां भी चंग बजाकर गाते हैं।
8. *कैंदारी या वासुदेवा*, जो जाड़ों में पिछली रात को भीगे कपड़े पहिन कर बस्तियों में मांगते फिरते हैं।
9. *मारू या जांगड़ा*, ये राजपूतों से भाट हुए हैं। राजपूताने में जियादातर बही भाट इन्हीं लोगों में से हैं जो अपने जिजमान राजपूतों वगैरा की पीढ़ियां बही में लिखते हैं।

इनमें सगाई गुड़ खोपरे से होती हैं और उसके साथ रोकड़ रुपये भी लड़की के बाप को दिये जाते हैं। लड़की का बाप अमल गला कर भाई बन्दों और मोहल्लेवालों को पिलाता हैं। वह एक कपड़ा लड़के के बाप को ओढ़ाता हैं, इसको ''ओढ़ावणी'' कहते हैं। व्याह में रीत व्यौहार के रुपये बींद के बाप को लगते हैं। बरात तीन दिन रहती हैं जिसको 6 जीमन बींदनी का बाप लापसी, खांड और रोटी वगैरह के जिमाता है। पड़जाम, सामेला और तोरण वगैरह का दस्तूर आम रिवाज रजपूतों के माफिक हैं। इनमें बेवा का नाता होता हैं मगर अगले खाबन्द के खानदान में नहीं। रीत के रुपये सासरेवाले लेते हैं और पीहरवाले 'खीचड़ी'' के नाम से लेते हैं। औरत को रात के वक्त 'बाड़' फाड़ कर या दीवार कूदा कर नाता करने वाले के साथ भेजते हैं। उसे दरवाजे से नहीं निकालते। इनमें औरतों का परदा बाजी बाजी खांपों में होता है, जो जमींदार और आसूदा हैं। कुल कौम में नहीं है। ये मुरदों को जलाते हैं। मकदूर हो तो बैकुंठी में निकाल कर मौसर वगैरह भी करते हैं। भदर भी होते हैं। इनमें 'खोले' नजदीकी भाई को लेते हैं। उसकी लिखत पर दूसरे हकदारों की साया लिखाते हैं। जो कोई उजर करे तो उसको रुपये या घर जिजमानों के दे कर राजी कर लेते हैं। इनका पेशा यह है कि गीत, कवित्त या पुरानी कथायें और पीढ़ियां के नाम सुना कर जिजमानों को मांगते हैं। व्याह और मौसर में जा कर नेग दापा लेते हैं। इनमें बहुत लोग खेती करते हैं और बहुतसे बालद भी लादते हैं। वाजे ''वासदेवा'' बन कर मांगते फिरते हैं। कोई कोई चंग और रबाब पर ठाकर लोगों की 'छावली' गा कर पेट भरते हैं। शासनी घर बैठे अपनी जागीर और जमीन की पैदा खाते हैं और गरीब लोग मजदूरी भी करते हैं। पीढ़ी लिखने वाले भाटों की बहियों पर आम लोगों में बहुत कुछ भरोसा किया जाता है। खोले, सगाई और भाईबंटे के झगड़ों में उनके ऊपर 'धीज' भागती है। उनकी सनद पक्की समझी जाती है। भाट हरेक कौम के होते हैं। कोई कौम ऐसी नहीं है कि जिसके भाट नहीं। चारणों के 'रावल' इनकी खूब नकल करते हैं। इन भाटों के भी भाट हैं जो इनकी पीढ़ियां लिखते हैं जो ''बहीबंच्या'' भाट कहलाते हैं। वे मेड़ते परगने के गांव लीलिया और लांबिया में रहते हैं। भाट उनको अपना हुक्का नहीं देते हैं बल्कि पानी भी उनके लोटे में ऊपर से डालते हैं। जो भाट जिस कौम का होता है वह उसके हाथ की रोटी भी खाता है। भाट अपने जिजमानों में विशेष करके निम्न कौमों में ''राजा'' कहलाते हैं और जब वे उनके यहां जाते हैं तो उनसे ऊंचे चारपाई वगैरह पर बैठते हैं। बहुत शेखी में होते हैं उस वक्त जो कोई उनको राजा न कहे और भाट कहदे तो वे खफा होते हैं। रूठ जाते हैं और बड़ी मुशकिलों से मनाये मानते हैं। उनके झूंठे बरतन बड़े बड़े घर की औरतें मांजती हैं। खाये पीछे वे उसे उठाते भी नहीं और वैसे ही छोड़कर चले जाते हैं। पुष्करण ब्राह्मणों ने इसी दुख के मारे अपने भाट राजों की बहियों छीन कर *'तापी बावड़ी'* में डूबो दी थीं और उनसे अपने को स्वतंत्र किया था। आम बोलचाल में कहावत है-

''आंख आवण, घर सिलावण, सोकड़ बहनड़ नांव,
नाई ठाकर, भाट राजा, पांचों नांव कुनांव।''

भाट भी हथियार बांधते हैं और गले में सोने के फूल अपनी कुलदेवी या पितरों के पहिनते हैं।

'भाट' संस्कृत के 'भट्ट' शब्द का अपभ्रंश है। विविध जातियों की वंशावलियें लिखना इनका धंधा है। वंशावलियां लिखने और सुनाने की वृति अंगीकार करने के बदले में भेंट, पूजा-सम्मान, त्याग और दानादि ग्रहण करने के कारण यह जाति अपने को ब्राह्मण मानती है और अब 'ब्रह्मभट्ट' नाम से इनकी प्रसिद्धि है। यह एक गायक जाति है। अपने यजमानों का इतिहास व पीढ़ियों का लेखा-जोखा रखती है। ये तीन भागों में विभाजित हैं- ब्रह्म भाट, वादी भाट और रानीमंगा भाट। ब्रह्म भाट अपनी उत्पत्ति ब्रह्मा के पुत्र कवि से मानते हैं। वादी भाट अपनी उत्पत्ति राजपूतों से मानते हैं तथा अपनी वेश भूषा, आचार-व्यवहार राजपूतों के समान रखते हैं। ये राजपूत जातियों के वंशों का यश व इतिहास लिखते हैं तथा उन्हें सुरक्षित रखते हैं। रानीमंगा भाट राजा महाराजाओं की रानियों का इतिहास, वंश परिचय तथा सती आदि होने का पूर्ण विवरण लिखते हैं। ये रानियों से ही पुरस्कार पाते हैं। ये ब्रह्म भाटों से विवाह संबंध नहीं रखते। जैसलमेर क्षेत्र में कई भाटो के निवास हैं। इनमें से कुछ वैष्णव व कुछ शाक्त धर्म को मानते हैं। देवी व सरस्वती की पूजा करते हैं। यहां के राजवंशों की पीढ़ियां भी यही लिखते हैं। इन्हें बही भाट भी कहा जाता है।
पड़िहारों की एक शाखा *'झांगरा'* वाले राजपूत भाट हो गये जो मारवाड़ में रहते हैं।

यह भी कहा गया है कि वेद की व्याख्या इतिहास-पुरुष से करनी चाहिए। प्राचीन भारत में विद्वत्ता का लक्षण इतिहास के ज्ञान पर आधारित था। ? सम्पूर्ण भागवत को सुनाने के पश्चात भगवत्पाद श्री शुक ने परीक्षित को कहा-"हे परिक्षित! स्वायंभुव मनु से लेकर अद्यवत् जो 195 करोड़ वर्षों का इतिहास मैंने आपको सुनाया है, इसको तुम वाणी का विलास और वैभव मत समझना। इस पृथ्वी पर बड़े-बड़े पुरुष अपने तेज और यश की गाथाएं छोड़ गए। इनमें जीवन का परम रहस्य, विज्ञान और वैराग्य निहित है।"

प्राचीन भारत में प्रत्येक हिन्दू राजा के लिए इतिहास का ज्ञान अनिवार्य था। धार्मिक अनुष्ठानों, विवाहों, अश्वमेध, राजसूय यज्ञों में इतिहास का वाचन आवश्यक था। ? इतिहास लिखने के लिए प्रत्येक हिन्दू राजा के दरबार में वृत्त लेखक, चारण, भाट नियुक्त होते थे। ? प्रत्येक राजवंश में कुलपुरोहित का भी दायित्व था कि वह राजवंश के इतिहास का लेखन करे। यथा ऋषि गर्ग यादवों के कुलपुरोहित थे। बृहस्पति देवताओं के कुलपुराहित थे और शुक्राचार्य असुरों के। ? तीर्थस्थानों पर राजवंशों, परिवारों के पंडे उनकी यात्राओं के वृत्त लिखते थे और यह परम्परा वर्तमान में भी प्रचलित है। उपरोक्त तथ्यों से स्पष्ट होता है कि हिन्दू समाज जीवन में इतिहास का कितना बड़ा महत्व रहा है। अंग्रेज इतिहासकारों का यह कटाक्ष कि भारत की जलवायु गर्म होने के कारण यहां के लोग प्राय: सुस्त, आलसी, दीर्घसूत्री और पराक्रमशून्य होते हैं, भी पूरी तरह से झूठ है। इसके कुछ उदाहरण नीचे दिए जा रहे हैं :-

1. चन्द्रगुप्त मौर्य इसी देश की जलवायु में उत्पन्न हुए थे। उन्होंने सिकन्दर के साम्राज्य के भारतीय क्षेत्र के उत्तराधिकारी सेल्यूकस को युद्ध में पराजित कर उसके सारे इलाके छीन लिए। तब सेल्यूकस ने अपनी सुपुत्री का विवाह चन्द्रगुप्त से करके उससे संधि की थी। 2. भारत के इतिहास के क्षात्र युग में 40 चक्रवर्ती सम्राट हुए हैं। चक्रवर्ती सम्राट का जब राज्याभिषेक होता था तो वह सप्तद्वीपेश्वर (सप्तमहाद्वीपों का सम्राट) की शपथ लेता था। रामचंद्र जी भी चक्रवर्ती सम्राट थे। अंतिम सम्राट (चक्रवर्ती) महाराजा युधिष्ठिर थे। वे सारे एशिया के चक्रवर्ती सम्राट थे। उस समय सारा एशिया हिन्दू था। 3. शिवाजी महाराज महाराष्ट्र में उत्पन्न हुए और उन्होंने देश को स्वतंत्र कराने के लिए विदेशी मुगल साम्राज्य के विपक्ष में 255 युद्ध लड़े। उनके शौर्य का यह कीर्तिमान हैं कि वह न तो किसी युद्ध में पराजित हुए और न ही जख्मी। 4. सरदार हरिसिंह नलवा महाराजा रणजीत सिंह के सेनापति थे। उनके शौर्य की आज भी अफगानिस्तान में धाक है। वहां की पठान माताएं अपने बच्चों को चुप कराने के लिए कहती हैं "खामोश ताश, हरिसिंह नलवा आयेद" या "हरिया रांगला", चुप करो, हरिसिंह नलवा आ रहा है। 8वीं शताब्दी से 18वीं शताब्दी तक मुस्लिम अत्याचारों की नदी पश्चिम से पूर्व की ओर बहती रही, परन्तु 19वीं सदी के सेनापति उस वीर के दर्शन करने के लिए महाराजा रणजीत सिंह की राजधानी लाहौर में आते थे कि वह कौन-सा वीर है जिसने यह महान कार्य किया है। इतना ही नहीं गुरु गोविन्द सिंह, राणा प्रताप, छत्रसाल, दुर्गादास राठौर और असम के लाचित बरफुकन के शौर्य की गाथाएं विश्वविख्यात हैं।

अंग्रेजों ने इतिहास को विकृत कर यह भी प्रचार किया कि वर्तमान में जो हिन्दू हैं, इनका पूर्व का नाम आर्य है। इनके पूर्वज मध्य एशिया में रहते थे और वह वहां से 3500 वर्ष ई. पूर्व आक्रामक के नाते भारत आए। अत: यह देश इनका नहीं है, वे विदेशी हैं। किन्तु अब पुरातात्विक खोजों, वैज्ञानिक अनुसंधानों, सरकारी-गैरसरकारी माध्यमों, राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय परिसंवादों और अन्य साक्ष्यों के द्वारा यह प्रमाणित हो चुका है कि भारत में हिन्दू बाहर से नहीं आए, अपितु भारत से अन्य देशों में गए हैं।

आर्यों की आदि जन्मभूमि भारत ही है इसके लिए महाभारत में एक आख्यान आता है कि "संसार में पवित्र हिमालय विख्यात है। उसमें अर्ध योजन चौड़ा और पांच योजन घेरे वाला उत्तम सुमेरू पर्वत है, जहां सब द्विजों की उत्पत्ति हुई।"

जब उपरोक्त भारत के सुमेरू पर्वत पर मानवोत्पत्ति हुई और सब जातियों, सब राष्ट्रों, सब धर्मों, सब शास्त्रों और सारे ज्ञान-विज्ञान का उदय भी यहीं भारत से हुआ, तो किसी के बाहर से आने का प्रश्न ही उत्पन्न नहीं होता। मनुस्मृति में कहा गया है कि-

अर्थात जिस क्षेत्र के पूर्व और पश्चिम में समुद्र है, जो पर्वतों के मध्य है तथा घिरा हुआ है वह सरस्वती तथा दृषद्वती नदियों के अंतर में स्थित है। वह देव निर्मित आर्यावर्त देश है। अर्थात् श्लोक से यह स्पष्ट होता है कि भारत के पूर्व और पश्चिम में समुद्र है। सरस्वती और दृषद्वती (ब्राह्मा की इरावती) नदियां उसमें बहती थी। अत: यही भारत, आर्यों की आदि जन्मभूमि है।

भारत एक देश नहीं है अपितु यह उपमहाद्वीप है, यह प्रचार भी अंग्रेजों द्वारा और बाद में उनके हस्तक मुस्लिम लीग के नेता जिन्ना और पुन: वामपंथी इतिहासकारों द्वारा किया गया। इसके विपरीत भारत का वर्णन अथर्ववेद में मातृभूमि के रूप में है। इसकी प्रशंसा में 63 श्लोक दिए गए हैं। प्रत्येक श्लोक में मातृभूमि की विशेषता का वर्णन है। हिन्दू आदिकाल से भारत को अपनी मातृभूमि, पुण्यभूमि और कर्मभूमि के रूप में

पूजते आए हैं। राष्ट्रीय जीवन की अधिष्ठात्री मातृभूमि ही होती है। और इसी कारण हिन्दू अपने को इसकी संतान मानते हैं।

ये मारवाड़ में और रजवाड़ों में जियादा हैं और सबके शासन गांव या उनके बंट हैं। इनकी जमीन पर कोई लाग बाग राज की नहीं हैं। बिल्कुल माफी तांबेपत्रों से दी हुई हैं। चारण कहते हैं कि महादेवजी का नांदिया परबतीजी के सिंघ के डर से चरने को नहीं जा सकता था। महादेवजी ने अपने मैल से एक पुरुष पैदा किया और उसको सरजीवित करके 'चारण' नाम रखा और नांदिया चराने का हुक्म दिया। चारण ने पारबतीजी की अस्तुति की। पारबतीजी ने खुश हो कर कहा कि -'' जा, नांदिये को चरा ला। मेरा सिंघ कुछ नहीं कहेगा और तू ने मेरी अस्तुति की जिसके प्रताप से तेरी संतान बिना लिखे पढ़े ही कविता किया करेगी।'' इस वरदान से चारण अपने को कवि भी कहते हैं। ये माताजी को मानते हैं और ''जय माताजी'' की करते हैं। इसी कथा से मिलती हुई एक कहानी मालकम साहिब ने मालवे की कौमों की किताब में लिखी है। जिसका खुलासा यह है ''कि महादेवजी ने अपने सिंघ और नांदिये की हिफाजत के वास्ते पहिले भाट को पैदा किया लेकिन वह सिंघ को रोक न सका। इससे महादेवजी ने दुख पा कर चारण को पैदा किया जो भाट से जियादा बहादुर था और उसको इन जानवरों की चैकसी पर रखा। फिर कोई नांदिया शेर से नहीं मारा गया।'' ये लोग राजाओं के कुरसी नामे लिखते हैं और मरजीदान हो कर मुसाहिब तक बन जाते हैं। अपना दबदबा पूरा जमा लेते हैं। विखे की हालत में राजों को तसल्ली देते हैं और सुख में उनकी खुशी को बांटते हैं। विलसन साहिब लिखते हैं कि '' इनका नाम मवेशियों के पालने और चराने से 'चारण' हुआ है।'' मगर कविराजा मुरारीदानजी इन सब बातों को गलत ठहरा के अपनी कौम की उत्पत्ति प्राचीन पुस्तकों के प्रमाणों से दी है। .....कुरुवंशियों के महाभारत होने से हिन्दुस्तान के बहुधा क्षत्रिय मारे गये। पीछे यूनानियों ने हिन्दुस्तान पर चढ़ाइयां की तब राजपुत्र लोग भाग कर दक्षिण समुद्र और पश्चिम समुद्र की तरफ विराना था, वहां चले गये। उनके साथ चारण भी गये सो उन चारणों की औलाद तो रह गई बाकी दैवयोग से आर्यावत्र्त में से चारणों का वंश नष्ट हो गया। पश्चिम समुद्र की तरफ राजपुत्रों के साथ चारण गये वे मरुस्थल में आबाद हुए। वहां से फिर इनकी वृद्धि हुई, इसलिये अब वे ''मारू चारण'' कहलाते हैं। इनका आचरण वैसा ही शुद्ध रहा और राजपुत्रों की कीर्ति को फैलाते हैं। विद्या पढ़ना, कविता करना इत्यादि अपना कदीमी कार्य करते हैं। राजपुत्र इन चारणों को पूजनीय समझते हैं और बड़ा दान और सम्मान देते हैं। राजपूताना में सबसे प्रतिष्ठित जोधपुर और उदयपुर राज है। इन रजवाड़ों में जो भाई बेटे उमराव हैं, उनके जो कुरब कायदे हैं उन्हीं के समान चारणों के भी कुरब कायदे हैं और इसी प्रकार दूसरे रजवाड़ों में भी हैं। जोधपुर के महाराजा गद्दीनशीन होते हैं उसी वक्त जो लायक चारण होता है उसको लाखपसाव देते हैं यानी लक्ष रुपयों का दान देते हैं। ये मारू चारण राजपूताना, गुजरात और मालवे में हैं। बहुत से चारण तो गांवों के जागीरदार हैं बाजे डोलीदार हैं। मगर राजपूतों की दी हुई जमीन विदून कोई चारण नहीं है। सब रजवाड़ों में इनकी जागीरि हैं। ज्यादा से ज्यादा चारण जोधपुर के राज्य में हैं। जोधपुर की अमलदारी में चारणों की जागीर में 363 गांव हैं जिनकी आमदनी सालाना 3,79,400 रुपयों के अनुमान है। दक्षिण समुद्र की तरफ क्षत्रियों के साथ चारण गये वे कच्छदेश में आबाद हुए। वहां से फिर इनकी वृद्धि हुई, इसलिये वे 'काछेले चारण' कहलाते हैं। उन्होंने अपना कदीमी काम विद्या पढ़ना इत्सादि छोड़ दिया और सौदागरी का पेशा अख्तियार कर लिया। उनका आचरण भी शुद्ध नहीं रहा इसलिये मारू चारणों के और काछेले चारणों के आपस में भोजन व्यवहार तक नहीं है। -

राजपूत जाति के यश को कविता रूप से प्रकाशित करने वाली जाति 'चारण' के नाम से प्रसिद्ध है। यह जाति केवल राजपूताना, मालवा और कच्छ-काठियावाड़ में ही पाई जाती है। यह राजपूतों की पीढ़ियां भी बताती है। ब्राह्मणों के पीछे राजपूतों की कीर्ति बखान करने वाले भाट और चारण ही हुए हैं -

'ब्राह्मण के मुख की कविता, कछु भट लई कछु चारण लीन्हीं।'

चारणों के एक सो बीस गौत्र हैं। इससे कुल चारणों की बिरादरी बीसोतर या बीसोत्रा कहलाती है।चारण शाक्त होते हैं। भगवती इनकी कुलदेवी है। आपस में ये राजपूतों की तरह 'जैमाताजी की !' कहकर नमस्कार करते हैं |

-चारणों में सगाई राजपूतों के माफिक अमल पी लेने से होती है। बींद बींदनी के बाप या भाई बिरादरी वालों के सामने एक दूसरे के हाथ से अमल ले कर कह देते हैं कि हमने अपने लड़का लड़की की सगाई की। यह सगाई लड़की वाला तो नहीं छुड़ा सकता मगर जो बेटे वाले छोड़ दे तो उनकी मरजी। सगाई की रीति के रुपये लेते हैं, कोई नहीं भी लेता है। सगाई होने के बाद अगर लड़का मर जाये तो उसकी मांग छोटे भाई को मिल सकती है पर बड़े भाई को मिलने का दस्तूर नहीं है। व्याह की रसमें विनायक से लंकर अखिर तक राजपूतों के माफिक है। उसमें फर्क इतना है कि लड़की के घर तो फेरों के पहिले दिन और लड़के के घर व्याह के पीछे कुलदेवी की पूजा होती है। औरतें कुलदेवी के करंड को ऊन की काली लोई में लपेट के एक कंवारी कन्या के सिर पर लाती हैं। अगला लाल कपड़ा और नारिसल तो सवासनी को दे देती हैं और नया कपड़ा और दूसरा नारियल रख कर पूजन करती हैं। रात को 'रतजगा' करके गीत गाती हैं। इनमें नाता सिर्फ जालोरी और सांचोरी के चारणों में होता है। सो वे 'नातरायत' कहलाते हैं और जात बाहर समझे जाते हैं। वहां नाते को ''घरगरणा'' कहते हैं। चारणों में औरतों का परदा राजपूतों के माफिक होता है और उनकी चाल ढाल भी राजपूतानियों की सी होती है। इनमें मुरदे को गरीब तो सीढ़ी में लेटा कर ले जाते हैं और अमीर बैकंटी में निकालते हैं। उसके ऊपर रुपये पैसे की उछाल भी करते हैं। भदर होने का दस्तूर है। जिसके पास मौसर करने को रुपया होता है, वह तो उसी वक्त भदर हो जाता हैं और गरीब नहीं होता। तीसरे दिन चावल मूंग पका कर घी और खांड के साथ अपने कुटम को जिमाते हैं। गरीब लापसी करता है। बारहवें दिन 12 घड़े पानी के भरकर ब्राह्मण और बहन सवासनी को देते हैं। आसूढ़ा लोग मौसर भी करते हैं। औरत के मरने में यह बात जियादा है कि जिसने ''गणगोर का ऊजवणा'' याने उद्या◌ापन नहीं किया हो तो उसके 12 दिनों में पहिले 'ऊजवणा' करते हैं और फिर 12 दिन के घड़े भरते हैं। 'ऊजवणा' किये बिना नहीं भरते। ' ऊजवणे' का यह दस्तूर है कि कुटम की, और जो कोई के कुटम में न हों तो दूसरी कौम की 16 लुगाईयों और एक मर्द को न्यौत कर जिमाते हैं और सबको खोपरा देते हैं। जो यह ऊजवणा औरत के जीते जी किया जावे तो एक एक नारियल देने का दस्तूर है। इसी तरह 'गोरणी' का दस्तूर भी औरत के जीते जी या मरे पीछे 12 दिनों से पहिले किया जाता है। इसमें 24 औरतों को 24 घड़े या लोटे तांबे, पीतल के और जो गरीब हो तो मिट्टी के, कसार और 'मगद' से भरकर देते हैं। औरत सुहागण हो तो घड़ों को 'कसूमल' कपड़े से ढकते हैं और एक एक चूड़ी दांत की, टीकी डिब्बी और पोत के छड़े और जो विधवा हो तो पक्के रंग का लाल कपड़ा और सूई डोरे भी घड़ों के साथ रखते हैं। जिनको कुटुम की औरतें खुद आ कर ले जाती हैं। पूजन ब्राह्मण कराता है। चारणों का डीलडोल और पहरवेस वगैरह राजपूतों से बहुत मिलता है। ये हथियार भी बांधते हैं और शिकार भी खेलते हैं। दारू मांस खाते पीते हैं। रोटी हरेक उज्वल जात के हिन्दू की खा लेते हैं। इनमें भाईबंटा राजपूतों के खिलाफ होता है, यानी जितने भाई होते हैं, सब बराबर बंट कर लेते हैं। इसिलिये 'चारणिया बंट'' का मुहावरा हो गया है। चारणों की जमीन बंटायतों में पीढ़ी दर पीढ़ी बढ़ते बढ़ते उनके वास्ते बवालजान हो गई है। जिससे हमेशा झगड़े बखेड़े आपस में हुआ करते हैं। महाराजा मानसिंघजी और तखतसिंघजी के राज में इनके मुकदमों के वास्ते कि जिनमें जिद और

आपस की ईर्ष्या मिली रहती थी, एक अदालत ही अलहदा ''खटदर्शन'' के नाम से थी जिसका कार्यभार बड़े बड़े चारणों को रहा करता था। उस समय 'खटदर्शन' को महसूल माफ था और अपने लेने के वास्ते लोगों को ये बहुत सताते थे और उनकी दाद फरियाद उनके मुलाहिजे और दरबार में हाजिर रहने से राजपूत सरदारों में बहुत ही कम सुनी जाती थी। एक दफै किसी ने जोसी शंभूदत्तजी से जो अकसर महाराज श्रीमानसिंघजी के राज में मुसाहिबी का काम किया करते थे।

पहिले जमाने में जबकि राजपूत आपस में लड़ा करते थे तो चारण जामिन बन कर बीच बचाव कर देते थे और कभी कभी लड़ा भी दिया करते थे। इनकी जमानत राजपूतों में पक्की समझी जाती थी। अगर कोई इनकी जमानत लेकर बदल जाता था तो वे उसके घर पर *'धरना'* दे देते थे और मर भी जाते थे। चारणों का धरना मारवाड़ में बहुत मशहूर हैं और ये धरना जियादातर जमीन के वास्ते देते थे कि जब किसी गांव का जागीरदार या हवालदार इनकी जमीन अटकाता था, जब्त कर लेता था तो भाईबंदों को इकट्ठे करके जागीरदार की कोटड़ी पर और जो गांव खालिसे का होता तो जोधपुर आ कर धरना देते थे। ऐसे धरनों में से आहुवे का धरना जियादा मशहूर हैं जो सम्वत 1643 में मोटा राजा उदयसिंघजी के ऊपर दिया गया था। चारणों का पेशा राजपूत सरदारों की दरबारदारी, खेती जागीरदारी और नौकरी का है। आसूदा चारण व्यौपार और बोहरगत भी करते हैं। पहिले मारवाड़ में इनके माल पर मासूल नहीं लगता था। चारणों का धर्म शाक्तिक है। ये देवी को जोगमाया के नाम से पूजते हैं और अपने में से बहुतसी औरतों का शक्ति यानी देवी होना मानते हैं और उनकी पूजा भी देवी के समान करते हैं। इनमें नौ लाख 'लोवड़ियाल' की एक कहावत है जिसका यह मतलब है कि नौ लाख ''लोई'' ओढ़ने वाली चारणियां शक्ति हुई हैं जिनमें करणीजी का बहुत बड़ा दरजा है। करणीजी की सौगंध चारणों में बहुत पुख्ता समझी जाती है। -6/340-4. चारणों के वंश से पतित हुए चारण, जैसे नीच कार्य करने से ब्राह्मणों में 'आचारज' बुरे ब्राह्मण, डाकोत, गुरड़्या और क्षत्रियों के वंश से पतित हो कर 'पड़िहार मीणें' आदि तथा वैश्यों में 'पांचड़ा वैश्य' आदि भिन्न भिन्न जतियों बन गई, इसी भांति 'काछैले चारणों' से पतित हो *'चारणिया वांभी, चारणिया भाट* आदि जातियां बनीं।

मारवाड़ एवं थली में राजपुरोहित (जमीदार) अन्य ब्राह्मणों की अपेक्षा अधिक है। ये लोग राजपूतो को मोरूसी गुरू है और पिरोयत (पुरोहित) कहलाते है। अगर हम इतिहास पर एक दृष्टि डाले तो पायेंगे कि राजपुताने में राजपुरोहितो का इतिहास में सदैव ही ऐतिहासिक योगदान रहा है। ये राज-परिवार के स्तम्भ रहे हैं। इन्हे समय-समय पर अपनी वीरता एवं शौर्य के फलस्वरूप जागीरें प्राप्त हुई है। उत्तर वैदिक काल में भी राजगुरू पुरोहितो का चयन उन श्रेष्ठ ऋषि-मुनियों में से होता था जो राजनीति, सामाजिक नीति, युद्धकला, विद्वता, चरित्र आदि में कुशल होते थे। कालान्तर में यह पद वंशानुगत इन्ही ब्राह्मणों में से अपने-अपने राज्य एवं वंश के लिए राजपुरोहित चुने गये। इसके अतिरिक्त राजाओं की कन्याओं के वर ढूंढना व सगपन हो जाने पर विवाह की धार्मिक रीतियां सम्पन्न करना तथा नवीन उत्तराधिकारी के सिंहासनासीन होने पर उनका राज्याभिषेक करना आदि था। ये कार्य राज-परिवार के प्रतिनिधि व सदस्य होने के कारण करते थे। वैसे साधारणतया इनका प्रमुख व्यवसाय कृषि मात्र था।
पिरोयतो की कौम एक नहीं अनेक प्रकार के ब्राह्मणों से बनी है। इस कौम का भाट गौडवाड़ परगने के गांव चांवडेरी में रहता है। उसकी बही से और खुद पिरोयतो के लिखाने से नीचे लिखे माफिक अलग-अलग असलियत उनकी खांपो की मालूम हुई है।

ये सिसोदियों के पिरोयत हैं क्योंकि परगने गोडवाड़ में अकसर गांव उदयपुर के महाराणा साहिब के बुजरगो के दिये हुए इनके पास हैं जिनमें गूंदेचा, मूंथो और बलवचों के पास तो एकजाई गांव बड़े-बड़े उपजाऊ के है। जिनमें गूंदेचा के पास मादा, बाड़वा और निम्बाड़ा, मूथों के पास पिलोवणी, घेनड़ी, भणदार, रूंगडी और शिवतलाब तथा बलवचो के पास पराखिया व पूराड़ा है।
इन शासन गांवो के बाबत एक अजीब बात सुनने में आई है कि राणा मोकलजी सिरोही से शादी करके चितौड़ जाते वक्त जब गोडवाड़ पहुंचे तो इन गांवो में से होकर गुजरे और गोडवाड़ का परगना सिरोही के इलाके और पश्चिम मेवाड़ से ज्यादा आबाद है जहां बारों महिने खेतो में पानी की नहरे जारी रहती है जिनसे खेत हमेशा हरे भरे दिखाई देते है और कोयले दरखतो पर कूका करती है और ये सब सामान उस मुसाफिर के लिए कि जो मारवाड़ ऊजड़ और बनजर रेगिस्तान से गोडवाड में आवे या मेवाड़ और सिरोही के खुश्क पहाड़ो से वहां गुजरे बहुत कुछ मोहित और प्रफुल्लित होने का हेतु होता है। देवड़ी रानी जिसने अपने बाप के राज में कभी यह बहार और शोभा नहीं देखी थी, इन गांवो की तर और ताजा हालत देखकर बहुत खुश हुई और वे दस पांच दिन उसके बहुत खुशी और दिल्लगी में गुजरे मगर जब गोडवाड के आगे मेवाड़ की पहाड़ी सरहद में सफर शुरू हुआ और वह शोभा फिर देखने में नहीं आई तो एक दिन उसने बड़े पछतावे के साथ राणाजी से कहा कि पिछे गांव तो बहुत अच्छे आये थे। अफसोस हे कि वे सब पीछे रह गये। राणाजी ने जबाब दिया कि जो मरजी हो तो उनको साथ लिजीये। राणाजी ने उसी वक्त पिरोयतो को बुला कर वे सब गांव संकल्प कर दिये और रानी से कहा कि अब ये गांव इस लोक और परलोक में हमारे तुम्हारे साथ रहेगे

राजपुरोहित संक्षिप्त वंश परिचय-

पुरातनकाल में आर्यो ने कार्य के आधार पर चार वर्ण- ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य एवं शूद्र तथा चार आश्रम - ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ एवं सन्यास का निर्माण किया। इसके साथ ही संयुक्त परिवार प्रथा आरम्भ हो गई। ऋग्वेद के अनुसार राजनीति एवं जाति विस्तार संयुक्त परिवार की ही देन है। जाति विस्तार के कारण अलग-अलग राज्यों की स्थापना की आवश्यकता हुई एवं ''राजा'' पद का सृजन हुआ, साथ ही राज्य प्रशासन, सैनिक, धार्मिक नियम पथ प्रदर्शक व राजा के मार्गदर्शन एवं उस पर अंकुश रखने हेतु ''राजपुरोहित'' अथवा ''राजगुरू पुरोहित'' पद भी महाऋषियों में से सृजित किया गया जो कि अत्यन्त ही महत्वपूर्ण एवं प्रभावशाली था क्योंकि राजपुरोहित ही सर्वसम्मति से राजा का चयन करता था।

वंश परिचय:- 1600 ई. म.से. पूर्व अर्थात् 4500-5000 साल पूर्व

समस्त महाऋषियों, मुनियों में से सर्वश्रेष्ठ, पराक्रमी, उच्च प्रगाढ़ राजनीतिज्ञ, उच्च चरित्रवान, प्रतिज्ञ, निष्ठावान, त्यागी, दूरदर्शी, दयावान, प्रशासन, निपुण, प्रजापालक, सामाजिक व्यवस्थापक, अस्त्र- शस्त्र, युद्ध विद्या, रणकौशल, धनुर्विधा, वेदों व धार्मिक विद्याओं का ज्ञाता इत्यादि सर्व विषयों के विशिष्ट ज्ञाता को ही - ''राजपुरोहित'' अथवा ''राजगुरू पुरोहित'' चुना जाता था। योग्य एवं उचित परायण न होने पर

राजपुरोहित को भी सर्वसम्मति एवं प्रजा की राय से पदच्युत कर दिया जाता था। उदाहरणतः रावी तट पर स्थित उत्तर पांचाल राज्य के राजा सुदास द्वारा ऋषिगण के विचार एवं आग्रह से विश्वामित्र को हटाकर उनके स्थान पर वशिष्ठ को यह पद सौंपा गया। इस प्रकार राजा एवं राजपुरोहित योग्य होने पर ही स्थाई होते थे अन्यथा उन पर ऋषिगण सभा द्वारा पुनः विचार किया जाता था।
वैदिक काल में राजगुरू पुरोहित पद पर चुने गये ऋषिगण में से बृहस्पति (जो देवताओं के राजपुरोहित थे) एवं इसी वंश में ऋषि भारद्वाज, द्रोणाचार्य, वशिष्ठ, आत्रैय, विश्वामित्र, धौम्य, पीपलाद, गौतम, उद्धालिक, कश्यप, शांडिल्य, पाराशर, परशुराम, जन्मदाग्नि, कृपाचार्य, चाणक्य आदि मुख्य है। कालान्तर में इन्हीं ऋषि मुनियो के वंश विभिन्न गौत्रों, खांपो, जातियो एवं उप-जातियों के क्षत्रियों के राजपुरोहित होते गुए जिनमें सूर्यवंशी, चन्द्रवंशी, यदुवंशी - राठौड़, परमार, सोलंकी, चौहान, गहलोत, गोयल, भाटी आदि मुख्य रूप से है। भाटियों के राजगुरू पुष्करणा ब्राह्मण है। आगे चलकर वंशानुगत रूप से परम्परानुसार राजपूत एवं राजपुरोहित होते गए तथा सुदृढ़ समाज एवं जातियां बन गई। वर्तमान में जो राजपुरोहित है, इन गोत्रो में से अलग-अलग जातियों व उप जातियों में विद्यमान है (जोधपुर, बीकानेर संभाग में सघन केन्द्रित)। इसी प्रकार क्षत्रिय भी अलग-अलग जातियों, उपजातियों एवं खापों में राजपूत नाम से विख्यात है।

वैदिक काल के अनुसार -

अर्थात् हम (राजगुरू पुरोहित) राष्ट्र को जगाने वाले है। लोगों में (प्रमुखतः क्षत्रियों में) राष्ट्रभावना, देशभक्ति एवं मातृभूमि हेतु बलिदान देने के लिये कर्तव्यपालन की भावना जागृत करते है। इसलिये राजगुरू अर्थात् राजा का (समस्त विषयों का विशेषज्ञ) शिक्षक है।
सर्वगुण सम्पन्न राजपुरोहित का शनैः शनैः राज्य का सर्वश्रेष्ठ व्यक्ति हो जाना स्वाभाविक ही था।
शुक्राचार्य ने कहा है -

'पुरोधा प्रथम श्रेष्ठ, सर्वभ्यौ राजा राष्ट्र भक्त।
आदु धर्म राज प्रौहितां, रणजन्य अरू राजनिता॥
अस्त्र शस्त्र जुध सिख्या, राजधर्म, राजप्रौहिता
धर्म्मज्ञः राजनीतिज्ञः षोड्स कर्मे धुरन्धरः
सर्व राष्ट्र हितोवक्ता सोच्यतै राजपुरोहितः॥

मंत्रानुष्ठान संपन्न स्त्रिविद्या कर्म तत्परः।
जितेन्द्रियों जितक्रोधो, लोभ मोह विजियतैः॥
षडंग वित्सांग, धनुर्वेद विचारार्थ धर्मवितः।
यत्कोप भीत्या राजर्षि धर्मनीति रतो भवते।
नीति शास्त्रास्त्र, व्यूहादि कुशलस्तु (राज) पुरोहितः।
सेवाचार्यः पुरोधाय शायानुग्रहौ क्षमः॥
(धर्मज्ञ राजनीतिज्ञ शौडष कर्म्मधुरन्धर।
सर्वराष्ट्र हितोवक्ता सोच्यते राजपुरोहितः॥
वेद वेदांग तत्वज्ञो जय होम परायणः।
क्षमा शुभ वचोयुक्त एवं राजपुरोहितः॥

उपरोक्त श्लोको में राजपुरोहित के गुण, धर्म, योग्यता व कर्तव्य का भलीभांति वर्णन है। यथा धार्मिक विद्या, राजनीति, धनुर्विधा, राष्ट्रहित, समस्त धार्मिक उत्सव आयोजन, कर्तव्यपरायण, राज्यमंत्रणा एवं राजसंचालन, रणकौशल व्यूहरचना, प्रजापालन इत्यादि राज्य के समस्त कार्यो की जिम्मेवारी के साथ-साथ राज परिवार में सद्भावना, राजपुरोहित बनाए रखता था। यही कारण था कि तत्कालीन राज्य अच्छे चलते थे।

एक राजपुरोहित कभी भी कर्म से ब्राह्मण नहीं रहा। वह मात्र वंश से ब्राह्मण है। यथा एक ब्राह्मण राजपुरोहित अवश्य रहा है। ब्राह्मण के लिये राज्य में कोई उत्तरदायित्व नहीं होता चाहे राज्याधिपति कोई हो उसे अपने ब्राह्मणत्व से सरोकार रहता था जबकि एक राजपुरोहित पर सम्पूर्ण राज्य की जिम्मेवारी रहती थी। उसे प्रतिक्षण राज्य, प्रजा, राजा व राज्य परिवार की जिम्मेवारी रहती थी। उसे प्रतिक्षण राज्य, प्रजा, राजा व राज्य परिवार के बारे में चिन्ति रहना पड़ता था। पुरातन वैदिक काल में राजपुरोहित राज्य का मुख्य पदाधिकारी व प्रमुख मंत्री होता था। न्याय करने में राजा के साथ उसकी भागीदारी होती थी। साधारण पुरोहित, राजपुरोहित से सर्वथा भिन्न रहा। राजपुरोहित, राज्यमंत्री, शिक्षक, उपदेशक, पथ-प्रदर्शक होता था। धार्मिक एवं राजनीतिक मामलो का प्रमुख होता था। वह राजा के साथ युद्ध भूमि में जाता था एवं युद्ध में राजा को उचित सलाह एंव धैर्य देता था। वह स्वयं योद्धा एवं गोपनीय व्यक्ति होता था। वह पथ प्रदर्शक, दार्शनिक एवं मित्र के रूप में राजा का सहयोग करता था। वह राज्य की राजनीति में भाग लेता था। इस प्रकार उस समय राजपुरोहित, प्रत्येक राज्य का सर्वश्रेष्ठ, प्रभावशाली एवं महत्वपूर्ण व्यक्ति होता था।

अर्द्धपतन –

कालान्तर में बाहरी हमलावरो के सतत आक्रमण एवं उनके द्वारा राष्ट्र शासन करने के कारण बाहरी प्रभाव, भारत की संस्कृति पर भी पड़ा। परिणाम स्वरूप राजपुरोहित का पतन होना आरम्भ हो गया। राजपुरोहित की सलाह से राजा का चयन, उसका मंत्रिमंडल एवं राज्य में सर्वोच्च स्थान समाप्त हो गया एवं राजनीति में भी उसका प्रभाव कम हो गया। पूर्व की भांति अब उसका सम्मान नहीं रहा। राज्यमंत्रणा में भी उसकी भागीदारी विशेष अवसरो के अलावा नहीं रह गई थी। हां, वह युद्धो में भाग अवश्य लेता रहा।

पूर्ण पतन –

भारत में अंग्रेजी के आगमन के पश्चात् राजपुरोहितो का पूर्णतया पतन हो गया। उनका महत्व सामाजिक एवं धार्मिक कर्तव्यों तक सीमित रह गया। यद्यपि राज्य सेवाओं, युद्धों आदि में उनका योगदान अवश्य रहा। भारत के स्वतंत्रता संग्राम में सहयोग देने से प्रभावशाली राजपुरोहितो को अंग्रेजो ने पूर्णतया दबाया या नष्ट कर दिया जिनमें शिवराम राजगुरू, देवीसिंह रतलाम आदि प्रमुख है।

जीवन स्तर –

पुरातन काल में राजपुरोहित सभी प्रकार से सर्वश्रेष्ठ था किन्तु मध्यकाल में राजनीतिक, प्रशासनिक, आर्थिक एवं शैक्षणिक दृष्टि से पिछड़ गया। यद्यपि उनके पास जागीरे थी जिससे जीवनयापन कर रहे थे। अंग्रेजो के आने के पश्चात् पतन हो गया। हां, कुछ शिक्षित अवश्य हुए किन्तु राज्य सता में उनका महत्व घट गया।

जोधपुर राज्य से मिले कुरब-कायदा-सम्मान –

राजपुरोहित को समय-समय पर उनके शौर्यपूर्ण कार्य एवं बलिदान के एवज में सम्मानित किया जाता था जिनका विवरण इस प्रकार हैं -

1. बांह पसाव, 2.हाथ रौ कुरब 3. उठण रौ कुरब,
4. बैठण रौ कुरब, 5.पालकी, 6. मय सवारी सिरै डोढ़ी जावण रौ
7. खिड़किया पाग, 8.डावो लपेटो 9. दोवड़ी ताजीम
10. पत्र में सोनो 11.ठाकुर कह बतलावण रौ कुरब

दरबार में राजपुरोहित के बैठने का स्थान छठा था। सातवां स्थान चारण का था। ये दोनो दोवड़ी, ताजीमी सरदारों में ओहदेदार गिने जाते थे। राजपुरोहित के दरबार में आने-जाने पर महाराजा दरबार एवं गुरू पदवी दोनो तरीको से अभिवादन मिलना होता था।

राजपुरोहित के कार्य –

1. प्राचीन काल - प्राचीन काल में राजपुरोहित राजा का प्रतिनिधि होता था। राजा की अनुपस्थिति में राजकार्य राजपुरोहित द्वारा सम्पन्न होता था। वह राज्य का प्रमुख मंत्री होता था। राजा का चयन राजपुरोहित की सलाह से होता था। न्याय- दण्ड में वह राजा का निजी सलाहकार होता था। राजा को अस्त्र-शस्त्र, युद्धविद्या, राजनीति, राज्य प्रशासन आदि की सम्पूर्ण शिक्षा राजपुरोहित देता था। जैसे गुरू द्रोणाचार्य, वशिष्ठ। समय-समय पर राज्य के धार्मिक उत्सव व यज्ञ आदि का आयोजन करवाता था। इसके लिए दूसरे पण्डित वैद्य दानादि कर्मकाण्डी ब्राह्मण नियुक्त करता था अर्थात् धार्मिक मामलो का प्रमुख मंत्री था।

राज्याभिषेक आयोजन कर राजा का चयन करवाकर राज्याभिषेक करवाता, स्वयं के रक्त से राजा का तिलक करता, कमर में तलवार, बांधता, राजा को उचित उपदेश देता एवं उसकी कमर में प्रहार करके कहा कि राजा भी दण्ड से मुक्त नहीं होता है।

वह राजा का पथ प्रदर्शक, दार्शनिक, शिक्षक, मित्र के रूप में राजा को कदम-कदम पर कार्यो में सहयोग करता था।

वह युद्धो में राजा के साथ बराबर भाग लेता व जीत के लिए उत्साह, प्रार्थना आदि से सेना व राजा को उत्साहित करता। वह स्वयं भी युद्ध करता। वह एक वीर योद्धा तथा समस्त विषयों को शिक्षक होता था। युद्ध के समय, सेना व शस्त्रादि तैयार करवाना शत्रु की गतिविधियों का ध्यान रखना इत्यादि राजपुरोहित

के कार्य थे।
राजा तथा प्रजा व मन्त्रिमंडल में सौहार्द्रपूर्ण कार्य करवाता था। राजपरिवार की सुरक्षा, राजकुमार व राजकुमारियों के विवाहादि तथा राज्य का कोई आदेश, अध्यादेश उसकी सहमति अथवा उसके द्वारा होता था। राजपुरोहित एक राष्ट्र निर्माता होता था।

2. **मध्यकाल** –

बाहरी हमलावरो के आक्रमण के परिणाम स्वरूप राजपुरोहित का पतन होना आरम्भ हो गया। अब राजा का चयन एवं राज्य के कार्य उसके पास से जाते रहे। राजनीति में भी वह पूर्व की भांति नहीं रहा। अन्य कार्य यथा सामाजिक, धार्मिक युद्धों में भाग लेना, रनवास की सुरक्षा व सुविधा का ध्यान रखना यथावत रहे। अस्त्र-शस्त्र सैन्य शिक्षा देना बन्द हो गया।

3. **आधुनिक काल** –

भारत में अंग्रेजो के राज्य होने के पश्चात् राजपुरोहितो के कार्यो में एकदम बदलाव आया और वे सामाजिक व धार्मिक कार्यो तक सीमित रहने लगे। दरबार में राजपुरोहित का पद यथावत रहा। राजपुरोहित सामाजिक, धार्मिक कार्यो, त्यौहारो, उत्सवों में महाराजा की अनुपस्थिति में प्रतिनिधित्व करता। महाराजा के युद्ध में जाने तथा वापस लौटने, विवाह, त्यौहार, जन्मदिन आदि पर राजपुरोहित शुभाशीर्वाद देता। लौटने पर राजपुरोहित ही सर्वप्रथम आरती, तिलक कर राजा का स्वागत करता। राजा के बाहर से लम्बी यात्रा व अन्य कार्य शिकार आदि से लौटने पर भी सर्वप्रथम राजपुरोहित स्वागत करता (आरती तिलक नहीं)।

अभिवादन –

राजपुरोहित का सामान्य अभिवादन ''जय श्री रघुनाथ जी की'' है कहीं-कहीं (मालानी आदि क्षेत्र में) - ''मुजरो सा'' अभिवादन भी प्रचलित है। राजपूतो से मिलने पर ''जयश्री'' करने का भी रिवाज है। याचको से ''जय श्री रघुनाथ जी'' व जय माताजी की'' करने का रिवाज रहा है।
राज्य में कुरब के हिसाब से मिलान होता था और राजपुरोहित की हैसियत से भी मिलना होता था।

ठिकाणा व जागीरी स्थिति –

पुरातन समय में तो राजपुरोहित राज्य का सर्वोच्च एवं सर्वश्रेष्ठ अधिकारी होता था। मध्यकाल में युद्धो में भाग लेने, वीरगति पाने तथा उत्कृष्ठ एवं शौर्य पूर्ण कार्य कर मातृभूमि व स्वामिभक्ति निभाने वालो को अलग-अलग प्रकार की जागीर दी जाती थी। इसमें राजपूत, राजपुरोहित व चारण सामानान्तर वर्ग थे।

प्रमुख ताजीमें निम्न थी -
1. दोवड़ी ताजीम 2. एकवड़ी ताजीम 3. आडा शासण जागीर (क) इडाणी परदे वाले (ख) बिना इडाणी परदे वाले 4. भोमिया डोलीदार (क) राजपूतो में भोमिया कहलाते (ख) राजपुरोहितो एवं चारणो में डोलीदार कहलाते।

राजपूत साधारण जागीरदार, राजपुरोहित व चारण को सांसण (शुल्क माफ) जागदीरदार कहलाते थे। राजपुरोहितो के याचक - राव, भाट, दमामी, पंडे, ढोली आदि थे। इसके अलावा दूसरी कमीण कारू हींडागर कौम भी रही है।
रस्म रिवाज -

समस्त रस्मोरिवाज विवाह, गर्मी, तीज-त्यौहार, रहन-सहन, पहनावा इत्यादि राजपूतो व चारणो के समान ही है।
खान-पान - पूर्णतया शाकाहारी है। शराब का सेवन नहीं होता। अवसरो इत्यादि पर अफीम सेवन का प्रचलन रहा है एवं अभी भी है।
इस प्रकार राजपुरोहित एक अत्यन्त ही प्रभावशाली एवं महत्वपूर्ण समाज रहा है। शब्दकोष के अनुसार ''राजपुरोहित'' शब्द का अर्थ इस प्रकार है - राजपुरोहित -पुरातन काल में क्षत्रिय राजाओं सम्राटो को अस्त्र-शस्त्र युद्ध विद्या, राजनीति, धर्मनीति एवं चारित्रिक राज्य,समाज की शिक्षा देने वाली पुरातन वीर जाति है।

राजपुरोहित - वर्तमान स्थिति –

बदलते युग के थपेड़ो के बीच राजपुरोहित की गौरव गाथा मात्र ऐतिहासिक घटनाओं पर रह गई है। वर्तमान समय में राजपुरोहितो की स्थिति दयनीय नहीं तो अच्छी भी नहीं कही जा सकती। सामाजिक, राजनीति एवं शैक्षणिक दृष्टि से पिछड़ा समाज है। अल्प संख्यक है। राजकीय सेवा में भी अत्यन्त कम है। निजी व्यवसाय एवं खेती पर निर्भर रह गया है। तीनो सशस्त्र सेनाओं एवं सुरक्षाकर्मियों में अवसर प्राप्त हो जाते है। देशभक्त एवं वफादार समाज है।

उपसंहार –

स्पष्ट है कि पुरातन एवं मध्यकाल में चारणो, राजपुरोहितो एवं क्षत्रियो (राजपूतो) का चोलीदामन का प्रगाढ़ रिश्ता रहा है। सांस्कृति दृष्टि (रीति-रिवाजो) से ये कभी भिन्न नहीं हो सकते। एक दूसरे के अभिन्न अंग की तरह है। इतिहास साक्षी है - पुरातन समय में राजपुरोहितो ने क्षत्रियों को अस्त्र-शस्त्र, रणकौशल, राजनीति, धर्मनीति, राज्य संचालन, प्रजापालन, धर्म, चरित्र आदि की शिक्षा दी थी। जैसे द्रोणाचार्य ने पाण्डवो को, वशिष्ठ ने दशरथ के राजकुमारो को। चारणों ने समय-समय पर उन्हे कर्तव्यपालन हेतु उत्साहित किया। उन्होने काव्य में विड़द का धन्यवाद दिया एवं त्रुटियों पर राजाओं को मुंह पर सत्य सुनाकर पुनः मर्यादा एवं कर्तव्यपालन का बोध कराया। किन्तु समय के दबले करवटों के पश्चात् अंग्रेजी शासन के बाद ऐसा कुछ नहीं रहा एवं धीरे-धीरे मिटता गया।

राजपुरोहितो की पहचान "जय श्री रघुनाथ जी"-

जब दो राजपुरोहित मिलते हैं, तो एक-दूसरे का अभिवादन " **जय श्री रघुनाथ जी**" कहकर करते है। इससे मन में यह प्रतिक्रिया जाग्रत होती है कि जय श्री रघुनाथ जी ही क्यों कहा जाता है। अतः हमें इसके बारे में कुछ जानकारी अवश्य होनी चाहिए।

स्वर्णयुग में सूर्यवंश में एक महान् प्रतापी चक्रवर्ती सम्राट महाराज रघु हुए थे। महाराज रघु वैष्णव धर्म के अनुयायी तथा भगवान विष्णु के परम भक्त थे। महाराज रघु की कीर्ति तीनों लोकों में व्याप्त थी। महाराज रघु के नाम पर इनके कुल का नाम रघुकुल भी पड़ा। इस कुल में स्वयं भगवान रामचन्द्र जी ने अवतार लिया। महाराज रघु द्वारा भगवान विष्णु की घोर अराधना के आधार पर भगवान श्री हरी विष्णु का एक नाम रघु के नाथ (रघुनाथ) भी पड़ा। जब हम रघुनाथ का नाम संबोधन में प्रयुक्त करते हैं तो हम उसी प्राण पुरूषोतम ब्रह्मपरमात्मा सृष्टि के पालनकर्ता श्री विष्णु की जयघोषण करते है।

वैसे सम्बोधन किसी भी प्रकार से किया जा सकता है परन्तु प्रचलन का एक अलग ही महत्व होता है। इसी कारण आपसे कोई राजपुरोहित बन्धु "**जय श्री रघुनाथ जी** की" कहे तो आप तुरन्त समझ जायेगे कि वह व्यक्ति राजपुरोहित है। यही इसी सम्बोधन में निहित सार है।

श्रवण कुमार की पौराणिक कथा –

एक पौराणिक चरित्र है। ऐसा माना जाता है कि श्रवण कुमार के माता-पिता अंधे थे। श्रवण कुमार अत्यंत श्रद्धापूर्वक उनकी सेवा करते थे। एक बार उनके माता-पिता की इच्छा तीर्थयात्रा करने की हुई। श्रवण कुमार ने कांवर बनाई और उसमें दोनों को बैठाकर कंधे पर उठाए हुए यात्रा करने लगे। एक दिन वे अयोध्या के समीप वन में पहुंचे। वहां रात्रि के समय माता-पिता को प्यास लगी। श्रवण कुमार पानी के लिए अपना तुंबा लेकर सरयू तट पर गए। उसी समय महाराज दशरथ भी वहां आखेट के लिए आए हुए थे। श्रवण कुमार ने जब पानी में अपना तुंबा डुबोया, दशरथ ने समझा कोई हिरन जल पी रहा है। उन्होंने शब्दभेदी बाण छोड़ दिया। बाण श्रवण कुमार को लगा। दशरथ को दुखी देख मरते हुए श्रवण कुमार ने कहा- मुझे अपनी मृत्यु का दुख नहीं, किंतु माता-पिता के लिए बहुत दुख है। आप उन्हें जाकर मेरी मृत्यु का समाचार सुना दें और जल पिलाकर उनकी प्यास शांत करें। दशरथ ने देखा कि श्रवण दिव्य रूप धारण कर विमान में बैठ स्वर्ग को जा रहे हैं। पुत्र का अग्नि संस्कार कर माता-पिता ने भी उसी चिता में अग्नि समाधि ली और उत्तम लोक को प्राप्त हुए। कहा जाता है कि राजा दशरथ ने बूढ़े माँ-बाप से उनके बेटे को छीना था। इसीलिए राजा दशरथ को भी पुत्र वियोग सहना पड़ा रामचंद्र जी चौदह साल के लिए वनवास को गए। राजा दशरथ यह वियोग नहीं सह पाए। इसीलिए उन्होंने अपने प्राण त्याग दिए।

उल्लिखित संदर्भ

- सरवन (संस्कृत: श्रवण) अंधक मुनि के पुत्र हैं। कहते हैं यह अपने अंधे माता पिता को एक बहँगी में बिठाकर तीर्थ यात्रा कराया करते थे। रामायण के अयोध्याकांड में इनकी कथा का उल्लेख है। श्रवण अपने प्यासे माता-पिता के पीने के लिए जल किसी जलाशय से लेने गये थे और अयोध्या के राजा दशरथ भी वहाँ शिकार खेलने गये थे। दशरथ ने समझा ने कोई हाथी जल पी रहा है और इसी भ्रम में उन्होंने शब्दभेदी बाण चला दिया जिससे श्रवण कुमार स्वर्ग सिधारे। पुत्र शोकाकुल अंधक मुनि ने शाप दिया "जा राजा तू भी हमारी ही तरह पुत्र वियोग में तड़प कर प्राण त्याग करेगा।" फलत: श्रीराम के वनगमन के पश्चात दशरथ 'हा राम, हा राम' कहते मरे थे। 'श्रवणकुमार' नाटक प्रसिद्ध है जिसे महात्मा गाँधी ने भी देखा था और उन्हें इससे माता-पिता की भक्ति की शिक्षा भी मिली थी।[1]वाल्मीकि रामायण में केवल 'तापसकुमार' मिलता है अंधक मुनि का नाम नहीं है।

- श्रवण बाल्यकाल में शब्दभेदी वाण चलाने में नैपुष्य प्राप्त कर लेने के कारण राजा दशरथ को बहुत गर्व था। पावस ऋतु में सायंकाल वे धनुष- वाण लेकर सरयू के किनारे गये। उनका विचार रात के समय जल पीने के लिए आने वाले किसी वन्य पशु का शिकार करने का था। अचानक पानी की कुछ आवाज सुनकर उन्हें लगा कि हाथी चिंघाड़ रहा है। उन्होंने शिकार के लिए शब्दभेदी वाण का प्रयोग किया। आर्तनाद सुनकर उन्होंने जाना कि वाण किसी मनुष्य का प्राणघातक बना है। पास जाने पर उन्होंने एक तपस्वी को तड़पते देखा जिसने बतलाया कि वह ऋषि हैं जो सांसारिकता को त्याग कर अपने अंधे माता-पिता की सेवा में रत है तथा उन्हीं के लिए पानी लेने के निमित्त वहां आया था। ऋषि ने दशरथ को बतलाया कि वह वैश्य पिता तथा शूद्रा माता का पुत्र था। उसने दशरथ से तीर निकालने के लिए कहा तथा अपने निवासस्थान का मार्ग बतलाकर माता-पिता के लिए पानी ले जाने के लिए कहा। तदुपरांत उसने प्राण त्याग दिये। मरने से पूर्ण उसने यह भी बतलाया कि अपने अनजाने पाप की स्वयं स्वीकृति कर लेने पर उसके माता-पिता संभवत: दशरथ को शाप नहीं देंगे। दशरथ आश्रम में उसके माता पिता के पास गये। उन्हें संपूर्ण घटना बतलाकर पर उन्होंने अपना अपराध स्वीकर कर लिया। माता पिता की इच्छानुसार दशरथ उन्हें घटनास्थल पर शव के पास ले गये। वहाँ उनके विलाप करने पर इंद्र के साथ उनके पुत्र (श्रवण) ने विमान पर आकर कहा कि वे भी शीघ्र ही पुत्र के निकट पहुँचेंगे। श्रवण के चले जाने के बाद माता पिता विलाप करने लगे तथा उन्होंने दशरथ को शाप दिया कि वह भी उन्हीं की तरह पुत्र वियोग में मरेंगे। उन्होंने यह भी कहा कि आत्म-स्वीकृति के कारण ही वह जीवित हैं अन्यथा संपूर्ण कुल समेत कभी के नष्ट हो चुके होते। तदुपरांत उन दोनों ने एक चिता में प्रवेश कर प्राण त्याग दिये।

बासदेवों के संस्कार गीत –

ऊँचे रे पहड़िया के कोरबा मा हमर हय गउना हो
आबा उही गउना सब गोरिया जायं एक कुअना हो
कुअना मा दस-दस लिजुरी खिंचय एक साथबा हो
आबा उंही कइ ते हबय गइडहरा ता रहिया निहारयं हो
गोरी–गोरी गोरियन के देहिया ता पतली कमरिया हो
आबा चंद जइसन हबय राम मुखबा पय आन के धनिया हो
घोडबा चढ़े आबयं राजा पूत की ओनखर सबरिया हो
आबा लाल लपेटा पंचरंग पगड़ी की हथबा चाबुक लेहे हो
जानय इया देसबा के कउन रितिया दरद नहीं जानय हो
आबा धावत घोडबा मारयं चरसा ओखर खीचय हो
तिरिया का घोड़ अस माना अउ बना बांका बिरबा हो
आबा उहय तिरिया जनय रे उही बिरबा जउन ओखा घालय हो
पनिया पिआबा हमका रनिया की दुरिया से अइत लाये हो
आबा निहुरि के पिला राजा पुतबा पिआबय न अउबय हो
रनिया पनिया पिअब तोरे हथबय की घोडबा से न उतरब हो
आबा निहुरि ना पीबय पनिया तोरे हाथे पीबय हो
राजा अपने बाऊ के हम दुलारी पनिया नही देबय हो
आबा अपने पिया के सुकुमारी तोंहका नहीं छूबय हो
पानी न पिअउबा रनिया ता घोडबा बइठाउब हो
आबा रगद लइजाबय अपने देसबा महेरिया बनाउब हो
राजा पूत हम हयन बारी बिआही पिया मोर बड़े बीर हो
आबा कोरबा मा हमरे ललनबा होयहीं मोर बीर पूत हो

निरिया भरन चली धनिया पहिर फटही का लुगरी हो
आबा देखि –देखि हंसा सब सखिया बतायं उलटमसिया हो
राधा के फटही चुनरिया ता दुरिया नीर भरा हो
आबा आबाथी चिरिया के महक की घिनि हमका लागय हो
अस रिसियानी धनि राधा की मचिकयं गगरिया हो
सासू लय देता चुनरी सुरंगी तबय पनिया जाबय हो
बहुआ जब तू रहा नइहरबा की टूटही झोपड़िया हो
आबा कम्बल के चिथरा लपेटा अउ मूदे आपन देहिया हो
घर – घर गोबर उठाइउ चाराइउ छेरिया हो
आबा उआ दिन राधा भुलानी अउ मागा सुरंगी चुनरी हो

बरहे बरस पिया लउटे ता माया देयं थरिया हो
माया ! राधा धनि नहीं हो देखाय अटरिया हय सूनी हो
पूत तोंहर धनि बड़ी हो घमंडिन के बाबू घर बस गयीं हो
आबा जनमिन कुजाति के होरिलबा की कालिख लागाइन हो
बाबू खोलता महल के खिड़की की राधा तोंहर आयी हय हो
आबा सासू मोर बतिया सुनामा की पिया परदेश गएँ हो
माया हमका चुनरी देबाबा सुरंगी अंगिया चूड़ीदार हो
आबा कोखिया मा पिया के निसानिया इन्हय हम राखब हो
धेरिया तोंहका चुनरी देबउबय सुरंगी चूड़ीदार अंगिया हो
आबा जनमा तू इन्हय होरिलबा पिया के निसनिया हो
बहिनी जइसय हमरे एक थे ललनबा उही कस भयनेउ हो
आबा दूनउ का आपन पूत मानब पूत कस राखब हो
चुनरी मा मोरबा उकेरा घुघट करन सुग्गा हो
आबा अचर मा भइया जोधइया हरिर जस सावन हो
खोला धनिया बजुर किबरबा की पिया तोंहर आयें हां हो
आबा हमका देखाबा होरिल मुहबा की चलता घरेन अपने हो

पिया पनिया का गए रहन कुआना ता सखिया सलाहे बइठी हो
आबा तोंहका कहय सब लबरा की दुसर बिआही लाबय हो
आधी खींची गगरी छोडन चरखी गोढनिया मचिकन पाटि पर हो
पिया अइसन काहे तू कइ डारा बाताबा मोर अउगुन हो
कउनउ अवगुन नहि धनिया तू परान पियारी हो
पय अइसन तिरिया का तिरिया न जनमय होरिल एकु हो
पिया कउन उबटन देई ता कउन गीत गायी हो
आबा कउन तोंहार नेउता भेजी ता कउन बरात जइ हो
भउजी मोर करिहीं रे उबटन ता माया गीत गइहीं हो
आबा मामा मोर नेउता भेजिही की भाई मोर बाराती हो
पहिली फेरा के होत दुसर के लेत हो
आबा मडये से उठी रे अगिनिया ता जरि – भूंजि जाई रे
पिया सबति के अंखिया मुदे पहिल फेरा लेतय हो
आबा दुसरे मा पेट मरोरय तीसर मा गोडबा हो
लउटि परे सगला बराती सबतिया के गुन देखि हो
आबा चउथे फेरा सबति नदानी पिया घर आयें हो
रजऊ जु आयें अटरिया ता धनि हंसी पूँछय हो
आबा कंहा हबय हमर सबतिया उहय गोरी देंहिया हो
पिया कंहा हबय डर हो दहेजबा कंहा हय पलंगिया हो
आबा कंहा हबय सबति केर ओढनिया ता कंहा हय सबतिया हो

सबति का रोबयं आयीं निकाले लंबा घुघुट हो
आबा मुह लुकबाये पिया रोबयं सबतिया के कारन हो
मन मोर ले हिलोर नदिया कस पनिया हो
आबा मोर पिया मोरय होइहीं लिहन सात फेरबा हो
घेरबा मा हबय मंगलसूत ता मगिया सिंदुरबा हो
आबा मनबा जपय पिया–पिया राम कस सिया हो

पिया पनिया का गए रहन कुअना ता सखिया सलाहे बइठी हो
आबा तोंहका कहय सब लबरा की दुसर बिआही लाबय हो
आधी खींची गगरी छोडन चरखी गोढनिया मचिकन पाटि पर हो
पिया अइसन काहे तू कइ डारा बाताबा मोर अउगुन हो
कउनउ अवगुन नहि धनिया तू परान पियारी हो
आबा तू हउ समरे बदन के ता गोरि धनिया चाही हो
पिया कउन उबटन देई ता कउन गीत गायी हो
आबा कउन तोंहार नेउता भेजी ता कउन बरात जइ हो
भउजी मोर करिहीं रे उबटन ता माया गीत गइहीं हो
आबा मामा मोर नेउता भेजिही की भाई मोर बाराती हो
पहिली फेरा के होत दुसर के लेत हो
आबा मडये से उठी रे अगिनिया ता जरि – भूंजि जाई रे
पिया सबति के अंखिया मुदे पहिल फेरा लेतय हो
आबा दुसरे मा पेट मरोरय तीसर मा गोडबा हो
लउटि परे सगला बराती सबतिया के गुन देखि हो
आबा चउथे फेरा सबति नदानी पिया घर आयें हो
रजऊ जु आयें अटरिया ता धनि हंसी पूँछय हो
आबा कंहा हबय हमर सबतिया उहय गोरी देंहिया हो
पिया कंहा हबय डर हो दहेजबा कंहा हय पलंगिया हो
आबा कंहा हबय सबति केर ओढनिया ता कंहा हय सबतिया हो
सबति का रोबयं आयीं निकाले लंबा घुघुट हो
आबा मुह लुकबाये पिया रोबयं सबतिया के कारन हो
मन मोर ले हिलोर नदिया कस पनिया हो
आबा मोर पिया मोरय होइहीं लिहन सात फेरबा हो
घेरबा मा हबय मंगलसूत ता मगिया सिंदुरबा हो
आबा मनबा जपय पिया–पिया राम कस सिया हो
आधी रे उमिरिया के होत होरिल आयें कोखिया हो
आबा सगरिउ उमिर गइ की सोचत होरिल एकु हो
कउने–कउने देउथाने नहीं भटकन नहायन भोररतिया हो
आबा बाभन भूका खाबायन पय होरिल नहीं पायन हो

अब पायन चउथे पन ता उमिर गयीं सिराय हो
आबा तिरिया पजाय न होरिल न तिरिया कहाबय हो
ई गउना केर रितिया की रीतिया का बेढ परय हो
आबा नारि का कंहा रे बझिनिया अउ बन का निकारा हो
गाय जस पाला रे मेंहेरिया की दुधबा के लोभी हो
आबा दूनउ के जनम अकारथ जु हो बहिला बाझिन हो

कारी –कारी छाई रे बदरिया बरसय बड़े बूंदा रे
आबा भींजत चली पनिहारिन कुअनबा का पनिया हो
कउन खानाबय रे ताल की कउन तलरिया हो
आबा कउन खानाबय रे कुअना की कउन सगरबा हो
राजा खानाबय रे ताल की रानी तलरिया हो
आबा हरि जी खनाबा मोर कुअना की दइउ सगरबा हो
कइसे बंधउबय रे ताल की कइसे तलरिया हो
आबा कइसे बंधाबय रे कुअना की कइसे के सगरा हो
कोदये बंधउबय रे तलबा सामे तलइया हो
आबा मोतियन बांधब कुअना की मटियन सगरा हो
सातउ सखिया संग पनिया का गयीं पनिहारिन हो
आबा बोरे न बूडय रे गगरिया की लिजुरी पइरय लागी रे
सब सखी नीर लय लउटी की धनि मोर नहीं आयीं हो
आबा गोड धोमय घटबा मा रनिया की देखय सबरिया हो
पुरुबय दिसा से घोडबा आबा की आबा घुडसबरबा हो
आबा मुडबा पर गगरी उठाबा की अस गरू लागय हो
नीर भरी तोर गगरिया उठाये नहीं उठय हो
आबा कुछु नीर रनिया अडउतू ता गगरी हलुक होत हो
रहिया अधगध गगरी छलकिहीं ता चुनरी हमार भींजी हो
आबा भींजि जइहीं अचकन अंगिया की थर–थर कांपी देंहिया
सामर देहियां सुहाबन पातर कमरिया हो
आबा मोहय रानी तोर घुघटबा की छतिया चलाबय रेतिया
आँखी नहीं आंजे गोरी कजरा न बिंदिया लिलारे मा हो
आबा कउन दुःख अबा रे चनरमा कस मुह राहु लीलय हो
तोर पिया बसयं परदेस की सासू गरिआबय हो
आबा तोर नइहरबा हय दूर धऊँ पिया सबति बिआहिन हो
रहिया न मोर पिया परदेस न सासू गरिआमय हो
आबा न मोर दूर नइहरबा न पिया सबति लय आयें हो
छोड़ा गोरी पानी के भरब तू चला हमरे सथबा हो
आबा होता तू घोडबा सबार की बनतिउ मोर धनिया हो
जिभिया मा लागय तोरे अगिया की अंखि तोर फूटती हो

आबा आगी लागय तोरे नेहिया बेढ तोरे धनबा हो
रानी तोखा हंसुली गढउबय की नउलख हरबा हो
आबा गोडे के मुंदरी लइअउबय माथे केर बिंदिया हो
हंसुली हय मोरे बहुतेरे खुटिन टंगा हरबा हो
आबा मुदरी हय पिया सउ साठि माथे केर बिंदिया हो
चल रनिया कंगना गढउबय चुदिया पहिरउबय हो
आबा तोखा ओढ़उबय सुरंगी चुनरी बनि जा मोर धनिया हो
कंगना गढइहीं मोर हरि जी की चुइदिया हरिन जी हो
आबा चुनरी ओढाई भतार उहय मोर सबकुछु हो
भरि के गगरिया पनिहारिन के अपने दुअर आयीं हो
आबा सासू पूछय का रे बहुरिया लागीं कंहा देरिया हो
पटकब फुटिही गगरिया सुना मोर सासू हो
आबा पनघट केर रे बतिया कही नहीं जाई हो
की ताना मारिस तोखा बहुरिया की गरिआइस हो
आबा की तोखा बतिया सूनाइस बताबा तू हमसे हो
सासू मोर उहय घोडबा लीन्हे पुछय मोर जतिया हो
आबा पूछय मोर मन केर बतिया सूल गडय छतिया हो
बहुआ केखे अस ओखर सुरतिया कइसन कद कांठी हो
आबा केखे अस ओखर चाल की तोंहका ठगि लिहिन हो
छोटकी ननद अस सुरति देवर कद कांठी हो
आबा ससुरू कस ओनखर चाल कहयं बनु धनिया हो
बहुआ ई ता तोर आंही रजन जी की मोरे ललन जी हो
आबा लेत रहें तोंहर परीक्षा की तू केतनी सफिया हो
सासू ई कइसन धनिया परीक्षा की तउलयं मनबा हो
आबा मनबा के का काही बतिया होय कब चुकिया हो
चुकिया जु होंती मोर सासू ता घर से निकलतें हो
आबा लागत चरित मोर दगबा नइहरे ननिअउरे हो
तुहिन आहा मोर बहुरिया तुहिन मोर सब कुछु हो
आबा पिया तोंहर गीं परदेसिया लउटि कब आबयं हो
जात के सुना घोडसबरबा लउटि के आबा न हो
आबा हम चलब तोंहरे संघे बनब तोंहर धनिया हो

कारी –कारी छाई रे बदरिया बरसय बड़े बूंदा रे
आबा भींजत चली पनिहारिन कुअनबा का पनिया हो
कउन खानाबय रे ताल की कउन तलरिया हो
आबा कउन खानाबय रे कुअना की कउन सगरबा हो
राजा खानाबय रे ताल की रानी तलरिया हो
आबा हरि जी खनाबा मोर कुअना की दइउ सगरबा हो

कइसे बंधउबय रे ताल की कइसे तलरिया हो
आबा कइसे बंधाबय रे कुअना की कइसे के सगरा हो
कोदये बंधउबय रे तलबा सामे तलइया हो
आबा मोतियन बांधब कुअना की मटियन सगरा हो
सातउ सखिया संग पनिया का गयीं पनिहारिन हो
आबा बौरे न बूडय रे गगरिया की लिजुरी पइरय लागी रे
सब सखी नीर लय लउटी की धनि मोर नहीं आयीं हो
आबा गोड धोमय घटबा मा रनिया की देखय सबरिया हो
पुरुबय दिसा से घोडबा आबा की आबा घुडसबरबा हो
आबा मुडबा पर गगरी उठाबा की अस गरू लागय हो
नीर भरी तोर गगरिया उठाये नहीं उठय हो
आबा कुछु नीर रनिया अडउतू ता गगरी हलुक होत हो
रहिया अधगध गगरी छलकिहीं ता चुनरी हमार भींजी हो
आबा भींजि जइहीं अचकन अंगिया की थर-थर कांपी देंहिया
सामर देहियां सुहाबन पातर कमरिया हो
आबा मोहय रानी तोर घुघटबा की छतिया चलाबय रेतिया
आँखी नहीं आंजे गोरी कजरा न बिंदिया लिलारे मा हो
आबा कउन दुःख अबा रे चनरमा कस मुह राहु लीलय हो
तोर पिया बसयं परदेस की सासू गरिआबय हो
आबा तोर नइहरबा हय दूर धऊँ पिया सबति बिआहिन हो
रहिया न मोर पिया परदेस न सासू गरिआमय हो
आबा न मोर दूर नइहरबा न पिया सबति लय आयें हो
छोड़ा गोरी पानी के भरब तू चला हमरे सथबा हो
आबा होता तू घोडबा सबार की बनतिउ मोर धनिया हो
रानी तोखा हंसुली गढउबय की नउलख हरबा हो
आबा गोडे के गुंदरी लइअउबय माथे केर बिंदिया हो
हंसुली हय मोरे बहुतेरे खुटिन टंगा हरबा हो
आबा मुदरी हय पिया सउ साठि माथे केर बिंदिया हो
चल रनिया कंगना गढउबय चुदिया पहिरउबय हो
आबा तोखा ओढ़उबय सुरंगी चुनरी बनि जा मोर धनिया हो
सुना हो छयल बनबा पिया ता तू केतना सनेह करबा हो
आबा काल्हि बताउब आपन मनबा आजू हमका जाय दा हो
ननदी का धता हो पढाउब ननद लबरी बोलब हो
आबा पियबा से नेहिया छोड़ाउब चलब तोंहरे संगबा हो
भरि के गगरिया पनिहारिन के अपने दुआर आयीं हो
आबा सासू पूछय का रे बहुरिया लागीं कंहा देरिया हो
पटकब फुटिही गगरिया सुना मोर सासू हो

आबा पनघट केर रे बतिया कही नहीं जाई हो
की ताना मारिस तोखा बहुरिया की गरिआइस हो
आबा की तोखा बतिया सूनाइस बताबा तू हमसे हो
सासू मोर उहय घोडबा लीन्हे पुछय मोर जतिया हो
आबा पूछ्य मोर मन केर बतिया सूल गडय छतिया हो
बहुआ केखे अस ओखर सुरतिया कइसन कद कांठी हो
आबा केखे अस ओखर चाल की तोंहका ठगि लिहिन हो
छोटकी ननद अस सुरति देवर कद कांठी हो
आबा ससुरू कस ओनखर चाल कहयं बनु धनिया हो
बहुआ ई ता तोर आंही रजन जी की मोरे ललन जी हो
आबा लेत रहें तोंहर परीक्षा की तू केतनी सफिया हो
सासू ई कइसन धनिया परीक्षा की तउलयं मनबा हो
आबा मनबा के का काही बतिया होय कब चुकिया हो
चुकिया जु होंती मोर सासू ता घर से निकलतें हो
आबा लागत चरित मोर दगबा नइहरे ननिअउरे हो
तुहिन आहा मोर बहुरिया तुहिन मोर सब कुछु हो
आबा पिया तोंहर गीं परदेसिया लउटि कब आबयं हो
जात के सुना घोडसबरबा लउटि के आबा न हो
आबा हम चलब तोंहरे संघे बनब तोंहर धनिया हो
नहीं जानन हरि जी के छलना छयल के सनेहिया हो
आबा नहीं जानन करम का अपने कउन दुःख देई हो
कउन – कउन दुखबा देखउबा की कब तक जिअउबा हो
कउने – कउने नारा के पानी पिअउबा ता कंहा भटकउबा हो

बाजन बाजय अजोध्या बजत नीक लागय हो
आबा बाजय दसरथ दुअरिया ता कोसल के अगना हो
सोने के सिंहासन राजा दसरथ ता गउआ संकल्पय हो
आबा मचिया बइठी रानी कोसल ता पटना लुटामय हो
अपने ओसरबा रानी केकई ता बिरह बोली बोलयं हो
बहिनी धीरि –धीरि पटना लुटाइउ धरम कुछु राखिउ हो
नित नहीं राम जनमिहीं नितहिं नहीं सोहर हो
आबा नित नहीं मेघ बरसिहीं नितय नहीं सोहर हो|
राम के बड़ी –बड़ी अंखिया कजल भल सोहय हो
आबा कजलेन केर कजरउटा उहय राम देबय हो

झुरुहुरि-झुरूहुरि नदी बहय कदम बिरिछ तरे हो
आबा पंसबा अत खेलयं रामा निमिया तर अउर बमुर तर हो
राजा तोंहर धनि बेदना से व्याकुल की जुडबा न छोडयं हो
राजा ! धनि लघे जाता तू आजू की हियबा जुडउता हो
आबा पंसबा ता फेंकय निमिया तर अउर बमुर तर हो
झपटि के आयें गजोबरी कंहा धनि बेदना हो
रानी कउनय अंग तोरे कसकय की कउन अंग सालय हो
आबा कहमा से उठी हबय पीरा ता बेदना व्याकुल हो
दहिनिन अंग मोरे पीरा बाम अंग सालय हो
आबा पंजरे से उठी हय पीर ता बेदना व्याकुल हो
कहा ता कजल बन जाई की पतिया लय आयी हो
आबा कहा धनि चन्दन कटाई के पलंग सलाई हो
राजा न तू काजल बन जा तू न पतिया हामार लय जा हो
राजा ! नहीं तू ता चन्दन कटाबा न पलंग सलाबा हो
जे राजा मन से न बिसरयं की चित से न उतरय हो
आबा उहय राजा कजल बन जइ हीं ता हम कइसे रहबय हो

ब्रिन्दहि बन एकु बढई नंदन बन जइहीं हो
बढई ! गढि लाबा लाली पंलगरिया राजन घर चाही हो
एकु चाही लालि पलगरिया दुसर दूनउ मोरबा हो
आबा तीसर चाही करन सुगनबा चउथ कठपुतरी हो
केही चाही लालि पलंगरिया ता कही दूनउ मोरबा हो
आबा केखा चाही करन सुगनबा ता केखा कठपुतरी हो
ललन चाही लालि पंलगरिया रजन दूनउ मोरबा हो
आबा देवरू का करन सुगनबा ननदि कठपूतर हो
बिछय लागीं लालि पलगरिया कुहूकय लागें मोरबा हो
आबा बोलय लागे करन सुगनबा नचय कठपूतर हो

केहि बन उपजय सुपरिया ता केहि बन नरियर हो
आबा केहि बन उपजी कुसुमिया ता मय चुनरी रंगबय हो
सासू बन उपजय सुपरिया ता ससुर बन नरियर हो
आबा पिया बन उपजय कुसुमिया ता रंगबय चूनर हो
केखे आगे पियरी पहिरबय केखर आगे निकरब हो
आबा केखे आगे ललना खेलउबय केहिया आगे बिहसब हो

सासू आगे पियरी पहिरबय ससुर आगे निकरब हो
आबा पिया आगे ललना खेलउबय ननद आगे बिहसब हो

सोने के सिंहासन राजा दसरथ ता मनहिं बिसूरयं हो
आबा एकउ न मोरे ललनबा अजोध्या राजि सूनी हो
बन से जु निकरयं बन तपसी राजन समुझाबयं हो
आबा चारि ललन तोंहरे होइहीं अजोध्या राजी करिहीं हो
एतना जु सुनिन राजा दसरथ ता तपसी के बन गए हो
तपसी देहूं न बन के औषधिया मय रनिया घुटउबय हो
कहमा केर सिलउँटी ता कहमा के लोढबा हो
आबा कइसे के पिसब अउषधिया ता रानी लका पिआउब हो
सोनेन केर सिलउटी ता रुपें केर लोढ़ा हो
आबा रूचि –रूचि पिसयं औषधिया ता रानी क पिअउबय हो
एक घूँट पिअय रानी कोसल ता दुसर सुमित्रा हो
आबा तीसर घूँट पिअय रानी केकई ता तीनउ गरभ होयं हो
कौशिल्या के जनमे सिरी राम सुमित्रा के लछिमन हो
आबा केकई के भारत–भुआल तीनउ घर सोहर हो

रनिया गरभ मास पहिल ता राजा सुना मोर हो
आबा सोबय का मन परय छांया मा राजा ओरिया तर हो
दुसर महीना जब लागें ता मठबा का मन करय हो
आबा निखी साधि पिया लागि परोसी पूरन करयं हो
तिसरा महीना लाग रनिया ता लपसी का मन करय हो
आबा साधि पुजामा मोर जेठी उहय मोर आपन हो
चउथ महीना लाग रनिया खीर खांड का मन करय हो
आबा साधि पुजइहीं देउरानी उहय मोर आपन हो
पंचबा महीना लाग रनिया ता पुरिया का मन करय हो
आबा सासु इया साधि पुजामय उहय मोर आपन हो
छठबा महीना लाग रनिया ता नेबुला का मन करय हो
आबा देवर पुजइहीं इया साधि उहय मोर आपन हो
संतबा महीना लाग रनिया ता घेउरा के मन करय हो
आबा साधि पुजइहीं मोर ननद उहय मोर आपन हो
अठबा महीना लाग रनिया मोर मसुआ के मन करय हो
आबा साधि पुजइहीं ननदोई उहय मोर आपन हो
नउमा महीना रनिया कोठरिया मा सोबय का मन करय हो

आबा साधि पुजइहीं दीनानाथ उहय मोर सर्जक हो
होत भोर भिनसारे की पहु राजा फाटत हो
आबा जनम लिहिन आदित नेउरा की मोर हो कोखिया हो
धाबत आयी चमारिन की सोनमा कतत्नी लेहे हो
आबा ललना के काटय नालिया ता गंगाजल नहबाबय हो
रेशम गंतरा पहुडय ललन ता मोतियन थाल सजी हो
आबा पटना लुटामय ओनखर बाबू ता बाजय बधइया हो
मोहर देबय तोहका ननदी की सकरी पहिरउबय हो
आबा नीली –नीली चुनरी ओढ़उबय गजरा गुहउबय हो
सोनबा–रुपेन के इंटिया ढलाबा बरहदल बनबाबा हो
चारिउ दिसबा झरोखा लगबाबा बांधाबा राजा बडबा हो

बघेली उखान –

बासदेव जाति उखान और बुझउल कहने में बड़े माहिर होते हैं | यह जाति लगातार देश देशांतर का भ्रमण करती रहती है अतः इनके अनुभव ज्ञान समान्य जन से कंही ऊंचे दर्जे का होता है | इं जातियों में अबूझ बुझउल और उखान कहने की परम्परा रही है | यह तरह-तरह के करतब और मानसिक अभ्यास वाले खेल भी करते हैं | इनके द्वारा जो बुझउल मिले वो मैं निम्न रूप से प्रस्तुत कर रहा हूँ |

१.साझे के बूढ़ किराय के मरय |

२.सुपबा बोलय ता बोलय चलनिया का बोलय जेखे बत्तीस ठे छेंद |

३.सउखिन बुढ़िया चटाई के लंहगा |

४.रहय रिसानय ताके बटुअय रहय |

५.न घर रहे न गोबर पाथे |

६.नइ नाउन बांसे के कत्तनी |

७.गुड़ खाय गुलगुला से परहेज करय |

८.खात रहेन चकउड़ा ता खाय लागन पान,दिन मोर उहय हय समउ मोर आन |

९.खात रहन दूध भात चरावत रहन गइया ,चाकरी के साधि लागि भीख मागन भईया |

१०.मरत रहें माड़ का चोरक्य लागें भात का |

११.जिअत न परसय माड़ मरे मा परसय खांड |

१२.डांगा अउर बडबाही कुकुर मरिगा आबा जाही |

१३.काहे मान मनिगमा जइहीं काहे मलगपुर के रोटी खइहीं |

१४.होई राति ता होई राति लड़िका खइहीं दारिन भात |

१५.गुड़ खाय का परी कान छेदाबय का परी |

१६.आपन भडउना मा खोट ता परोसी के कउन दोस |

१७.लोहा मा खोट ता लोहार के कउन दोस |

१८.मूड फुलये हयन ता छूरा के कउन डेरि |

१९.छंडइया हरबाह रहय ता नउजोत पनही मागय |

२०.लहटा घोड़ बुसउले ठाड़ |

२१.भूत के चित्त बहेरे मा |

२२.छेरी के चित्त महेरी मा |

२३.भेड़ी पियरा का खाय जानय |

२४.अकेले श्यामबहू सगल गाँव फगुहार |

२५.लहटी गाय गोलंइदा खाय धाय-धाय मउहारे जाय |

२६.नउआ जाति छत्तीसा खाय आन के पीसा |

2७.अइ राम के जइ लगोदा |

2८.भल मारा रोबइअयं रहन |

२९.धनउ गा धरमउ गा |

३०.गांडि मा पइनारी डारय कहय बूसा मा जाति लाघी |

३१.भूके भजन न होय भुआला आपन लय ला कंठी माला |

३२.नवा चकरा पुरान थरी आबा बहू धान दरी |

३३.उआ हमरे टठिया मा मुरगा खाइस ता हम ओखे मा गुह खाब |

३४.बाम्हन नाचय गोडिन देखय |

३७.केउ मरय केउ मल्लाह गाबय |

३६.केहू के घर बरय केउ पोंद सेंकय |

३७.तलाउ खोदाइन का रहिगा मंगर पहिलेन आयगीं |

३८.हग्गा न डेराय बग्घा का |

३९.पूजय के साइत बोकरय हेराय गा |

४०.दुइ आना के बिटिया चार आन भेंट कराई |

४१.नाउ गहागह मुह कुकुरे अस |

४२.आंधर के आगे रोबय आपन दीदा खोबय |

४३.आंधर का दांत देखाबय कहय कइठे दांत हय |

४४.सरग मा होरा भूंजय |

४५.बिना अपने मरे सरग नहीं देखाय |

४६.दान के बछिया के दांत नहीं गिनय का होय |

४७.सान सांगय मा जाय गांडि घसिलत जाय |

४८.ठकुरे के पिलई आय ता का पिसाने मा मूती |

४९.उडय का पिसान ता जतबय उडिगा |

५०.भितरे के मारु बनिअय जानय |

७१.लेनी न देनी उपर से तनेनी |

७२.जेतना पोंदे मा ताल आबाथय ओतना ढोलकी मा नहीं आबय |

७३.सब काम कर से गाना गांडि के जरि से |

७४.चोदय का न चादय का बुरि मा बइठ के पादय का |

७५.गुह खाय पाद का घिनाय |

७६.गरीब के मेंहेरिया सब के भउजाई लागय |

७७.आपन लड़िका सब का पिरात हय |

७८.हमरिन बंदरिया हमहिन का चकमा देय |

७९.भंइस के आगे बीन बाजय ठाडि भंइस पगुराय |

६०.आंखी न कान कजरउटा नउठे |

६१.सब लागिहीं काकी ता लंड कंहा राखी |

६२.सब कुकुर बनारस जइहीं ता दोना कु चाटी |

६३.नउआ के बराते मा सब ठकुरय ठाकुर |

६४.जाति माँ न पाति मा कुकुर चला बराति मा |

६५.लाला के बच्चा कबो न सच्चा जब सच्चा बेइमान के बच्चा |

६६.अस्सी कोस मा होय जु तेली तबो न करा जबरपेली |

६७.सूजी सुआ सुनार न मानी केहू के आन |

६८.पथरा कस महादेउ |

६९.फूलि के दरवाजा होइगीं |

७०.जेखर जइसन बाप महतारी ओखर ओइसन लड़िका,

जेखर जइसन घर दुआर ओखर ओइसन फरिका |

७१.चुल्हा मा हगय कहय सनीचर लहटा हय |

७२.राजा के न आगय नीक न पाछय नीक।

७३.करय न खेती परय न फंदा, घर–घर नाचय मूसर चंदा।

७४.अइसन खाय न मरय न मोटाय।

७५.घर के महुआ बिन न जाय महुआ बिनय पहारे जाय।

७६.न हगय न गइला छोडय।

७७.टाठी हेरान गगरी मा हांथ डारय।

७८.न मरय न मरगा छोड़य।

७९.नमाइन के गोह दिखिन कंहय मउसिया पायंलागों।

८०.न मरु देखय न रोबाई छूटय।

८१.नवा नउ दिन पुरान सब दिन।

८२.आन के पतरी के बरा मोटय होत हय।

८३.आपन गुह कबो नहीं गनधाय।

८४.तेली के तेल जरय मसालची के गांडि ओदरय।

८५.चमरा के मनाये बरदा नहीं मरय।

८६.चोर चउतरा नाचय साहु का फांसी होय।

८७.दुधार गाय के लातउ सहय का परत हय।

८८.झूर पइलगी जिउ झन्न।

८९.छूंछी तोखा कु पूँछी।

९०.हगासा लड़िका के भउंहय चिन्हाय जाथी।

९१.होती बीरबा के चीकन पात।

९२.अनाडी चोदइया बुर के सत्यानास।

९३.नबाये न नबय मूसर पढाये न पढय खूसड।

९४.मुह खाय गांडि ललाय।

९५.गीत नारि गय बीसर जब बिटिया भय तीसर।

९६.काज नहीं भा ता घूरेउ मा चढ़ी के नहीं दिखे आहन।

९७.दुआरे मा आयी बराति ता पगरइतिन का लागि झडासि।

९८.गांड गोड़ामन अगना मा भगत होय।

९९.तिरिया चरित दइअउ न जानय।

१००.बीछी के मन्त्र न जानय किरबा के बिल मा हाथ डारय।

१०१.गइबा बिआय बरदबा के गांडि फाटय।

१०२.अहिर गड़रिया पक्का चोर बिन-बिन कंडा करय अंजोर।

१०३.बड़े-बड़े बहे जा गड़रिया कंहा पार लगाए।

१०४.कंहा बसय कंहा गांडि घसय।

१०५.चोदय का चमारिन उपासय का अइतबार।

१०६.तेल जरय सरकार के रीबा होय अंजोर।

१०७.जंहा न रूख उंहा रेंडय रूख।

१०८.आपन ढेड़ा न देखय आन के फूली निहारय।

१०९.गुरु गुरुअय रहिगीं चेला खांड होइगीं।

११०.सीधे बनिया गुड़ न देय मुटका मारे भेली दय देय।

१११.गोंहू के साथे भथुअउ पानी पायगा।

११२.गरिआर बरदा चलय न चलय ता आड़ मेड़ ओदारत चलय।

११३.जबरा मारय रोबय न देय।

११४.हरहा के साथे कपिलउ के नास।

११५.लेय का न देय का सिरबा भर बढ़बाबय का।

११६.सरी गांडि अंगरेजी बाजा |

११७.गांडि मा गुह नहीं नउ सय सुअरी नेउतय |

११८. आन के माथे नउ ठे मेहर |

११९.मुह माठउ न पाबय गांडि दहिउ-दहिउ चिल्लाय |

१२०.हरबिरहा सन्यासी जेठ मा लउआ बोबय |

१२१.कबो हमरेउ भडेरे बइर पाकी |

१२२.बभनी मा भास नहीं हरउ जोते कुकाम |

१२३.जी बिआनी ती ललानी बेटा लय परोसी ठडिआनी |

१२४.सउंजय – सउंजि बिआनी पथ पाइन न पानी |

१२५.मेहरी का धोती नही बिलारी का लंहगा सिआमा |

१२६.पइसा न दाम मिठाई दिखे रोय-रोय आबय |

१२७.घर मा भूंजी भांग नहीं सइंया होइगीं इंटरपास |

१२८.धरय का कांन न उखारय का चुंदई |

१२९.बाप पादय न जानय पूत बंसी बजाबय |

१३०.मांगे का तेल नहीं मनुस कहय मोगउरा खबाउ |

१३१.आउ बर मुहे परु |

१३२.कांदउ मा गोड न बोरय बडकबा चिनगा हमारय आय |

१३३.लीपी-पोती डेहेरिया पहिरी ओढी मेहेरिया |

१३४.नाचत न बनय कहय अगनय टेढ |

१३५.झोरी मा झांट नहीं सराहे मा डेरा |

१३६.गांडि न सांडि डोला हुमक के चढ़य |

१३७.सीगट पाइस पनही कचरय लाग जार |

१३८.अंधे पोमा कुत्ते खांय |

१३९.बड़ी बड़ाई फटही रजाई |

१४०.अकेला माल सकेला |

१४१.अपन घर मा कुकूरउ बरियार |

१४२.एतना होता जु सस्तारे काहे फिरता गांड उघारे |

१४३.बड़े घरे के बड़ी दुआरी आधी मूंदी आधी उघारी |

१४४.दिन भर मागा तउ दिया भर राति भर मागा तउ दिया भर |

१४५. आन के काम सिकन्दे जांय |

१४६.घर के लड़िका गोही चाटा मामा खां अमावट |

१४७.देखय का न ताकय का कउआ कानय लइगा |

१४८.आबय का न जाय का नाउ धराइन विद्यारथी |

१४९.आबा जा घर तोंहारय आय |

१५०.बिन मागे मोती मिलय मांगे मिलय न भीक |

१५१.आपन काज अउ दुसरे के लड़ाई बहुत नीक लागाथी |

१५२.जांगर न जंगरउटा खायका गोंहू के रोटा |

१५३.काम करय का टरकू खाय का बड़कू |

१५४.काला अक्षर भइस बराबर |

१५५.आंखी न कान मज़ा मारय आन |

१५६.पांचउ अंगूरी बराबर नहीं होय |

१५७.हर कउरे सीता राम नहीं होय |

१५८.पांचउ अंगूरी घिये मा मूड कराही मा |

१५९. मगनी के मांग बिलरिया के टांग

बघेलखंडी मुहावरे (लोकोक्ति)-

१.करिया बाभन गोर चमार मंजा ठाकुर महा गमार।

२.ठाकुर ऐसी जाति से दूर रहे कल्याण ,प्रीति करे से धन हरय बैर करे से परान।

३.तीन जाति मा खूब पटत हय गाडर ,गोंड़ ,गड़रिया ,

अउ तीन जाति मा काटा नासी कुकुर , घोड़ ,मेहेरिया।

४.लाला के बच्चा कबो न सच्चा जब सच्चा बेइमान के बच्चा।

५.अस्सी कोस मा होय जु तेली तबो न करय जबरपेली।

६.शुक्र केर बदरिया रही शनीचर छाय, घाघ कहय अब घाघरी बिन बरसे न जाय।

७.पानी बरसे आधा पूस आधा दाना आधा बूस।

८.सोम,सनिश्चर पूरुब रूंधा उत्तर मंगल बयर बिरोधा।

९.काकुन खेती बाज धन, भइस तुरंग बिआय।

अहिर मिताई तब करय, जब सकल जाति मरि जाय॥

१०.बड़ा पाद गजराज कहाबय, छोट पाद छोटकउनू।

ठाई-ठुआ हंसी करामा ,जान लें भसकउनू॥

बघेली बुझौअल (किहनी)-

१. सरग पताली खोन्था लाबय, भूंइ पड़ोरय अंडा।
इहय कहानी बूझु रे गोरी तबय उठाउब हंडा।
२. टेढ़–मेढ लकड़ी पहार चढ़ी जाय।
३. सब चलेगी बुढ़ऊ लटक गीं ,छोट बुदा बाबा घर ताकय।
४. उपर से कठोर बेटा बाप से गोर।
५. एक्खे डउकी के पीछे दूध।
६. एक्खे मंदिर मा दुइठे दुआरी उठाय के पटकिन निकले महा देव।
७. इन्हीठे रहे गोरी हम जइथे बहुत दूरी।
८. गरीब फेंकि देय अमीर जेबा मा धय लेय।
९. छुनुन-मुनुन चली आबय देत आबय गारी ,सासु के पतोह लागय ससुर के महतारी।
१०. पेंड़ का रहय थापक थइया, पत्ता रहय जंजाल।
खाय मा गुड़शाकर लागय, जानउ मीत गोपाल।
११. टीप रे टपाक रे कपार काहे फोरै , सेंगरे से मोगरे से राति काहे रेंगे।
१२. बाप पूत के एकइ नाउ नाती के दूसर नाउ।
१३. गुरू आयें गुरुआइन आयीं, आयें नब्बे चेला।
तीन सोहारी दउडी आयीं खाइन अकेली अकेला॥
१४. टाठी भर राई सगल गांउ छितराई।
१५. बड़े बिहन्ने तोंहरे सूअर लोटय।
१६. पांच कबूतर पांचय रंग महल मा जातां एकय रंग।
१७. चार गोड चउरंगा आठ गोड भुजंगा , पांच गांडि एक पूंछ।
१८. सांकर कुइंया सींक न जाय, मिरगा पानी पी – पी जाय।
१९. एक झटका मा नउ सय रूख, ता नउ सय झटका मा कय सय रूख।
२०. चरन्नी अठन्नी नउ ठे रुपिया आबय तीन।
२१. .पांच ठे दुआरी मा एकय अगनइया।
२२. सारा हय गला हय पय लडय का तैयार है।
२३. घर-घर चलेउ सुघर घर परेउ, जरउ मोर करम खटोली तर परेउं।
२४. देश दिखन परदेस दिखन , पय घइला अस बरी नहीं दिखन।
२५. बागय का बगार हगय का ओसार।
२६. एक्खे लड़िका के नियरे ससुराल आबत जात गोड पिराय।
२७. काली काय गे एक्खे सींग , जेतना खबाबा ओतनय खाय।
२८. लीप आयन पोति आयन माछी छितराय आयन।
२९. दिन के इहन उहन राति का जाई कंहा।

३०. मैं हरी-भरी मुझे छोड़ के मेरे बेटे को खाओ |

३१. हरी थी भरी थी बाबा जी के बाग़ में दुसाला ओढ़े खडी थी |

श्रवण कुमार की कथा रामायण प्रसंग-

महाराज दशरथ ने कहा, "कौशल्ये! यह मेरे विवाह से पूर्व की घटना है। एक दिन सन्ध्या के समय अकस्मात मैं धनुष बाण ले रथ पर सवार हो शिकार के लिये निकल पड़ा। जब मैं सरयू के तट के साथ-साथ रथ में जा रहा था तो मुझे ऐसा शब्द सुनाई पड़ा मानो वन्य हाथी गरज रहा हो। उस हाथी को मारने के लिये मैंने तीक्ष्ण शब्दभेदी बाण छोड़ दिया। बाण के लक्ष्य पर लगते ही किसी जल में गिरते हुए मनुष्य के मुख से ये शब्द निकले - 'आह, मैं मरा! मुझ निरपराध को किसने मारा? हे पिता! हे माता! अब मेरी मृत्यु के पश्चात् तुम लोगों की भी मृत्यु, जल के बिना प्यासे ही तड़प-तड़प कर, हो जायेगी। न जाने किस पापी ने बाण मार कर मेरी और मेरे माता-पिता की हत्या कर डाली।'

"इससे मुझे ज्ञात हुआ कि हाथी की गरज सुनना मेरा भ्रम था, वास्तव में वह शब्द जल में डूबते हुये घड़े का था।

"उन वचनों को सुन कर मेरे हाथ काँपने लगे और मेरे हाथों से धनुष भूमि पर गिर पड़ा। दौड़ता हुआ मैं वहाँ पर पहुँचा जहाँ पर वह मनुष्य था। मैंने देखा कि एक वनवासी युवक रक्तरंजित पड़ा है और पास ही एक औंधा घड़ा जल में पड़ा है। मुझे देखकर क्रुद्ध स्वर में वह बोला - 'राजन! मेरा क्या अपराध था जिसके लिये आपने मेरा वध करके मुझे दण्ड दिया है? क्या मेरा अपराध यही है कि मैं अपने प्यासे वृद्ध माता-पिता के लिये जल लेने आया था? यदि आपके हृदय में किंचित मात्र भी दया है तो मेरे प्यासे माता-पिता को जल पिला दो जो निकट ही मेरी प्रतीक्षा कर रहे हैं। किन्तु पहले इस बाण को मेरे कलेजे से निकालो जिसकी पीड़ा से मैं तड़प रहा हूँ। यद्यपि मैं वनवासी हूँ किन्तु फिर भी ब्राह्मण नहीं हूँ। मेरे पिता वैश्य और मेरी माता शूद्र है। इसलिये मेरी मृत्यु से तुम्हें ब्रह्महत्या का पाप नहीं लगेगा।'

"मेरे द्वारा उसके हृदय से बाण खींचते ही उसने प्राण त्याग दिये। अपने इस कृत्य से मेरा हृदय पश्चाताप से भर उठा। घड़े में जल भर कर मैं उसके माता पिता के पास पहुँचा। मैंने देखा, वे दोनों अत्यन्त दुर्बल और नेत्रहीन थे। उनकी दशा देख कर मेरा हृदय और भी विदीर्ण हो गया। मेरी आहट पाते ही वे बोले - 'बेटा श्रवण! इतनी देर कहाँ लगाई? पहले अपनी माता को पानी पिला दो क्योंकि वह प्यास से अत्यंत व्याकुल हो रही है।'

"श्रवण के पिता के वचनों को सुन कर मैंने डरते-डरते कहा - 'हे मुने! मैं अयोध्या का राजा दशरथ हूं। मैंने, अंधकार के कारण, हाथी के भ्रम में तुम्हारे निरपराध पुत्र की हत्या कर दी है। अज्ञानवश किये गये अपने इस अपराध से मैं अत्यंत व्यथित हूँ। आप मुझे दण्ड दीजिये।'

"पुत्र की मृत्यु का समाचार सुन कर दोनों विलाप करते हुये कहने लगे - 'मन तो करता है कि मैं अभी शाप देकर तुम्हें भस्म कर दूँ और तुम्हारे सिर के सात टुकड़े कर दूँ। किन्तु तुमने स्वयं आकर अपना अपराध स्वीकार किया है, अतः मैं ऐसा नहीं करूँगा। अब तुम हमें हमारे श्रवण के पास ले चलो।' श्रवण के पास पहुँचने पर वे उसके मृत शरीर को हाथ से टटोलते हुये हृदय-विदारक विलाप करने लगे। अपने पुत्र को उन्होंने जलांजलि दिया और उसके पश्चात् वे मुझसे बोले - 'हे राजन्! जिस प्रकार पुत्र वियोग में हमारी मृत्यु

हो रही है, उसी प्रकार तुम्हारी मृत्यु भी पुत्र वियोग में घोर कष्ट उठा कर होगी। शाप देने के पश्चात् उन्होंने अपने पुत्र की चिता बनाई और पुत्र के साथ वे दोनों स्वयं भी चिता में बैठ जल कर भस्म हो गये।'
"कौशल्ये! मेरे उस पाप कर्म का दण्ड आज मुझे प्राप्त हो रहा है।"

श्रवणकुमार की कथा - अयोध्याकाण्ड -

महाराज दशरथ ने कहा, "कौशल्ये! यह मेरे विवाह से पूर्व की घटना है। एक दिन सन्ध्या के समय अकस्मात मैं धनुष बाण ले रथ पर सवार हो शिकार के लिये निकल पड़ा। जब मैं सरयू के तट के साथ-साथ रथ में जा रहा था तो मुझे ऐसा शब्द सुनाई पड़ा मानो वन्य हाथी गरज रहा हो। उस हाथी को मारने के लिये मैंने तीक्ष्ण शब्दभेदी बाण छोड़ दिया। बाण के लक्ष्य पर लगते ही किसी जल में गिरते हुए मनुष्य के मुख से ये शब्द निकले - 'आह, मैं मरा! मुझ निरपराध को किसने मारा? हे पिता! हे माता! अब मेरी मृत्यु के पश्चात् तुम लोगों की भी मृत्यु, जल के बिना प्यासे ही तड़प-तड़प कर, हो जायेगी। न जाने किस पापी ने बाण मार कर मेरी और मेरे माता-पिता की हत्या कर डाली।'

"इससे मुझे ज्ञात हुआ कि हाथी की गरज सुनना मेरा भ्रम था, वास्तव में वह शब्द जल में डूबते हुये घड़े का था।"उन वचनों को सुन कर मेरे हाथ काँपने लगे और मेरे हाथों से धनुष भूमि पर गिर पड़ा। दौड़ता हुआ मैं वहाँ पर पहुँचा जहाँ पर वह मनुष्य था। मैंने देखा कि एक वनवासी युवक रक्तरंजित पड़ा है और पास ही एक औंधा घड़ा जल में पड़ा है। मुझे देखकर क्रुद्ध स्वर में वह बोला - 'राजन! मेरा क्या अपराध था जिसके लिये आपने मेरा वध करके मुझे दण्ड दिया है? क्या यही मेरा अपराध यही है कि मैं अपने प्यासे वृद्ध माता-पिता के लिये जल लेने आया था? यदि आपके हृदय में किंचित मात्र भी दया है तो मेरे प्यासे माता-पिता को जल पिला दो जो निकट ही मेरी प्रतीक्षा कर रहे हैं। किन्तु पहले इस बाण को मेरे कलेजे से निकालो जिसकी पीड़ा से मैं तड़प रहा हूँ। यद्यपि मैं वनवासी हूँ किन्तु फिर भी ब्राह्मण नहीं हूँ। मेरे पिता वैश्य और मेरी माता शूद्र है। इसलिये मेरी मृत्यु से तुम्हें ब्रह्महत्या का पाप नहीं लगेगा।'

"मेरे द्वारा उसके हृदय से बाण खींचते ही उसने प्राण त्याग दिये। अपने इस कृत्य से मेरा हृदय पश्चाताप से भर उठा। घड़े में जल भर कर मैं उसके माता पिता के पास पहुँचा। मैंने देखा, वे दोनों अत्यन्त दुर्बल और नेत्रहीन थे। उनकी दशा देख कर मेरा हृदय और भी विदीर्ण हो गया। मेरी आहट पाते ही वे बोले - 'बेटा श्रवण! इतनी देर कहाँ लगाई? पहले अपनी माता को पानी पिला दो क्योंकि वह प्यास से अत्यंत व्याकुल हो रही है।'

"श्रवण के पिता के वचनों को सुन कर मैंने डरते-डरते कहा - 'हे मुने! मैं अयोध्या का राजा दशरथ हूं। मैंने, अंधकार के कारण, हाथी के भ्रम में तुम्हारे निरपराध पुत्र की हत्या कर दी है। अज्ञानवश किये गये अपने इस अपराध से मैं अत्यंत व्यथित हूँ। आप मुझे दण्ड दीजिये।'

"पुत्र की मृत्यु का समाचार सुन कर दोनों विलाप करते हुये कहने लगे - 'मन तो करता है कि मैं अभी शाप देकर तुम्हें भस्म कर दूँ और तुम्हारे सिर के सात टुकड़े कर दूँ। किन्तु तुमने स्वयं आकर अपना अपराध स्वीकार किया है, अतः मैं ऐसा नहीं करूँगा। अब तुम हमें हमारे श्रवण के पास ले चलो।' श्रवण के पास पहुँचने पर वे उसके मृत शरीर को हाथ से टटोलते हुये हृदय-विदारक विलाप करने लगे। अपने पुत्र को उन्होंने जलांजलि दिया और उसके पश्चात् वे मुझसे बोले - 'हे राजन्! जिस प्रकार पुत्र वियोग में हमारी मृत्यु हो रही है, उसी प्रकार तुम्हारी मृत्यु भी पुत्र वियोग में घोर कष्ट उठा कर होगी। शाप देने के पश्चात् उन्होंने अपने पुत्र की चिता बनाई और पुत्र के साथ वे दोनों स्वयं भी चिता में बैठ जल कर भस्म हो गये।'

"यद्यपि मैं वनवासी हूँ किन्तु फिर भी ब्राह्मण नहीं हूँ। मेरे पिता वैश्य और मेरी माता शूद्र है !"

इसका मतलब यह है कि एक वैश्य ने एक क्षत्रीय को श्राप दिया, वह भी फलित हुआ! यह हुआ त्रेता युग मे ! शूद्र माता ! शूद्र माता वह भी तिर्थ यात्रा पर ! शूद्र तिर्थ कर सकते थे !
तब यह जाति भेद कब आया ? समाज इतना सँकूचित कब हुआ ! मेरा विश्वास पक्का होता जा रहा है कि प्राचिन भारत या सनातन धर्म मे छुआ छूत नही था, हाँ कुछ जाति जैसे चाँडाल समाज मे वर्जित जरूर थी !

वाल्मिकी थे निम्न जाति से थे, लेकिन ब्राम्हण(ऋषी) बन गये थे ! सम्मानित और पूजनिय बने ! वेदो का ज्ञान तो अवश्य होगा ही ! अर्थ यही कि ज्ञान अर्जन पर भी जाति की रोक टोक नही थी !
लेकिन यह बूराई सनातन धर्म मे कब और कैसे आयी ?

जहाँ तक मैं समझता हूँ कि प्राचीनकाल में भारतवर्ष में वर्णप्रथा ही थी और व्यक्ति के वर्ण का आधार व्यक्ति के कर्म हुआ करता था। वीरतापूर्वक लोगों की रक्षा करने वाले क्षत्रिय वर्ण में आते थे, ज्ञानी लोग ब्राह्मण वर्ग में और व्यापार करने वाले वैश्य वर्ण में आते थे। जिन लोगों में कुछ विशेष योग्यता नहीं रह पाती थी वे शूद्र वर्ण में आते थे। कर्म के अनुसार एक ही व्यक्ति का वर्ण भी बदल जाया करता था जैसे कि विश्वामित्र क्षत्रिय से ब्राह्मण हो गये क्योंकि पहले वे राजा बन कर क्षत्रिय कर्म किया करते थे किन्तु बाद में उन्होंने ज्ञानार्जन करके ज्ञान सिखाने का कर्म आरम्भ कर दिया। इसी प्रकार से राजा हरिश्चन्द्र क्षत्रिय थे किन्तु आपत्तिकाल में उन्होंने डोम का दास बनकर क्षत्रियवृति के स्थान पर चाण्डालवृति (शूद्रवृति) की थी।

कहानी राजा भरथरी कथा-

उज्जैन में भरथरी की गुफा स्थित है। इसके संबंध में यह माना जाता है कि यहां भरथरी ने तपस्या की थी। यह गुफा शहर से बाहर एक सुनसान इलाके में है। गुफा के पास ही शिप्रा नदी बह रही है। गुफा के अंदर जाने का रास्ता काफी छोटा है। जब हम इस गुफा के अंदर जाते हैं तो सांस लेने में भी कठिनाई महसूस होती है। गुफा की ऊंचाई भी काफी कम है, अत: अंदर जाते समय काफी सावधानी रखनी होती है। यहाँ पर

एक गुफा और है जो कि पहली गुफा से छोटी है। यह गोपीचन्द कि गुफा है जो कि भरथरी का भतीजा था। यहां प्रकाश भी काफी कम है, अंदर रोशनी के लिए बल्ब लगे हुए हैं। इसके बावजूद गुफा में अंधेरा दिखाई देता है। यदि किसी व्यक्ति को डर लगता है तो उसे गुफा के अंदर अकेले जाने में भी डर लगेगा। यहां की छत बड़े-बड़े पत्थरों के सहारे टिकी हुई है। गुफा के अंत में राजा भर्तृहरि की प्रतिमा है और उस प्रतिमा के पास ही एक और गुफा का रास्ता है। इस दूसरी गुफा के विषय में ऐसा माना जाता है कि यहां से चारों धामों का रास्ता है। गुफा में भर्तृहरि की प्रतिमा के सामने एक धुनी भी है, जिसकी राख हमेशा गर्म ही रहती है।

गौर से देखने पर आपको गुफा के अंत में एक गुप्त रास्ता दिखाई देगा जिसके बारे में कहा जाता है कि यहाँ से चारो धामों को रास्ता जाता है |

पत्नी के धोखे से आहत राजा भरथरी के साधू बनने कि कहानी :-

उज्जैन को उज्जयिनी के नाम से भी जाना जाता था। उज्जयिनी शहर के परम प्रतापी राजा हुए थे विक्रमादित्य। विक्रमादित्य के पिता महाराज गंधर्वसेन थे और उनकी दो पत्नियां थीं। एक पत्नी के पुत्र विक्रमादित्य और दूसरी पत्नी के पुत्र थे भर्तृहरि। गंधर्वसेन के बाद उज्जैन का राजपाठ भर्तृहरि को प्राप्त हुआ, क्योंकि भरथरी विक्रमादित्य से बड़े थे। राजा भर्तृहरि धर्म और नीतिशास्त्र के ज्ञाता थे। प्रचलित कथाओं के अनुसार भरथरी की दो पत्नियां थीं, लेकिन फिर भी उन्होंने तीसरा विवाह किया पिंगला से। पिंगला बहुत सुंदर थीं और इसी वजह से भरथरी तीसरी पत्नी पर अत्यधिक मोहित हो गए थे।

कथाओं के अनुसार भरथरी अपनी तीसरी पत्नी पिंगला पर काफी मोहित थे और वे उस पर अंधा विश्वास करते थे। राजा पत्नी मोह में अपने कर्तव्यों को भी भूल गए थे। उस समय उज्जैन में एक तपस्वी गुरु गोरखनाथ का आगमन हुआ। गोरखनाथ राजा के दरबार में पहुंचे। भरथरी ने गोरखनाथ का उचित आदर-सत्कार किया। इससे तपस्वी गुरु अति प्रसन्न हुए। प्रसन्न होकर गोरखनाथ ने राजा एक फल दिया और कहा कि यह खाने से वह सदैव जवान बने रहेंगे, कभी बुढ़ापा नहीं आएगा, सदैव सुंदरता बनी रहेगी।

यह चमत्कारी फल देकर गोरखनाथ वहां से चले गए। राजा ने फल लेकर सोचा कि उन्हें जवानी और सुंदरता की क्या आवश्यकता है। चूंकि राजा अपनी तीसरी पत्नी पर अत्यधिक मोहित थे, अत: उन्होंने सोचा कि यदि यह फल पिंगला खा लेगी तो वह सदैव सुंदर और जवान बनी रहेगी। यह सोचकर राजा ने पिंगला को वह फल दे दिया। रानी पिंगला भर्तृहरि पर नहीं बल्कि उसके राज्य के कोतवाल पर मोहित थी। यह बात राजा नहीं जानते थे। जब राजा ने वह चमत्कारी फल रानी को दिया तो रानी ने सोचा कि यह फल यदि कोतवाल खाएगा तो वह लंबे समय तक उसकी इच्छाओं की पूर्ति कर सकेगा। रानी ने यह सोचकर चमत्कारी फल कोतवाल को दे दिया । वह कोतवाल एक वैश्या से प्रेम करता था और उसने चमत्कारी फल उसे दे दिया। ताकि वैश्या सदैव जवान और सुंदर बनी रहे। वैश्या ने फल पाकर सोचा कि यदि वह जवान और सुंदर बनी रहेगी तो उसे यह गंदा काम हमेशा करना पड़ेगा। नर्क समान जीवन से मुक्ति नहीं मिलेगी। इस फल की सबसे ज्यादा जरूरत हमारे राजा को है। राजा हमेशा जवान रहेगा तो लंबे समय तक प्रजा को

सभी सुख-सुविधाएं देता रहेगा। यह सोचकर उसने चमत्कारी फल राजा को दे दिया। राजा वह फल देखकर हतप्रभ रह गए।

राजा ने वैश्या से पूछा कि यह फल उसे कहा से प्राप्त हुआ। वैश्या ने बताया कि यह फल उसे कोतवाल ने दिया है। भरथरी ने तुरंत कोतवाल को बुलवा लिया। सख्ती से पूछने पर कोतवाल ने बताया कि यह फल उसे रानी पिंगला ने दिया है। जब भरथरी को पूरी सच्चाई मालूम हुई तो वह समझ गया कि पिंगला उसे धोखा दे रही है। पत्नी के धोखे से भरथरी के मन में वैराग्य जाग गया और वे अपना संपूर्ण राज्य विक्रमादित्य को सौंपकर उज्जैन की एक गुफा में आ गए। इसी गुफा में भरथरी ने 12 वर्षों तक तपस्या की थी।

राजा भरथरी की कठोर तपस्या से देवराज इंद्र भयभीत हो गए। इंद्र ने सोचा की भरथरी वरदान पाकर स्वर्ग पर आक्रमण करेंगे। यह सोचकर इंद्र ने भरथरी पर एक विशाल पत्थर गिरा दिया। तपस्या में बैठे भरथरी ने उस पत्थर को एक हाथ से रोक लिया और तपस्या में बैठे रहे। इसी प्रकार कई वर्षों तक तपस्या करने से उस पत्थर पर भरथरी के पंजे का निशान बन गया। यह निशान आज भी भरथरी की गुफा में राजा की प्रतिमा के ऊपर वाले पत्थर पर दिखाई देता है। यह पंजे का निशान काफी बड़ा है, जिसे देखकर सहज ही अंदाजा लगाया जा सकता है कि राजा भरथरी की कद-काठी कितनी विशालकाय रही होगी।

भरथरी ने वैराग्य पर वैराग्य शतक की रचना की, जो कि काफी प्रसिद्ध है। इसके साथ ही भरथरी ने श्रृंगार शतक और नीति शतक की भी रचना की। यह तीनों ही शतक आज भी उपलब्ध हैं और पढ़ने योग्य है।

उज्जैन के राजा भरथरी के पास 365 पाकशास्त्री यानि रसोइए थे, जो राजा और उसके परिवार और अतिथियों के लिए भोजन बनाने के लिए। एक रसोइए को वर्ष में केवल एक ही बार भोजन बनाने का मोका मिलता था। लेकिन इस दौरान भरथरी जब गुरु गोरखनाथ जी के चरणों में चले गये तो भिक्षा मांगकर खाने लगे थे।

एक बार गुरु गोरखनाथजी ने अपने शिष्यों से कहा, 'देखो, राजा होकर भी इसने काम, क्रोध, लोभ तथा अहंकार को जीत लिया है और दृढ़निश्चयी है।' शिष्यों ने कहा, 'गुरुजी ! ये तो राजाधिराज हैं, इनके यहां 365 तो बावर्ची रहते थे। ऐसे भोग विलास के वातावरण में से आए हुए राजा और कैसे काम, क्रोध, लोभ रहित हो गए?' गुरु गोरखनाथ जी ने राजा भरथरी से कहा, 'भरथरी! जाओ, भंडारे के लिए जंगल से लकड़ियां ले आओ।' राजा भरथरी ंगे पैर गए, जंगल से लकड़ियां एकत्रित करके सिर पर बोझ उठाकर ला रहे थे। गोरखनाथ जी ने दूसरे शिष्यों से कहा, 'जाओ, उसको ऐसा धक्का मारो कि बोझ गिर जाए।' चेले गए और ऐसा धक्का मारा कि बोझ गिर गया और भरथरी गिर गए। भरथरी ने बोझ उठाया, लेकिन न चेहरे पर शिकन, न आंखों में आग के गोले, न होंठ फड़के। गुरु जी ने चेलों से क, 'देखा! भरथरी ने क्रोध को जीत लिया है।'

शिष्य बोले, 'गुरुजी ! अभी तो और भी परीक्षा लेनी चाहिए।' थोड़ा सा आगे जाते ही गुरुजी ने योगशक्ति से एक महल रच दिया। गोरखनाथ जी भरथरी ो महल दिखा रहे थे। युवतियां नाना प्रकार के व्यंजन आदि से सेवक उनका आदर सत्कार करने लगे। भरथरी युवतियों को देखकर कामी भी नहीं हुए और उनके नखरों पर क्रोधित भी नहीं हुए, चलते ही गए।

गोरखनाथजी ने शिष्यों को कहा, अब तो तुम लोगों को विश्वास हो ही गया है कि भरथरी ने काम, क्रोध, लोभ आदि को जीत लिया है। शिष्यों ने कहा, गुरुदेव एक परीक्षा और लीजिए। गोरखनाथजी ने कहा, अच्छा भरथरी हमारा शिष्य बनने के लिए परीक्षा से गुजरना पड़ता है। जाओ, तुमको एक महीना मरुभूमि में नंगे पैर पैदल यात्रा करनी होगी।' भरथरी अपने निर्दिष्ट मार्ग पर चल पड़े। पहाड़ी इलाका लांघते-लांघते राजस्थान की मरुभूमि में पहुंचे। धधकती बालू, कड़ाके की धूप मरुभूमि में पैर रखो तो बस जल जाए। एक दिन, दो दिन यात्रा करते-करते छः दिन बीत गए। सातवें दिन गुरु गोरखनाथजी अदृश्य शक्ति से अपने प्रिय चेलों को भी साथ लेकर वहां पहुंचे। गोरखनाथ जी बोले, 'देखो, यह भरथरी जा रहा है। मैं अभी योगबल से वृक्ष खड़ा कर देता हूं। वृक्ष की छाया में भी नहीं बैठेगा।' अचानक वृक्ष खड़ा कर दिया। चलते-चलते भरथरी का पैर वृक्ष की छाया पर आ गया तो ऐसे उछल पड़े, मानो अंगारों पर पैर पड़ गया हो।

'मरुभूमि में वृक्ष कैसे आ गया? छायावाले वृक्ष के नीचे पैर कैसे आ गया? गुरु जी की आज्ञा थी मरुभूमि में यात्रा करने की।' कूदकर दूर हट गए। गुरु जी प्रसन्न हो गए कि देखो! कैसे गुरु की आज्ञा मानता है। जिसने कभी पैर गलीचे से नीचे नहीं रखा, वह मरुभूमि में चलते-चलते पेड़ की छाया का स्पर्श होने से अंगारे जैसा एहसास करता है।' गोरखनाथ जी दिल में चेले की दृढ़ता पर बड़े खुश हुए, लेकिन और शिष्यों के मन में ईर्ष्या थी। शिष्य बोले, 'गुरुजी! यह तो ठीक है लेकिन अभी तो परीक्षा पूरी नहीं हुई।' गोरखनाथ जी (रूप बदल कर) भर्तृहरि से मिले और बोले, 'जरा छाया का उपयोग कर लो।' भरथरी बोले, 'नहीं, मेरे गुरुजी की आज्ञा है कि नंगे पैर मरुभूमि में चलूं।' गोरखनाथ जी ने सोचा, 'अच्छा! कितना चलते हो देखते हैं।' थोड़ा आगे गए तो गोरखनाथ जी ने योगबल से कांटे पैदा कर दिए। ऐसी कंटीली झाड़ी कि कंथा (फटे-पुराने कपड़ों को जोड़कर बनाया हुआ वस्त्र) फट गया। पैरों में शूल चुभने लगे, फिर भी भरथरी ने 'आह' तक नहीं की। भरथरी तो और अंतर्मुख हो गए, 'यह सब सपना है, गुरु जी ने जो आदेश दिया है, वही तपस्या है। यह भी गुरुजी की कृपा है'।

अंतिम परीक्षा के लिए गुरु गोरखनाथ जी ने अपने योगबल से प्रबल ताप पैदा किया। प्यास के मारे भरथरी के प्राण कंठ तक आ गये। तभी गोरखनाथ जी ने उनके अत्यन्त समीप एक हरा-भरा वृक्ष खड़ा कर दिया, जिसके नीचे पानी से भरी सुराही और सोने की प्याली रखी थी। एक बार तो भर्तृहरि ने उसकी ओर देखा पर तुरंत ख्याल आया कि कहीं गुरु आज्ञा भंग तो नहीं हो रही है। उनका इतना सोचना ही हुआ कि सामने से गोरखनाथ आते दिखाई दिए। भरथरी ने दंडवत प्रणाम किया। गुरुजी बोले, "शाबाश भरथरी, वर मांग लो। अष्टसिद्धि दे दूं, नवनिधि दे दूं। तुमने सुंदर-सुंदर व्यंजन ठुकरा दिए, युवतियां तुम्हारे चरण पखारने के लिए तैयार थीं, लेकिन तुम उनके चक्कर में नहीं आए। तुम्हें जो मांगना है, तो मांग लो। भर्तृहरि बोले, 'गुरुजी! बस आप प्रसन्न हैं, मुझे सब कुछ मिल गया। शिष्य के लिए गुरु की प्रसन्नता सब कुछ है। आप मुझसे संतुष्ट हुए, मेरे करोड़ों पुण्यकर्म और यज्ञ, तप सब सफल हो गए।' गोरखनाथ बोले, 'नहीं भरथरी! अनादर मत करो। तुम्हें कुछ-न-कुछ तो लेना ही पड़ेगा, कुछ-न-कुछ मांगना ही पड़ेगा।' इतने में रेती में एक चमचमाती हुई सूई दिखाई दी। उसे उठाकर भरथरी बोले, 'गुरुजी! कंठा फट गया है, सूई में यह धागा पिरो दीजिए ताकि मैं अपना कंठा सी लूं।'

गोरखनाथ जी और खुश हुए कि 'हद हो गई! कितना निरपेक्ष है, अष्टसिद्धि-नवनिधियां कुछ नहीं चाहिए। मैंने कहा कुछ मांगो, तो बोलता है कि सूई में जरा धागा डाल दो। गुरु का वचन रख लिया। कोई अपेक्षा नहीं? भर्तृहरि तुम धन्य हो गए! कहां उज्जयिनी का सम्राट नंगे पैर मरुभूमि में। एक महीना भी नहीं होने दिया, सात-आठ दिन में ही परीक्षा से उत्तीर्ण हो गए।'

मोरध्वज कथा-

राजा मोरध्वज की दानवीरता के किस्से बहुत हीं प्रचलित हो रही थी रजा के दरबार में आकर सबकी झोली भर जाती थी।उनके दानवीरता के प्रताप से इंद्र भगवान् का सिंघासन दोल गया। इंद्रा को उसकी बादशाहत खतरे में महसूस होने लगी।

इंद्र ने विष्णु के साथ मीलकर राजा की दानवीरता को नस्तनाबुत करने की योजना बनाई। अब विष्णु भगवान् शेर बन गए और इंद्र शेर के मालिक बनकर राजा मोरध्वज के दरबार में पहुच गए।

शेर वाला: महाराज मेरा शेर कई दिनों का भूखा है।

राजा: कहिये क्या खायेगा आप का शेर।

शेर वाला मतलब इंद्र : आप तो रजा है आपके लिए तो जिव की कोई कीमत नहीं किसी भी निरपराध जानवर को मारकर खिला देंगे।

राजा: अरे भाई इतना नाराज न हो अदि आपका शेर चाहे तो मई तैयार हूँ मुझे खाकर अपनी भूख मिटा ले

शेर वाला: आप तो राजा हैं।आप प्रजा की सम्पति है। मेरा शेर आपको खाकर पापी नहीं बनेगा।

राजा: तो आपही बता दो आपका शेर किसका मांस खायेगा और किस तरह खायेगा जिससे वो पाप का भागी नहीं बनेगा। मई वचन देता हूँ की आपके शेर की भूख मिटाऊंगा।

शेर वाला: ठीक है मेरा शेर आपके बच्चे यानि राजकुमार का मांस खाना पसंद करेगा। लेकिन उसके पहले आप और महारानी को मिलकर उस बच्चे को चीरकर शेर के आगे रखना होगा। अगले मेसेज में जारी..... शेर्वाले की शर्त सुनकर सरे राज्य में हडकंप मच गया रानी लेकिन पतिव्रता थी उन्होंने राजा का साथ देने का निश्चय किया। और राजा के राजधाराम को निभाने के लिए सहयोग देने की मुनादी करवा दी। पुत्र ने तो सहर्ष कह दिया की अगर मेरे प्राणों से भी पित्र वचन की लाज रह जाती है तो ये मेरा सौभाग्य होगा। मत पीता पुत्र तीनो राजी हुए। पुत्र को चीरने कइ लिए आरा मंगाया गया।

अब गीत को याद कीजिये भगवन को याद करके राजा रानी ने अपने ही पुत्र के सरपर आरा रख उसे चीरने लगे। पुत्र को चीरते हुए जब कमर तक आ गए तो आगे की चिराई के लिए रानी को झुकना पड़ा ये दृश्य देखकर व सुनकर सारे मानव तो क्या देव गण भी हिल गए उस माँ की कठोरता को देखकर।

बघेलखंड में बासदेवों के निवास स्थान-

बसदेवा गाथा परम्परा बघेलखंड के आलावा देश के अन्य राज्यों में भी पाए जाती है |जिसे बसदेवा ,बासुदेव या हरबोलों के नाम से भी जानते हैं विलुप्त प्रायः होती गाथा गायन परम्परा को हम ग्राम,प्रदेश ,राज्य ,देश ,माहादेश आदि के आधार पर उसके आस्तित्व को निम्नलिखित रूप से पहचान दे रहे हैं –

ग्राम जमुआर-

बसदेवा गाथा गायन के लिए सीधी ,बघेलखंड ही नहीं सम्पूर्ण मध्य प्रदेश में जाना जाने वाला यह ग्राम जिसे कला रूपों से सम्बन्ध रखने वाले तमाम लोग जानते होंगे |यह गाथा गायन परम्परा आज भी इस ग्राम में बड़ी सक्रिय रूप से प्रचलन में है | सीधी से ६० किलोमीटर की दूरी पर अमरपुर सिहावल रोड पर स्थित यह ग्राम करीब २००० की आबादी वाला है |यंहा बसदेवा जाति के अलावा कोल ,कमर ,जोगी ,चमार ,आदि जाति निवास करती हैं जिसमे से बसदेवा समुदाय की कुल जनसंख्या 85 है |इस समुदाय की जातिगत कला रूप के २ कलाकारों को छोड़ दे तो पूरे समुदाय से यह गायन परम्परा पूर्ण रूपेण खत्म हो चुकी है विलुप्ता की कगार पर यह गायन परम्परा आज भी इसी ग्राम के दो कलाकारों के नाम से पूरे राष्ट्रीय स्तर पर जानी जाती है |अनूप लाल बासदेव इस गाथा गायन परम्परा के लोक प्रसिद्द और राष्ट्रीय स्तर पर भी ख्यातिलब्ध कलाकर हैं |ऊबड़-खाबड़ भूमि पर बसे इस ग्राम की कुल आबादी कृषि से ही अपना जीवन यापन करती है और कोई दूसरा माध्यम नहीं है साधन नहीं है | बसदेवा जाति भी अब अपनी पारम्परिक कला रूप को छोड़ मेहनत मजदूरी कर अपना और अपने परिवार का भरण-पोषण कर रहे हैं |

ग्राम चकड़उर-

बघेलखंड में जमुआर के अलावा अन्य बसदेवा ग्राम भी हैं जंहा से बसदेवा जाति के लोग दूर-दराज के गाँवों व सीमावर्ती राज्यों में बसदेवा गाथा गायन के लोग भिच्छाटन के लिए जाते हैं |वैसे ये ग्राम लोक में जाने जाते हैं लेकिन मंचीय कार्यक्रम न हो पाने के कारण इनका राज्यीय स्तर पर कोई छवि नहीं बन पायी है |लेकिन इस ग्राम मे आज भी इस कलारूप के अच्छे जानकार व कलाकार निवासरत हैं जो अपनी परम्परा को ओढ़ते-बिछाते हैं |यह ग्राम सीधी से ५० किलोमीटर की दूरी पर सीधी खड्डी रोड पर बसा है जिसकी कुल मानक आबादी १७०० है और बसदेवा जाती समूह के लोग करीब 100 के आस-पास है |जिसमे से कुल २० लोग ही इस गायन परम्परा के संवाहक रूप में कार्य कर रहे हैं |भौगोलिक दृष्टी से यंहा की ज़्यादातर

ज़मीन पथरीली और ऊबड़-खाबड़ है जो की अच्छी उपज की नहीं है |इस क्षेत्र का प्रमुख व्यवसाय ,जीवन यापन का साधन कृषि कार्य ही है |

ग्राम बैकुंठपुर-

यह ग्राम रीवा सिरमौर रोड पर स्थित है |यह रीवा मुख्यालय से २५ किलोमीटर की दूरी पर समतल भूमि पर बसा हुआ है | इस गाँव की कुल अबादी १८०० की है | यंहा बसदेवा के आलावा बघेलो की बड़ी –बड़ी बस्तियां हैं | इस गाँव के बासदेव जाती के लोग भिच्छाटन के लिए आज भी दूर-दराज़ के गाँवों व सीमावर्ती राज्यों को जाते हैं और अपने परिवार का भरण-पोषण करते हैं |

ग्राम सीतापुर-

यह ग्राम सीधी से बहेराडाबर होते हुए मऊगंज रोड पर सीधी से करीब ७० किलोमीटर कि दूरी पर स्थित है | इस ग्राम की कुल मानक आबादी २३०० है जंहा बसदेवा के आलावा कोल,चमार,गोंड,बैगा,व अन्य आदिवासी जातिया जैसे पनिका भी निवास करती है |इस गाँव में बसदेवा जाति की कुल संख्या 120 एवं पारम्परिक कला रूप के प्रदर्शन करने वालो की संख्या २० है |

ग्राम दौलतनगर- इस ग्राम में बसदेवा गाने वालो की कुल संख्या ११है |

ग्राम पतुलखी-

ह जमुआर रोड पर ही स्थित ग्राम है यंहा बसदेवा तो हैं लेकिन गाथा गायन परम्परा को प्रस्तुत करने वाले कलाकार नहीं हैं |

ग्राम डिहुली-

इस ग्राम में बसदेवा गाथा गाने वालो की कुल संख्या ५ है जो की आबादी की ५ प्रतिशत है |

ग्राम भटहा-

सीधी से 30 किलोमीटर की दूरी पर सीधी रीवा रोड पर स्थित इस ग्राम की कुल मानक आबादी २४०० है एवं यंहा निवासरत बसदेवा जाति की कुल संख्या १२९ है जिसमे की बासदेव गाथा गायन परम्परा को प्रस्तुत करने वालो कलाकारों की कुल संख्या ११ है | यह ग्राम बसदेवा गाथा गायन परम्परा के लिए राज्यीय स्तर पर नहीं जाना जाता और न ही यंहा के कलाकारों को अब तक मंच प्रदान हुआ है |भटहा ग्राम में बसदेवा गाथा गायन को प्रस्तुत करने वाले बड़े ही बुजुर्ग कलाकार हैं जो की इसके इतिहास के सम्बन्ध में काफी कुछ जानते हैं जिनके कारण हमें नयी दृष्टी मिल सकी |और हम इस परम्परा के और लोगो को तलाशने में कामयाब रहे |चुरहट तहसील है इस लिए यह ग्राम शहर से जुड़ा होने के कारण त्वरित गति से अपनी सांस्कृतिक परम्परा और सामाजिक ढाँचे को खोता जा रहा है जो की इस परम्परा की देन रही है | अगामी कुछ ही सालो में यह कलारूप विलुप्त हो जाएगा |

बघेलखण्ड की गाथा गायन परंपराओ में प्रमुख गाथा परंपरा है बसदेवा गायन यह एक जाति विशेष "बसदेवा द्वारा गायी जाती है जो बघेलखण्ड के जमुआर, चुरहट (भटहा) बैकुण्ठपुर (रीवा) खडडी (नवानगर) पिपराही (सीतापुर) आदि जगहो पर निवासरत है | बसदेवा का सीधा अर्थ बासदेव से है | बासदेव कुए की जगत पर उगने वाले पीपल के वृक्ष को कहते है | बासदेव इसी पीपल के वृक्ष को अपना पूर्वज मानते है | बसदेवा एक दूसरा सम्बंध यदुवंशी राजा कष्ण के पिता से भी बताते हैं | इनकी उत्पत्ति के संबंध मे लोक मिथ्य है की ये चक्रवर्ती सम्राट राजा दशरथ के काल के हैं | श्रवण कुमार उन्ही दिनो अपने बूढ़े माँ बाप को तीर्थ यात्रा पर ले जा रहे थे | रात का वक्त हो चला था मॉ-बाप के कहने पर वो घनघोर जंगल मे ही विश्राम के लिए रूक जाते है | कुछ देर बाद वहा उन्हे एक बच्चे के रोने की आवाज सुनाई देती है | मॉ-बाप के कहने पर वो बच्चे की तरफ जाते है | वो देखते है कि पीपल के पेड़ के नीचे एक बालक पड़ा है और आस-पास कोई नही है | बच्चे को उठा कर कुछ देर तक आस-पास उसके मॉ-बाप को आवाज देते है जब कोई नही दिखाता तब वो उसे अपने साथ रख लेते है | उसे उन्होने बासदेव पीपल के पेड़ के नीचे से उठाया था इसलिए उसका नाम बासदेव रख दिया | धीरे-धीरे दिन बीतते गये एक दिन वो अयोध्या के वनो की तरफ जाते है और वही दशरथ के शब्दभेदी बाण द्वारा श्रवण कुमार की मत्यु हो जाती है और वह बालक अकेला हो जाता है | तब से वह छोटा बालक श्रवण कुमार की दारूण गाथा को गा-गाकर अपना भरण-पोषण करने लगा | कालांतर में इसी परंपरा में शामिल होने वाले व उस बासदेव के वंशज बसदेवा कहलाये एवं उनके द्वारा गायी जाने वाली गायन शैली को बसदेवा कहा जाने लगा |

बासदेव परम्परा की गायकी भारत के किसी अन्य राज्य में नहीं पाई जाती छत्तीसगढ़ सीमावर्ती राज्य को छोड़कर | बघेलखंड के बासदेव भिच्छाटन के लिए निकले और छत्तीसगढ़ राज्य के रायपुर ,बिलासपुर के कुछ गाँवों में निवास करने लगे |यंहा इनकी बड़ी आबादी है लेकिन आबादी का १० प्रतिशत ही आज अपनी कलारूप से जुड़ा हुआ है उसका गायन करता हैं |बाकी का समुदाय रोज़गार में लगा हुआ है | बघेलखंड में उपरोक्त ग्रामो में बासदेव जाति के लोग निवासरत हैं जिनके लोक कलारूप आज विलुप्तता की कगार पर हैं |

परम्परा पुरुषों का परिचय-

अनूप लाल बसदेवा –

बसदेवा गाथा गायन परम्परा के लोक प्रसिद्द कलाकार जो की अब रास्ट्रीय स्तर पर ख्याति प्राप्त कलाकार भी हैं |इन्होने बसदेवा गायन परम्परा के लिए अब तक कई रास्ट्रीय ,राज्यीय स्तर के आयोजनों में अपनी सराहनीय प्रस्तुतियां दी हैं और विलुप्त होती इस गायन शैली को पुनर्जीवन दिया है |अनूप लाल जी ने प्रस्तुतियों के आलावा ऐसे ग्रामो में निवास कर रहे बसदेवा जाति के कलाकार जो की अपनी परम्परा को पूर्णरूपेन भूल चुके थे उनमे पुनः एक नया जोश भर दिया है और वो अब प्रस्तुतियों के लिए व्यस्तम जीवन से समय निकाल अपनी परपरा के प्रति सजग हो गए हैं |अनूप लाल जी ने परम्परा से जुड़े ऊँ तमाम लोगो तक पहुचाया जिनसे की हमे बसदेवा जाति के तमाम निवास स्थानों का पत्ता चल सका |

मोतीलाल बसदेवा –

ये आज भी अपनी परम्परा को बनाये हैं जबकि उन्ही का मानना है की समाज बदल चूका है अब वो भिच्छाटन वाला समाज नहीं रहा जिससे की बसदेवा जाति का जीवन यापन होता था | लेकिन मोती लाल जी आज भी भिच्छाटन के माध्यम से ही अपनी जीविका चालाते हैं |

रामगोपाल बसदेवा –

ये अपनी परम्परा के अच्छे जानकार और गायक हैं | ये भी भिच्छाटन का कार्य करते हैं | ठंड के दिनों में ये भिच्छाटन करने के उद्देश्य से सीमावर्ती राज्य छत्तीसगढ़ तक चले जाते हैं | यह बडी बात है की इन लोगो ने अब घुमंतू और भिच्छाटन परम्परा को बचा कर रखा है |असंतोष है तो इस बात का कि अब वो लोग नहीं रहे ,वो समाज नहीं रहा ,जो हमारी गायन परम्परा को सुनता था सम्मान करता था |और शायद यह

असंतोष ठीक भी है समाज की बात ही छोडिये जो सरकार लोक कलारूपो को बचाने में करोणों रुपये खर्च कर रही है वो भी अभी तक सही मायने में इन तक पहुँच नहीं पायी |यदि पहुँची भी तो शायद शक्रिय तब होगी जब सब विलुप्त हो जाएगा | यह असंतोष आज इस समाज की परम्परा को इस छवि को धूमिल कर रहा है |

संतोष बसदेवा –

ये इस गायन परम्परा के नवोदित गायक कलाकार हैं |

गैबी प्रसाद बसदेवा –

ये अब वैसे भिच्छाटन का कार्य छोड़ चुके हैं या दूसरो शब्दों में कहें तो ये भूल चुके हैं की इनकी यह परम्परा रही है कभी लेकिन इन्हें अब भी सारी गाथा गायन कथाये अब भी कंठस्त है |

विवेक बसदेवा –ये भी इस गाथा गायन परम्परा के नवोदित कलाकार हैं |

लल्लू बसदेवा –

वैसे बसदेवा गाथा गायन परम्परा समुदाय ने आने वाली नयी पीढी को सिखाना ही बंद कर दिया , या कहे की नयी पढ़ी ने सीखना ही छोड़ दिया | लेकिन इन्होने आज भी उस परम्परा को बचाकर रखा | वो अपनी परम्परा से प्रेम करते हैं या बेरोजगारी की मजबूरी ने उनके बच्चो को भी भिच्छाटन पर मजबूर कर दिया है | कारण कोई भी हो लेकिन इनकी सहमती के कारण ही इनके बच्चे इस कलारूप को सीख सके हैं और इस परम्परा की गायकी करते हैं |

जीतेंद्र बसदेवा –

ये भी इस परम्परा के नवोदित कलाकार हैं और भिच्छाटन कर अपनी जीविका चलाते हैं |

यदि हम चयनित कलारूप बसदेवा गाथा गायन परम्परा की ज्ञान परिपाटी का आज के परिवेश से अंतर सम्बन्ध को देखते हैं तो सर्वप्रथम हम बसदेवा की जातीय सांस्कृतिक विविधताओं और मौखिक परम्परा में बह रहे उस ज्ञान का हर कलारूप के जाति विशेष के आधार पर बात करते हैं | बसदेवा जाति अपने जातिगत शैली गायकी में तमाम लोक नायको,पौराणिक नायको ,एतिहासिक नायको की कथा गायी जाती है |जिसमें छुपी ज्ञान और हुनर /कुशलता का वर्तमान में संचारित तत्वों के साथ अंतर सम्बन्ध को समझते हैं –

सरवन गाथा –

यह मूल रूप से श्रवण कुमार की कथा पर आधारित है कथा राम के सुमिरनी के साथ शुरू होती है और सर्वे भवन्तु सुखिनः के बोल के साथ खत्म होती है |सुमिरनी प्रकृति की होती है और अंततः प्रकृति की कुशलता का भाव समेटती कथा अनंत की और विलीन हो जाती है |कथा में श्रवण कुमार का माँ -बाप के प्रति अपार स्नेह ,उन्हें तीर्थ यात्रा के लिए कम्मर में लेकर निकलना ,श्रवण कुमार की असमय मृत्यु ,दसरथ का शापित होना ,राम का वनवास जाना ,और दशरथ की मृत्यु पर यह कथा विराम लेती है |यह कथा कहने को तो श्रवन कुमार की है लेकिन शाप और दसरथ ये दोनों प्रकृति के संतुलन को बनाये रखते हैं |इस कथा को गाने वाला आज भी सैकड़ो दर्शको को यह कथाः कह कर भावुक कर देता है पल भर के लिए ही वो मजबूर कर देता है अपने भूले बिसरे माँ -बाप के प्रति स्नेह आने को | यह हुनर ही है जो आज भी समाज में सहृदय संस्कृति को बचाए रख पा रहा है |

हरिश्चंद्र गाथा -

राजा हरिश्चन्द्र की कथा पर आधारित यह गाथा गायन समाज के बदलते स्वरूप पर खेद प्रकट तो करती है | लोकनायक हरिश्चन्द्र की कथा कौन नहीं जानता लेकिन उसका इस जाति के लिए वर्षो से क्या महत्व रहा है और इस जाति ने अपने ज्ञान से समाज को क्या दिया | कहते हैं की ये किसी के भी घर में भोर के वक्त प्रवेश कर जाते थे और कथा गाना शुरू कर देते थे | इनकी गायकी सुन लोग जागते थे और इन्हें भिच्छा दे विदा करते हैं |लेकिन कुछ वर्षो में समाज का रूप इतनी तेज़ी से बदला की बसदेवा डरने लगे की कोई कुछ बुरा भला न कह दे की भोर के वक्त क्यों जगा दिया या आज कल बढ़ती चोरी ने इस परम्परा को वही रोक दिया |ज्ञान तो समाज को नयी दिशा देता ही रहा हैं ,मौखिक रूप से ही इतिहास पुराण की प्रमुख घटनाओं के बारे में परिचित कराता ही रहा है इनके हुनर ने आज के संचारित तत्वों से जो अन्तर्सम्बन्ध बना रखा है –

"तीनउ परानी गएँ बेंचाय,तीनउ का काम दे बताय |
राजि पाठि सब गय हय सिराय जय गंगा |
राजा हरिश्चन्द्र महाराज ओनखे हाथे मा झाड़ू दिहिन |
पूरा काशी डारा बटोर जय गंगा ||"

मोरध्वज गाथा –

"मोरध्वज एक राजा रहे ,बड़ा दानिया राजा रहे |
दानी-दानी दुनिया कहय ,ओनखे बराबर नहीं आय दानी जय गंगे ||

तब बोलयं विष्णु भगवान ,सुनीला अर्जुन हमार बाति |
मोरध्वज एक राजा हमा ,चला परीक्षा लेई ओनखर जय गंगे ||
विष्णु भगवान साधू बनि जाय ,अर्जुन वीर शेर बनि जांय |
साधू, शेर दूनउ पहुंचे जांय मोरध्वज के द्वारे मा जय गंगे||
जय रघुनन्दन बोलय अधीर जय हो जय हो मोरध्वज |
तोरे दुआरे एक साधू आयें सिंह शेर द्वारे मा लेहे जय गंगा ||
पडी अनग राजा के कान सोने के गडुआ मा जल भरि लाउ |
साधू जी के चरण पखार जय गंगा ||
चरण धोय चरना मृत लेय गोड धोय राजा पी लेयं |
जनम - जनम के कटिगा पाप जय गंगा ||"

इस गायकी की ख़ास बात यह है की कथाये जो भी रहीं हो यह समुदाय समयानुसार कथाओं में निहित नैतिक तत्वों को बदलता रहा हैं | उपरोक्त कथा की पंक्तियां इसका उदाहरण रही है |

-: चयनित कलारूप बसदेवा वर्तमान में समुदाय विशेष के आयोजन के लिए तो मायने रखते ही हैं साथ ही अन्य समुदाय के लिए भी इनकी बड़ी उपयोगिता और उस समाज के प्रति सराहनीय कार्य रहा है | बसदेवा गाथा गायन बासदेव जाति का मुक्तिबोध है इस गाथा गायन का आयोजन इस समुदाय के समाजिक ,सांस्कृतिक विकास के दौड़ में एक अहम भूमिका निभाता हैं | भूमिका ऐसी की आर्थिक रूप से अभावग्रस्त सामाज को जीवटता प्रदान किये हुए है | इसे जीवटता ने इसी जीवन राग ने उन्हें नई दिशा की और सार्थक कर्मो के निमित्त अब तक जोड़े रखा है |बसदेवा कलारूप के समुदाय विशेष जब भी इसका आयोजन करते हैं तो उनमे भविष्य का दर्शन पल रहा होता है |इन आयोजनों ने आज ही नहीं वर्षो पहले से इनके जीवन में संतुलन बनाए रखा है |यही संतुलन उनकी जीवन पद्धति को नए–नए रूपों में अवतरित करती रही है | कुछ लोग तो ये कहते हैं की यह सस्कृति में संक्रमण का दौर है |सच है लेकिन संक्रमण होने के लिए तो कुछ बचा है न | मूल से जुड़े हैं ,अपनी परम्परागत कलारूप को किसी भी हालत में लेकर यंहा पहुंचे तो आज केवल वही समुदाय ही नहीं वरन अन्य समुदाय भी उस आईने में खुद को पहचान पा रहे हैं |

१.अतिथि देवो भव की परम्परा आज हमारे देश से भी जाती रही | इसके क्या परिणाम सामने आये हैं ये हम सब देख ही रहे हैं और आगामी परिणामो के बारे में सोचकर पूरा देश परेशान है | लेकिन बसदेवा गायन परम्परा ने गायन करने वाले समुदाय में इस परम्परा की जड़ को गहरे जमा रखा है |
२.इस नृत्य के आयोजन से एक बड़ी बात यह सामने आ रही है की नई पीढी भी सीख रही है और नये दल भी बन रहे हैं |

३.बसदेवा गाथा गायन का आयोजन उस समुदाय के तमाम संस्कार रूपों को सुचारू रख

पाने का माध्यम है | यदि इस तरह का आयोजन होता रहा तो जाति विशेष की सांस्कृतिक चेतना जीवित रहेगी जो समाज देश को नई दिशा प्रदान करेगी|

४. बसदेवा गाथा गायन सामाजिक ,सांस्कृतिक रूप से तो मायने रखता ही है यह गायकी इस जाति के लिए वंही इस जाति का यह महत्वपूर्ण व्यवसाय भी बना हुआ है | भागम-भाग और बेरोजगारी की दुनिया में इस नृत्य परम्परा ने इन्हें थोड़ी राहत प्रदान की है |

अब तक इन कलारूपो के संरक्षण के लिए कोई उपाय नहीं किया गया | इन्द्रवती नाट्य समिति सीधी द्वारा अब तक इन ग्रामो को चिन्हित कर लोककला ग्राम बनाये गए हैं व स्थानीय स्तर पर इनका मंचीय प्रदर्शन कार्यक्रम करवाया जाता है | साथ ही बसदेवा लोककला रूप को सरकारी स्तर के राष्ट्रीय कार्यक्रमों में प्रस्तुतियां हो चुकी हैं |

योजना के प्रस्तावित कलारूप बसदेवा गायन शैली को बचाने के उद्देश्य से यदि अति शीघ्रकोई कदम नहीं उठाया गया तो यह कहना गलत नहीं होगा को आने वाले तीन चार सालो में यह कलारूप पूर्णरूपेण विलुप्त हो जाएगा |जीवन्तता किसी भी कलारूप की हो वो सिर्फ उसके प्रयोग में आने उसके होते रहने से है जब उस कलारूप का आयोजन ही नहीं होगा तो वो कितने दिनों तक चलेगा |खासकर बसदेवा गायन जो की मौखिक परम्परा और भिच्छाटन गायन की शैली है |अब समय के चलते इस गाथा गायन की भिच्छाटन शैली तो जाती रही ,इसका भविष्य तो मात्र इस कलारूप के कलाकारों को भारत सरकार के स्तर पर ही अगली पीढी में इसके रूप को बने रहने के लिए कार्य करना कारगर होगा |क्यों की व्यवसाय था यह कलारूप अब जब व्यवसायायी करण के इस युग में इस व्यस्याय का कोई महत्व नहीं रहा तो निश्चित तौर पर यह जाति ,समुदाय जीवन यापन के लिए नए व्यवसाय की तलाश करेगा | और यदि यह समाज नए व्यवसाय की तलाश करेगा तो निश्चित तौर पर परम्परा बदलेगी और इतनी तेज़ी से बदलेगी की इन्हें अपने कलारूप को छोड़ने में कोई मोह नहीं होगा | जंहा लागाव,आस्था,मोह नहीं वह परम्परा ज्यादा दिनों तक जीवित नहीं रह सकी हैं सैकड़ो उदाहरण हमारे सामने रहे हैं जिन्हें हम देखते रहे और वो अचानक कंही खो गयी | पूछने जाएँ तो यही ज़वाब मिलता है की वर्षो पहले होती थीं अब नहीं होती | बाबा लोग करते थे क्यों की वो अपने बच्चो के भविष्य के बारे में नहीं सोचते थे | हमको सोचना पडेगा हमे अपने बच्चो को भूका नहीं मारना |

-:चयनित लोक कलारूपो के संरक्षण के निम्न लिखित उपाय –

१.सर्वप्रथम यंहा जाति विशेष की चयन कार्यशाला लगाई जाय ताकि पता चल सके की कलारूप कलारूप कंहा -कंहा हैं |

२. गाँव चिन्हित कर कलारूपो के स्थानीय स्तर पर प्रदर्शन हेतु मंच निर्माण कराया जाए ताकि प्रस्तुतियों के लिए उचित जगह रहे |

३.कलारू का दस्तावेजीकरण किया जाय |

४.सरकारी कार्यक्रमों में बसदेवा गाथा गायन के कलाकारों को आमंत्रित किया जाय |

५. बसदेवा जाति जो कलारूप व्यवसायिक हैं उन्हें व्यवसायिक रखे जाने का कार्य किया जाय एवं जो हैं उ न्हें सरकारी स्तर पर कार्यक्रम दिलाएं जायं |

५.छात्रवृति इन्ही कलारूप के करने वालो की नयी पीढी को प्रदान की जाय ताकि ये अपनी परम्परा को सीख सके |

६. बघेलखंड में बसदेवा कला रूप के प्रशिक्षण हेतु प्रशिक्षण केंद्र खोला जायं |

७.सरकारी स्तर पर समय-समय पर बसदेवा लोक कला रूप की प्रतिस्पर्धाए कराई जाए |

८. सबसे महत्वपूर्ण यह है कि त्वरित रूप से गाथा गायन महोत्सव का आयोजन किया जाय इस क्षेत्र में ताकि कला रूपों का संगम हो सके एक –दुसरे की कला को देख सके समझ सके और जीवित रहने के उद्देश्य से प्रयोग कर सकें |

९. अब तक कार्य कर रही समियियो ,संस्थानों या व्यक्तिगत स्तर पर उन्हें प्रोत्साहन दिया जाय |

१०.कला रूप को व्यवसायिक बनाने के साथ-साथ उस समुदाय विशेष को भी स्थानीय व्यवसाय के नये रास्ते खोले जांय ,उपाय सोचे जांय |

११. शिल्पकारिता करने वाली जातियों के शिल्प कला को व्यवसायिक कर उनके लोक कलारूप को बचा पाने में नेक कदम हो सकता है |

१२.चयनित कलारूप की ज्ञान परिपाटी और लोक ज्ञान परम्परा को अनिवार्य शिक्षा के रूप में स्कूल ,कालेज स्तर पर लागू किया जाय |

१३.विचार गोष्ठियों का आयोजन किया जाय एवं सांस्कृतिक चेतना के उद्देश्य से इसे पत्रकारिता से जोड़ा जाय

१४.प्रत्येक विश्विद्यालय ,महाविद्यालय स्तर पर कलारूपो के प्रशिक्षण हेतु डिप्लोमा एवं सर्टीफिकेट कोर्स चालाये जाय इस स्थिति में दो काम एक साथ हो सकते हैं की कला से संबंधित लोक कलाकारों को वंहा प्रशिक्षक के रूप में रखा जायेगा और नये प्रशिक्षार्थी कलारूपो को सीख कर इस कलारूप के समर्थक और जानकार बनेगें |

सहभागी समुदाय –

१.घसिया समुदाय –इस समुदाय ने अपने जातीय कला रूप को तो संरक्षित किया ही है साथ ही साथ अन्य जाति जैसे गोंड और अहीरों के जातीय नृत्यों गीतों के बढावा ,संवर्धन में इनका महत्वपूर्ण योगदान है | घसिया समुदाय के बहुत से कलाकार अन्य जातियों के उत्सव में शामिल होते हैं और उस परम्परा गत कलारूप में सहायक बनते हैं |और साथ ही बस्दफेवा गाथा गायन परम्परा के लोगो का सम्मान और नियमित श्रोता हैं |

२.बैगा समुदाय –बैगा समुदाय अपने शैला ,करमा कला की प्रस्तुती के साथ –साथ बसदेवा गाथा गायन व अन्य गाथा गायन परम्परा के सहायक हैं |

३.गोंड समुदाय – शैला करने के लिए प्रसिद्ध यह जाति बसदेवा समाज में होने वाली परम्परागत कला रूपों की अच्छी दर्शक और सहायक है |

४.पनिका समुदाय – यह शिल्पकारिता के लिए जानी जाती है यह सभी कलाकार समूहों के वस्त्र निर्माण का कार्य करती है |बसदेवा जाति समुदाय कलाकारों के लिए भी यह जाति वस्त्र निर्माण का कार्य करती है |

५. कोल समुदाय –यह जाति अपनी जातीय परम्परा की संवाहक तो है ही साथ में बासदेव,यादव, कोंहार ,आदि जातियों के कलारूपो की भी सहहायक जाति समुदाय के रूप में कार्य करती है |

६.यादव समुदाय – यह समुदाय बसदेवा,कोल और चामार जाति की दादर परम्परा की अच्छी दर्शक और सहायक है |

७.अघरिया समुदाय – यह सभी आदिवासी जातियों व समाज के हर वर्ग के लिए लोहे का काम करती रही है और करमा नृत्य भी

८.बादी समुदाय – यह गोंड की उपजाति है जो की गोदना गोदने की परम्परा के साथ –साथ शैला ,करम नृत्य भी करती है |बसदेवा जाति भी गोदना गोदाने के लिए जानी जाती है जो बादी समाज की महिलाओं का सहारा लेती है |

९.भूमिया समुदाय – यह भूमिहार जाति से सम्बंधित जाति है यह इन तमाम आदिवासी जातियों के देवताओं की उपासक के रूप में जानी जाती है |

१०.जोगी समुदाय – यह जाति समूह भी बसदेवा , बादी आदि की परम्परा का परिचय देते हैं उनके इतिहास की जानकारी रखते है |और बसदेवा की तरह ही वस्त्र पहनकर गाथाये और निर्गुण भजन का गायन करते हैं |

सहभागी व्यक्ति-

१.शिव शंकर मिश्र 'सरस'
२.भागवत प्रसाद पाठक
३.नीरज कुंदेर
४.रोशनी प्रसाद मिश्र
५.नरेन्द्र बहादुर सिंह
६.पुष्पेन्द्र कुमार वर्मा
७.रजनीश जायसवाल
८.करुणा सिंह चौहान
९.प्रजीत साकेत
१०.आरती यादव
११.श्री निवास शुक्ल
१२.आर .डी.सिंह
१३.आशीष सिंह 'दीनू'
१४.बाबू लाल दाहिया

बसदेवा गाथा गायन परम्परा देश की तमाम गाथा गायन शैलियों में अपना विशेष महत्व रखती है ये बात और है की इसके संरक्षण,सवर्धन के लिए कोई कार्य नही किया गया |मध्यप्रदेश राज्य में आदिवासी लोक कला परिषद है उनको तो शायद कुछ वर्ष पहले ये भी पता नहीं था की ऐसी भी कोई कला विधा है | सीधी के कुछ नाट्य और लोक कलारूपो के संरक्षण के लिए सराहनीय कार्य कर रही समितियों ने इस कला रूप के जीवंत होने का ढोल पीटा और यह बात उनके कानो तक भी पहुची | अब वो जानते हैं इस कालरूप की अंतिम साँसे चल रही हैं फिर भी अब तक इसे बचाने के उद्देश्य से कोई ठोस कदम नहीं उठाया गया | बसदेवा गाथा गायन परम्परा के आज भी सैकड़ो कलाकार हैं जो कुछ ही सालो में अपनी इस परम्परा को छोड़ देंगे और कुछ छोड़ भी चुके हैं ऐसा शोध के दौरान देखने को मिला | बसदेवा समुदाय को मंच दिलाने के लिए जो प्रयास यंहा के स्थानीय लोक कला प्रेमियों और संरक्षकों ने किया है वह सरकारी संगठन ने नहीं किया या यूँ कहे की कभी किया नही |इस समुदाय विशेष के लिए कुछ सम्बंधित व्यक्तियों, स्थानीय संस्थानों ने जो कार्य किया मै उनका नाम दे रहा हूँ-

कुछ प्रमुख बसदेवा गाथा गायकों के साक्षात्कार –

शोध कार्य के दौरान बघेलखंड क्षेत्र के विभिन्न ग्रामो में निवासरत बसदेवा समुदाय के प्रतिनिधि कलाकारों से इस गाथा गायन परम्परा के सम्बन्ध में जो चर्चाएं हुई ,जो नए तथ्य सामने आये मैं उसे मैं निम्नवत प्रस्तुत कर रहा हूँ –

अनूप लाल बसदेवा –

अनूप लाल जी सीधी जिले के जमुआर ग्राम के निवासी हैं | ये बसदेवा गायन के प्रतिष्ठित और लोकमान्य कलाकार हैं | शोध कार्य के दौरान नीरज कुंदेर की जो इनसे बातचीत हुई उस चर्चा का अंश निम्नवत है-

सवाल-आप का नाम बताएं ? आप किस ग्राम के निवासी हैं ?

ज़वाब-मेरा नाम अनूप लाल बासदेव है |और मैं बसदेवा ग्राम का निवासी हूँ |

सवाल-आप की यह गायन परम्परा कब से है ? और इस गायन परम्परा का गायन आप कब से कर रहे हैं ?

ज़वाब-यह गायन परम्परा मेरे ज्ञान में मेरे दादा पुरखो से यानी करीब 200 वर्षो से चली आ रही है |और मैं इस गायन परम्परा को पिछले ४० वर्षो से कर रहा हूँ |

सवाल-जिस गायन परम्परा के आप संवाहक है उसे बसदेवा क्यों कहते हैं ? क्या आप का नाम आप की गायन परम्परा के नाम पर है या आप के जातीय नाम पर आप की गायन परम्परा ?

ज़वाब-हम कृष्ण बासदेव महाराज के वंशज हैं इसलिए हमे बासदेव हैं | जातीय नाम पर हमारी कला का नाम बसदेवा पडा है | हम बसदेवा शैली में बहुत सारी लोक कथाओं का गायन करते हैं,और सारी गाथाये बसदेवा गाथा के नाम से ही जानी जाती है |

सवाल-कपड़ा कैसा पहनते हैं और क्यों?

ज़वाब-हम लोग गेरुआ कपड़ा पहनते हैं क्योकि हमारे बासदेव महाराज ऐसा ही कपड़ा पहनते थे | और हम तो जोगी है इसलिए हमारा कपड़ा ऐसा ही रहता है |

सवाल-श्रवण गाथा को आप लोग अपनी पहली गाथा मानते हैं ? आप की गायन परम्परा में श्रवण कुमार की कथा ही पहले क्यों शुरू की गयी ?

जावाब- हां श्रवण गाथा हमारी पहली गाथा गायन परम्परा है |श्रवण कुमार ने ही बासदेव को पीपल के वृक्ष के नीचे से उठाकर पाला और अपने पास रखा इसलिए हमारे पुरखे लोग उनकी कथा कहते हैं |

सवाल-आप की सुमिरनी में राम नाम ही क्यों कहते हैं ?

ज़वाब- राम हमारे भगवान हैं और हम हिन्दू धर्म के हैं ,हिन्दू धर्म के सबसे बड़े देवता राम हैं | उन्हें सब जानते है | (दूसरे शब्दों में उनके ज़वाब को समझे तो राम लोक नायक हैं इस कारण वो आनायास ही कथा के सुमिरनी में आये और परम्परागत हो गए |)

सवाल- आपको कभी ऐसा कुछ लगा की आप की गाथा से समाज को क्या मिलता होगा ? क्यों कि आप जो श्रवण गाथा सुनाते हैं वह बड़ा मार्मिक है |

ज़वाब- हमारी गाथा गायन से समाज को असर होता था तभी तो घर का बँटवारा नहीं होता था | माँ-बाप को बच्चे सम्मान देते थे | आज कल का ज़माना तो देख ही रहे है की मेहरी आते ही माँ बाप को आश्रम (वृद्धाश्रम) भेज देते है |

सवाल-पहले आप की जाति घर चलाने के लिए क्या रोज़गार करती थी ?

ज़वाब-बसदेवा गायन हमारा हमेशा से रोज़गार रहा है लेकिन अब ज़माना बदल गया है इस कारण काम **नहीं चलता** |

सवाल-अब आप लोग पहले की तरह भोर में क्यों नहीं गाते ?

ज़वाब-अब लोगो का हम पर भरोषा नहीं रहा | गाँव शहर में चोरियां होने लगी तो लोग ये भी कह देते हैं की बसदेवा मागने आये थे उंही ने चुराया होगा | देखिये सम्मान सबको प्यारा है चाहे वह गरीब हो या अमीर तो हम क्यों अपना सम्मान गँवाए | दूसरा काम कर लेंगे एसा हमारे बच्चे सोचते हैं इस कारण अब वो लोग इस गायन को गाते ही नहीं और हम लोग जो गाते हैं तो दिन में |

रामगोपाल बसदेवा –

राम गोपाल बासदेव से नीरज कुंदेर की जो बसदेवा गाथा गायन शैली ,परम्परा ,सांस्कृतिक चेतना को लेकर जो बाते हुई वो जस की तस प्रस्तुत है | सर्वप्रथम साक्षात्कार से पहले रामगोपाल बासदेव जी ने कबीर के निर्गुण भजन का बासदेव शैली में गायन किया –

"जनम –जनम तक माया हो रोबय चार महीना बहिनिया हो |

अउ तीन दिना तक तिरिया हो रोबय फेर करय घर बासा हो प्राणी ||

गोडबा पकड़ मोरि माया रोमय बंहिया पकड़ी मोर बहिनी हो |

छतिया मा मूड़ धय तिरिया हो रोबय फेर करय घर बासा हो रानी ||

ता सुमिरन राम नाम का कइला दुई दिन के जिंदगानी हो |

ई देंहिया मा काग विलोली काहे केर मोहिया हो |

ई देंहिया हय रैन बसेरा प्राणी छोड़ पिंजर उड़ जानना रे ||"

सवाल- जय राम जी कक्का,आपका नाम और आप कंहा से हैं आपके गाँव का नाम बताइये ?

ज़वाब- मेरा नाम रामगोपाल है और मैं चकडउर का हूँ |

सवाल- आप जो गाते हैं उसे क्या कहते हैं ,और क्या-क्या कथा सुनाते हैं इसमें आप |

ज़वाब-हम जो गाते हैं उसे बसदेवा कहते हैं और हम इस गाथा गायन में सरवन गाथा ,हरिश्चंद्र गाथा ,मोरध्वज गाथा ,भर्तिहरी गाथा गाते हैं |

सवाल- आप की गायन शैली को क्या आपके बच्चे लोग सीख रहे हैं ?

ज़वाब- नही अब इस गायन परम्परा को सीखने के लिए नये लोगो में उत्साह नही है | पहले हम लोग इसे गाकर ही अपना भरण-पोषण करते रहे हैं लेकिन अब न तो कोई सुनता है और न ही उतना सम्मान देते हैं तो यही कारण कोई सीख भी नही रहा | किसलिए सीखेंगे इसे सीख कर क्या करेंगे ऐसा हमारे बच्चे लोग पूंछते हैं |

सवाल- यदि सरकार इस परम्परा को बचाने के लिए कोई उपाय करे तो क्या आप लोग नई पीढी को सिखायेंगे |

ज़वाब- सरकार अगर मुफ्त मे करायेगी तो करके क्या करेंगे जब पेट चले तो सीखेंगे और सिखायेंगे भी |

सवाल-बसदेवा गाथा जो आप लोग गाते हैं क्या उससे आप लोगो का कुछ आर्थिक सहयोग होता है?

ज़वाब- होता था जब तब हम लोग गाँव-गाँव जाकर किया करते थे और अब नहीं होता इसी कारण बसदेवा गायक कम हो रहे हैं |

सवाल-सारंगी वादन क्या बसदेवा गायन शैली की परम्परा है ?

ज़वाब- नही , यह बसदेवो की परम्परा नहीं है | यह भरथरी गायकों की परम्परा है | बसदेवा तो खुटखुटी और पैंजना बजाकर गाते थे |

सवाल- तो फिर आप लोग क्यों गाते हैं ?

ज़वाब- खुटखुटी बजाने वालो की इज्जत कम होती है इसलिए हम लोग सारंगी बजाकर गाने लगे | इसको लोग सुनते हैं और दान भी देते हैं |

सवाल- यदि सरकार ने कुछ नहीं किया तो क्या आप लोग अपनी परम्परा के लिए कुछ काम नहीं करेंगे? उसे नहीं सुनायेंगे लोगो को यही परम्परा तो आपका आस्तित्व है ?

ज़वाब-हम करेंगे लेकिन हमारे बच्चे नही कर पायेंगे | हमारा तो किसी तरह बीत गया लेकिन उनका नहीं बीतेगा हम लोग मरेंगे तो यह परम्परा भी मर जायेगी |

रामकृपाल बासदेव -

बसदेवा गायन शैली में तमाम लोक नायको की कथा को गाकर सुनाने की परम्परा रही है इसी तारतम्य में नीरज कुंदेर और रामकृपाल बासदेव की जो परिचर्चा हुई वो निम्नवत है-

सवाल- आप का नाम ?

ज़वाब- रामकृपाल

सवाल- आप के गाँव का क्या नाम है ?

ज़वाब-चकडउर

सवाल-आप यह गाथा गायन कब से कर रहे हैं ?

ज़वाब-मुझे यह गाथा गाते हुए लगभग ४० साल हो गये |

सवाल-इस गाथा गायन के लोग क्या -क्या कथा सुनाते हैं ?

ज़वाब- श्रवण कुमार, हरिश्चन्द्र, मोरध्वज,कृष्ण,भरथरी और कबीर के भजन |

सवाल-क्या अब आप के बच्चे इस गाथा गायन को गाते हैं ?

ज़वाब-नही,वो अब नहीं करते उन्हें भीख मांगने में शर्म आती है | मांगने से सम्मान कम होता है उनके संजोडी उनकी हंसी उड़ाते हैं की अब तुम भी भीख मांगोगे |

सवाल-मैंने सुना हैं की आप लोग रात को गाते थे क्या ये सही है और सही है तो क्यों गाते हैं ?

ज़वाब-हां ये बात सही है की हमारे पूर्वज लोग रात में मांगते थे | क्यों की उन्हें श्राप था की वो सूर्य उगने के बाद किसी को अपना चेहरा नहीं दिखाएँगे | लेकिन अब नहीं गाते क्यों की अब समाज बदल गया है गाँव-गाँव में चोरियां होने लगी हैं तो लोग यही सोचते हैं की बसदेवा ने की होगी | हमारा सम्मान कम होता है इसलिए अब हम रात में नहीं गाते |

सवाल-यदि इस कला से आप लोगो को रोज़गार मिला तो क्या आप लोग इस परम्परा के लिए गायन करते रहेंगे?

ज़वाब-जी बिलकुल करेंगे ,क्यों की हमे जीवन यापन ही तो करना है | और आदमी जीता किसके लिए है ? एक तो धन दूसरा सम्मान | दोनों मिलेगा तो हम क्यों नहीं करेंगे

सवाल- बसदेवा यानी आप भी जब बघेलखंड से कंही और जाते हैं भिच्छाटन के लिए तो आप का क्या अनुभव रहा ?

ज़वाब-बघेलखंड से बाहर हम लोग जाते हैं तो बड़ा सम्मान करते हैं ,और हमारा गीत सुनने को भीड़ लगती है | घर-घर से लोग इकट्ठा होते है और हमारा स्वागत करते हैं और कहते हैं की बासदेव महाराज आप ठीक आ गए हमें आशीर्वाद दे |

उपसंहार-

आमूर्त सांस्कृतिक विरासत **बसदेवा गाथा गायन** परम्परा बघेलखंड की प्रतिनिधि गाथा गायन परम्पराओं में से एक है | बघेलखंड के साथ-साथ इस कलारूप का प्रदर्शन करने वाले कलाकार मध्यप्रदेश के सागर जिले, बैतूल, छत्तीसगढ़ के कवर्धा, दुर्ग, रायपुर (विजय चौक अमापरा) महाराष्ट्र के वर्धा जिले में भी बहुतायत संख्या में निवासरत हैं |

वर्तमान में कुछ ही लोग पारम्परिक रूप से गाथा गायन व भिच्छाटन करते हुए परम्परा को निभा रहे हैं | बाकी अपने नए रोज़गार में लग चुके हैं | बसदेवा अब खंजनी, पैंजना लेकर हर गंगे या जय गंगान का गान नहीं करते बल्कि सारंगी लेकर वो भरथरी गीत का गायन करने लगे हैं | छत्तीसगढ़ व मध्यप्रदेश में जितने भी बसदेवा, करीब 500 की संख्या में मुझे मिले उसमे से एक भी व्यक्ति आज तक मुझे भिच्छाटन के

दौरान अपने जातीय व पारम्परिक वाद्य यंत्रो के साथ श्रवण कुमार या अन्य लोक नायको की गाथा गाते हुए नहीं मिला | ये बात और है कि- बसदेवा सुनाओ कहने के बाद वो बासदेव शैली में गा दें | उनका कहना है कि बसदेवा गायकी अब कोई सुनता नहीं, पसंद नहीं करता जबकि हम भरथरी की कथा को सारंगी के साथ गाते हैं तो लोग प्रेम से सुनते हैं और हमें भिच्छा भी मिल जाती है | इसी कारण हमें अपना रूप बदलना पड़ा | जैसा देश वैसा भेष यह कहावत बिलकुल इस परम्परा और गायकी पर चरितार्थ होती है | बसदेवा की पारम्परिक गायकी बदल रही है और भरथरी गायकी का रूप ले रही है | यह परिवर्तन मेरे देखते-देखते ही करीब 10 साल के अन्दर हुआ है |

बघेलखंड के एक-एक बसदेवा को मैं जानता हूँ, यंहा तक कि सब के नाम और उनके गाँव भी | बघेलखंड के वो लोग जो कभी बासदेवों से श्रवण कुमार या अन्य लोकसिद्ध नायको की कथा सुना करते थे, उनकी नजर में यह जाति अब विलुप्त हो चुकी है या इन्होने भिच्छाटन का काम छोड़ दिया है | पर यंहा सच कुछ और ही है, यह बेहतर परिवर्तन हो सकता है और नहीं भी | श्रोताओं के लिए बासदेवों ने अपने आप को बदल दिया पहनावा बदला, वाद्य यंत्र बदला, कथावस्तु बदली तो गायन शैली अपने आप बदल गयी और अत्याधुनिक सामाज, भागम-भाग जीवन में खुद को बचाए रखने, जीवन चलता रहे इसलिए उन्होंने अपने पारम्परिक जातीय रूप को खत्म कर दिया और बन गए भरथरी | जो भी बासदेव भरथरी बने हैं तो उसे व्यवसाय मानकर | ऐसा नहीं है की पहले कोई स्वेच्छा रही होगी यह तब भी जीवन यापन का साधन था और अब भी बस फर्क इतना है की तब का समाज उनके साथ था उनकी गायकी श्रोता के जीवन का अभिन्न अंग थी | बासदेवों के लिए भी यही सूत्र लागू होता था गायकी उनका जीवन और व्यवसाय दोनों ही थी और अब दोनों वर्ग के लिए यह मजबूरी है | मजबूरी के संबंध में क्या कहे दरसल मजबूरी आज हमारे जीवन का अभिन्न अंग बन चुकी है चाहे वो जिस किस्म की हो |

लोक की परिवर्तनशीलता का इससे अच्छा उदाहरण और कुछ हो ही नहीं सकता | हमारी नेक पहल विलुप्त होती परम्परा को बचा सकती है | इसके लिए सरकार को आगे आना होगा और उनके पक्ष में उचित फैसला लेना होगा | परिवर्तन अपनी जगह बिलकुल जायज़ है पर परम्पराओं के संरक्षण की दिशा में जब इतना काम हो रहा है, पैसे खर्च किये जा रहे हैं तो फिर हम जाने क्यों इसे नज़र अंदाज़ कर रहे हैं |

नीरज कुंदेर